अटेंशन प्लीज

Special directions from Avyakt BapDada on Purusharth and changing past Sanskaras.

All material on Murli

Author: SpARC wing, Mt Abu

Published by: Shiv Baba Services Initiative

Main Website: www.shivbabas.org | **BK Google**: www.bkgoogle.org

Get free PDF books: shivbabas.org/books

अटेंशन प्लीज़

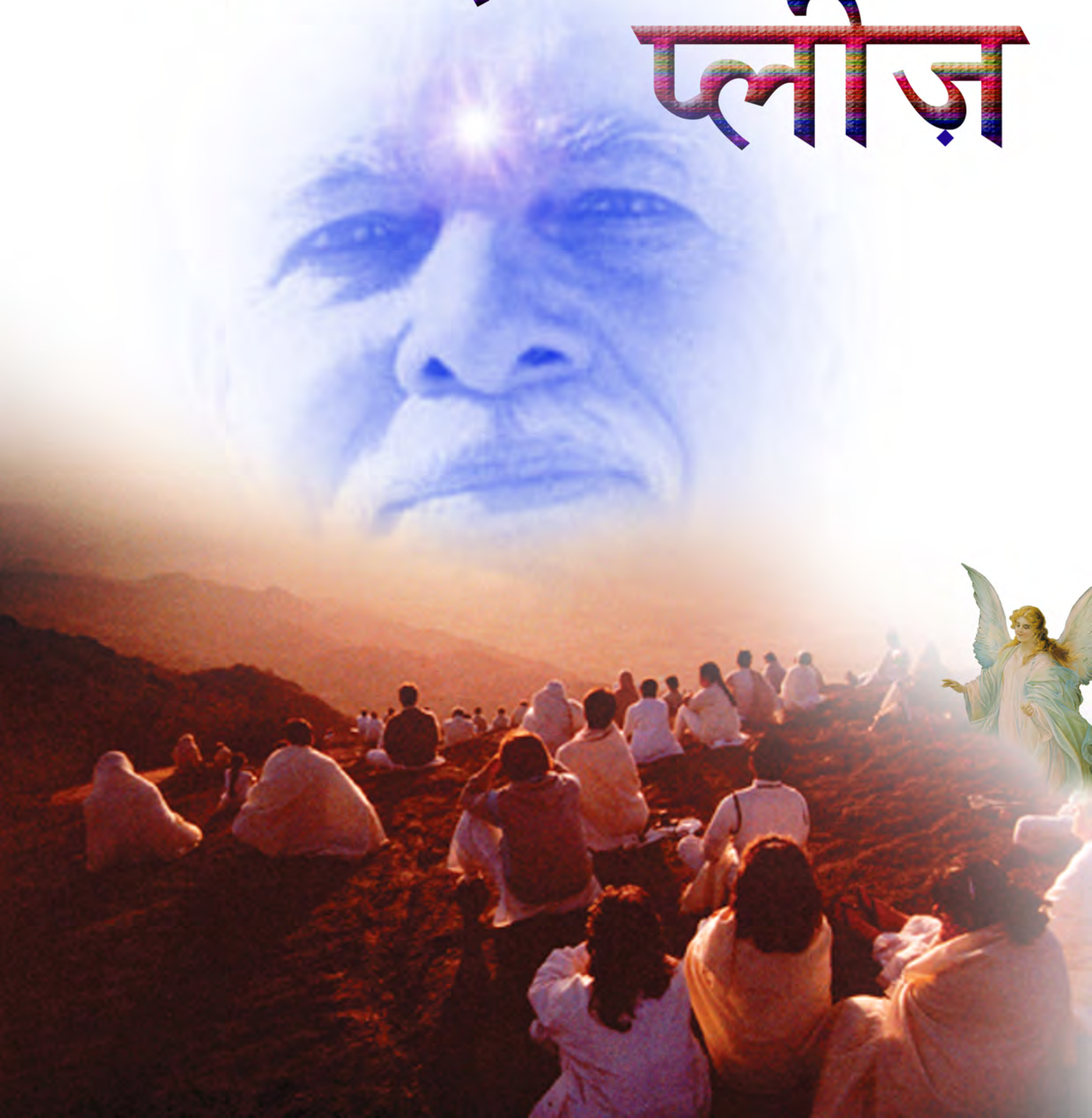

अटेंशन प्लीज़

(संकलन)

आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

स्पार्क (SpARC)

(Spiritual Applications Research Centre)

पोस्ट बॉक्स नं.- 66, ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत–307501,
राजस्थान.

मोबाइल – 09414003497,

ई–मेल – bksparc@gmail.com

स्पार्क (SpARC - Spiritual Applications Research Centre)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

अमृतसूची

प्राणप्यारे बापदादा की अनमोल शिक्षाएँ

बाप-टीचर-सतगुरु की शिक्षा 1
निमित्त - नम्रता 1
मधुबन 1
सर्विस 2
रीपीट 2
अंतिम घडी 2
आलस्य 3
संगमयुग 4
स्थूल धन, स्थूल सेवा, यज्ञ की वस्तु 4
स्वयं के कर्मों में निश्चय 5
असफलता में सफलता समाई हुई है 5
मुरली का महत्व 6
अमृतवेला 6
ब्राह्मण-सर्व श्रेष्ठ 7
निश्चय बुद्धि विजयन्ति 7
श्रेष्ठ स्वमान 8
अटेन्शन 8
लास्ट पेपर 9
सेवा करते अटेन्शन 9
अमृतवेला 11
माला 12
धर्मराजपुरी 12
एक बल, एक भरोसा 12
पाप और पुण्य की गहन गति 13
नम्बरवार बनने का कारण 14
रीपीट 15

पेपर आना अर्थात क्लास आगे बढना 15
बीमारी को बीमारी नहीं खेल समझो 15
एकव्रता 16
विश्वकल्याणी बनने का सहज साधन 16
संस्कार भिन्न-भिन्न होते हुए भी टकराव न हो 17
निरंतर योगी, सहज योगी उसमें रेगुलर और पंक्चुअल बनो 18
जरा भी हलचल में आना अर्थात फेल (ड्रामा) 19
अन्तिम दृश्य और दृष्टा की स्थिति 19
चान्स है जो भी चाहे सीट ले सकते हैं 20
विधि 21
जो होता है वह कल्याणकारी 21
बाप समान 21
भाग्य 22
संकल्प शक्ति 22
निमित्त 23
खुद को भी बचाओ, दूसरो को भी बचाओ 23
बाबा ही संसार है 24
अभ्यास 25
भक्ति का फल है ज्ञान 25
ईश्वरीय सेवा के साथ नोकरी 25
पुरुषार्थ में रुकावट 26
सेवा और स्व का बैलेन्स 26
शरीर से अलग मैं आत्मा हूँ 27
सेवाधारी अर्थात निर्माण 27
ब्राह्मण माना ही भाग्यवान 28
अमानत 28
लौकिक-अलौकिक दोनों संबंधो में महात्यागी अर्थात नष्टोमोहा 28
सर्व संबंध एक बाप से 29
ब्रह्माकुमार/कुमारी अर्थात स्वर्ग के वर्से के अधिकारी 30
जो पाना है वह अभी पा लो 31

वडो ने कहा और किया 31
अंतिम पेपर के समय एक सेकण्ड की मार्जिन मिलनी है। 32
यज्ञ सेवा 32
परीक्षा में पास होने की विधि 33
संस्कारो के टक्कर से बचने की विधि 33
कुमारी जीवन अर्थात प्युअर जीवन 34
सेवा करना अर्थात भाग्य का सितारा चमकाना 35
दास सदा उदास ही रहता है 36
श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना रखना - यह सबसे बडा पुण्य है 37
खुशी 38
भाग्य के आगे त्याग कौडी का है 38
डबल लाइट 38
जैसा संकल्प वैसी सृष्टि 39
मैं ही था, मैं ही हूँ और कल्प-कल्प मैं ही बनुँगा 40
सफल होने का स्लोगन है - 'रिगार्ड देना, रिगार्ड लेना' 41
भगवान को भोलापन प्यारा है 42
सेवा का भाग्य मिलना यह बहुत बडे भाग्य की निशानी है 42
मुरली का एक-एक महावाक्य समर्थ संकल्प है 42
स्वयं को मोल्ड करना अर्थात रीयल गोल्ड बनना 43
सच्ची सेवा 44
स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो 45
याद और सेवा का बैलेन्स है तो सेवा उन्नति का अनुभव करायेगी 46
गुप्त सेवा का महत्व 46
बापदादा का आटोमेटिक एकाउण्ट 47
सभी बंधनों को छोडना यही कर्मातीत स्थित की निशानी है 47
वेहद के बाप की दृष्टि 48
संगठन में रहते बुद्धि का सहारा एक बाप हो 48
सरेण्डर माना श्रीमत के अण्डर 49
प्रसन्नचित्त अर्थात सदा नि:स्वार्थ, निर्दोष दृष्टि-वृत्ति वाले 49
सेवा का भाग्य 50

24 घण्टा सेवाधारी बनना है 50
नम्बरवार बनने का विधान 51
बाप भी शक्तिशाली है और ड्रामा भी शक्तिशाली है 52
कहाँ अष्टरत्न और कहाँ 16000 52
रीपीट 54
आज्ञाकारी बनो 55
आलराउण्ड सेवा 57
खुदा की नजर 58
बी.के.जीवन अर्थात ब्रह्माबाप समान मौज की जीवन 58
ड्रामा 59
बालक बनकर मालिक के डायरेक्शन पर चलो 59
बाप के साथ बाप की 'याद की गोदी' में सो जाओ 60
लास्ट सो फर्स्ट बन सकता है 60
लास्ट पेपर 61
असत्य और सत्य में विशेष अन्तर 62
मार्ग मेहनत का नहीं है 62
भगवान की पसन्दगी 63
बुराई को अच्छाई में परिवर्तन करो 63
दुआएँ दो और दुआएँ लो 63
मीठी दृष्टि और शुभ वृत्ति 64
साथ वही रहेंगे जो समान होंगे 64
एवररेडी बनना ही सेफ्टी का साधन है 65
गुप्त है तो सदा आगे है 65
ड्रामा की नूँध 65
ऊँच ते ऊँच भगवान ने भाग्य बनाया 66
हम भाग्य विधाता के बच्चे हैं 66
राज्यपद और पूज्यपद 67
उमंग-उत्साह 67
अच्छा हुआ ही पडा है 67
बाप का बनना अर्थात परिवर्तन होना 68

वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य 68
बापदादा को साधारण आत्मायें ही पसन्द है........................ 69
गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ 69
ब्राह्मण परिवार में हर परिस्थिति में निश्चय बुद्धि 69
जितना बेहद सहन, उतना बेहद की दुआएँ........................ 70
एडजस्ट करने की पावर सदा विजयी बना देती है 70
कोई भी सेवा करो लेकिन सेवाधारी बन सेवा करो........................ 72
परमात्मा बाप के बच्चे हो 73
सेवा का भाग्य 73
हद के नाम के पीछे नहीं जाओ 73
जो गुप्त है वो सदा नयनों में है 76
समय समाप्त अचानक होना है.. 76
विशेषता का दाता कौन? 77
जब बाप के दिल पर नाम है तो और क्या चाहिए........................ 78
फाइनल नम्बर का आधार 79
रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड 79
सच्चे दिल पर साहेब राजी 80
बाप को जानना यह कितनी बडी विशेषता है........................ 80
बाप साथ है तो बाप को यूज करो 81
सेवा और स्व पुरुषार्थ का बैलेन्स 81
सेवा भी एक खेल है 82
कोटो में कोई 82
बेहद की वैराग्य वृत्ति 82
गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो 83
ब्राह्मण जन्म ही याद और सेवा के लिए है 85
ब्राह्मणों का विशेष कार्य 86
समय का इशारा 87
ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाए, पॉजिटिव रूप देखो........................ 87
एक सेकण्ड में माइण्ड कन्ट्रोल.. 88
'शुभ' शब्द 88

त्याग उसको कहा जाता है - जो सबकुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे 88
नेचरल स्मृति और स्वरूप बनाओ कि 'मैं फरिश्ता हूँ' 89
निर्मानता और मिलनसार 89
सच्ची दिल से महसूसता 90
छोटे पेपर 91
हुक्मी हुक्म चला रहा है 91
मन्सा शक्ति 91
शक्तियाँ आ गयी 92
रॉयल अभिमान 92
त्याग का भाग्य 93
संगम पर हर विशेषता ड्रामा अनुसार परमात्मा देन है 93
ब्राह्मण परिवार का अर्थ ही है संगठन 94
परिवर्तन 95

प्राणप्यारे बापदादा की अनमोल शिक्षाएँ

बाप-टीचर-सतगुरु की शिक्षा

बाप के रूप में एक शिक्षा की सौगात याद रखना। क्या शिक्षा देते हैं कि - सदैव बापदादा और जो निमित्त बनी हुई बहनें हैं और जो भी दैवी परिवार है - उन सबसे आज्ञाकारी, वफादार बनकर के चलना है। यह है बाप के रूप में शिक्षा की सौगात, और फिर टीचर के रूप में कौन-सी शिक्षा की सौगात देते हैं? शिक्षा को ग्रहण किया जाता है ना। जहाँ भी जाओ - तो टीचर के रूप में एक तो ज्ञान ग्रहण, दूसरा गुण-ग्राहक - यह शिक्षा हमेशा याद रखना। और गुरु के रूप से यह शिक्षा है - सदैव एक मत होना है, एकरस और एक की ही याद में रहना है।

16/06/1969

निमित्त - नम्रता

सर्विस की सफलता का मुख्य गुण कौन-सा है? नम्रता। जितनी नम्रता उतनी सफलता। नम्रता आती है निमित्त समझने से। निमित्त समझकर सर्विस करना। नम्रता के गुण से सब आपके आगे नमन करेंगे। जो खुद झुकता है उसके आगे सभी झुकते हैं। निमित्त समझकर कार्य करना है। जैसे बाप शरीर का आधार निमित्त-मात्र लेते हैं, वैसे आप समझो कि निमित्त-मात्र शरीर का आधार लिया है। एक तो शरीर को निमित्त-मात्र समझना है और दूसरा सर्विस में अपने को निमित्त समझना, तब नम्रता आयेगी। फिर देखो, सफलता आपके आगे चलेगी। जैसे बापदादा टेम्परेरी देह में आते हैं, ऐसे देह को निमित्त आधार समझो। बापदादा की देह में अटैचमेन्ट होती है क्या? आधार समझने से अधीन नहीं होंगे। अभी देह के अधीन होते हो, फिर देह को अधीन करेंगे।

18/06/1969

मधुबन

इस मधुबन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा पाँव नहीं रख सकता। मधुबन है सौभाग्य की लकीर, उसके अन्दर और कोई पाँव नहीं रख सकता। आप सभी को बापदादा समझाते हैं कि यह स्नेह की लकीर है, जिस स्नेह के घेराव के अन्दर बापदादा निवास करते हैं। इसके अन्दर कोई आ नहीं सकता - चाहे भल अपना शीश भी उतार कर रखें। साकार रूप

में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है। उसके लिए तो आगे चलकर जब रोना देखेंगे तब आप लोगों को उसकी वैल्यू का मालूम होगा। रो-रोकर आप के चरणों में गिरेंगे। स्नेह की एक बूँद की प्यासी हो चरणों में गिरेंगे। आप लोगों ने स्नेह के सागर को अपने में समाया है। वह एक बूँद के भी प्यासे रहेंगे। ऐसा सौभाग्य किसका हो सकता है? सर्व सम्बन्धों का सुख, रसना जो आप आत्माओं में भरी हुई है वह और कोई में नहीं हो सकती। तो ड्रामा में अपने इतने ऊँच भाग्य को सदैव सामने रखना। सामने रखने से रिटर्न देना आपे ही याद आयेगा। अच्छा।

06/12/1969

सर्विस

जितना सर्विस करेंगे उतना भविष्य ऊँचा। जितना अपने को सर्विस में बिजी रखेंगे उतना माया के वार से बच जायेंगे। बुद्धि को एंगेज कर दिया तो कोई डिस्टर्ब नहीं करेगा। यह भी संगमयुग का वरदान है - एकरस अवस्था, एक का ही ध्यान, एक की ही सर्विस में जितना जो कोई वरदान ले। जैसे कोई नशे में रहता है उसको और कुछ सूझता नहीं, ऐसे ईश्वरीय नशे में रहने से और दुनिया की आकर्षण से परे हो जायेंगे। (पार्टियों से)

21/01/1971

रीपीट

सदैव हर संकल्प निश्चयबुद्धि का होना चाहिए। कर्म करने से पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पडी है। अनेक कल्प विजयी बने हो। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो, तो अब वह रिपीट नहीं करेंगे? वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है। इसलिए कहा जाता है कि ‘बना-बनाया....’ । बना हुआ है लेकिन अब फिर से रिपीट कर ‘बना-बनाया’ जो कहावत है उसको पूरा करना है।

24/05/1971

अंतिम घडी

अगर सदा यह स्मृति रहे कि इस तन का किसी भी समय विनाश हो सकता है, तो यह विनाश काल स्मृति में रहने से प्रीत बुद्धि स्वतः हो ही जायेंगे। जब विनाश का काल आता है तो अज्ञानी भी बाप को याद करने का प्रयत्न जरूर करते हैं लेकिन परिचय के बिना प्रीत जुट नहीं पाती। अगर यह सदा स्मृति में रखो कि यह अंतिम घडी है। अंतिम जन्म नहीं, अंतिम घडी है - यह याद रहने से और कोई भी याद नहीं आयेगा।

02/02/1972

आलस्य

यह ग्रुप है साहसी ग्रुप। तो जो साहस को रखने वाले हैं उन्हों के साथ बापदादा सहयोगी है, इसलिए कभी भी साहस को छोडना नहीं। हिम्मत और उल्लास सदा रहे। हिम्मत से सदा हर्षित रहेंगे। उल्लास से क्या होगा? उल्लास किसको खत्म करता है? आलस्य को। आलस्य भी विशेष विकार है। जो पुरुषार्थी पुरुषार्थ के मार्ग पर चल पडे हैं उन्हों के सामने वर्तमान समय माया का वार इस आलस्य के रूप में भिन्न-भिन्न तरीके से आता है। तो इस आलस्य को खत्म करने के लिए सदा उल्लास में रहो। कमाई करने का जब किसको उल्लास होता है तो फिर आलस्य खत्म हो जाता है। अब भी कोई कार्य प्रति भी अपना उल्लास नहीं होता तो फिर आलस्य जरूर होगा। इसलिए कभी भी उल्लास को कम नहीं करना है जो आलस्य के वश होकर और श्रेष्ठ कर्म करने से वंचित हो जाओ। आलस्य भी कई प्रकार का होता है। अपने पुरुषार्थ में आगे बढ़ने में आलस्य बहुत विघ्न रूप बन जाता है। यह जो कहने में आता है - अच्छा, सोचेंगे, यह कार्य करेंगे - कर ही लेंगे यह आलस्य की निशानी है। करेंगे, कर ही लेंगे, हो ही जायेगा, लेकिन नहीं करने लग पडना है। जो नॉलेज वा धारणायें मिली हैं वह बुद्धि में धारण तो की हैं ना। लेकिन प्रैक्टिकल में आने में जो विघ्न रूप बनता है वह है स्वयं का आलस्य। अच्छा, कल से लेकर करेंगे, फलाना करे तो हम भी करेंगे, आज सोचते हैं कल से करेंगे , यह कार्य पूरा करके फिर करेंगे - ऐसे-ऐसे संकल्प ही आलस्य का रूप है। जो करना है वह अभी करना है। जितना करना है वह अभी करना है। बाकी करेंगे , सोचेंगे - इन अक्षरों में पिछाडी में 'ग-ग' आता है ना, तो यह शब्द है बचपन की निशानी। छोटा बच्चा 'ग-ग' करता रहता है ना, यह अलबेलेपन की निशानी है इसलिए कब भी आलस्य का रूप अपने पास आने न देना और सदा अपने को उल्लास में रखना। क्योंकि निमित्त बनते हो ना। निमित्त बने हुए सदैव पुरुषार्थ के उल्लास में रहते हैं तो उन्हें देख और भी उल्लास में रहते हैं। चलते-चलते पुरुषार्थ की थकावट आना वा चलते-चलते पुरुषार्थ साधारण रफ्तार में हो जावे यह किसकी निशानी है? विघ्न न हो लेकिन लगन भी श्रेष्ठ न हो तो उसको भी आलस्य कहेंगे। कई ऐसे अनुभव करते हैं - विघ्न भी नहीं है, ठीक भी चल रहे हैं लेकिन लगन भी नहीं है अर्थात् उल्लास वा विशेष कोई उमंग नहीं है। तो यह भी आलस्य की निशानी है। आलस्य भी अनेक प्रकार का है। इस आलस्य को कभी भी आने न देना। आलस्य धीरे-धीरे पहले साधारण पुरुषार्थी बनायेगा वा समीपता से दूर करेगा, फिर दूर करते-करते धोखा भी दे देगा, कमजोर बना देगा, निर्बल बना देगा। निर्बल वा कमजोर बनने से कमियों की प्रवेशता शुरु हो जाती है। इसलिए सदैव यह चेक करना - मेरी बुद्धि की लगन बाप वा बाप के कर्तव्य से थोडी भी दूर तो नहीं है, बिल्कुल

समीप वा साथ-साथ है? आजकल के जमाने में कोई किसका खून करता है वा कोई भ्रष्टाचार का कार्य करता है तो पहले उनको दूर भगाकर ले जायेगा। उनको अकेला, कमजोर बनाकर फिर उस पर वार करेगा। तो माया भी चतुर है। पहले सर्वशक्तिवान बाप से बुद्धि को दूर करती है, फिर जब कमजोर बन जाते हैं तब वार करती है। कोई भी साथ नहीं रहता है। क्या भी हो जाये - अपनी बुद्धि को कभी बाप के साथ से दूर न करना। जब किसका वार होता है तो उनसे कैसे अपने को बचाने लिए चिल्लाते हैं, घमासान करते हैं जिससे कोई दूर न ले जा सके। यहाँ फिर जब देखो कि माया हमारी बुद्धि की लगन को बाप से दूर करने की कोशिश करती है, तो अपने अंदर बाप के गुण गाने हैं, महिमा करनी है। महान! कर्तव्य करने लग जाओ, चिल्लाओ नहीं। भक्ति में भी गुणगान करते हैं ना। यह यादगार भी कब से बना? यह मन्सा का गुणगान करना वाचा में ला दिया है। यथार्थ रीति से गुणगान तो आप ही कर सकते हो ना। अब यथार्थ रूप में मन्सा संकल्प से, स्मृति-स्वरूप में गुणगान करते हो और भक्ति में स्थूलता में आते हैं तो मुख से गाने लग पडते हैं। सभी रीति-रस्म शुरु तो यहाँ से होती है ना। तो गुणगान करने लग जाओ। अपने को अधिकारी समझ सर्व शक्तियों को काम में लाओ। फिर कब भी माया आपकी बुद्धि की लगन को दूर नहीं कर सकेगी। न दूर होंगे, न कमजोर होंगे, न हार खायेंगे। फिर सदा विजयी होंगे। तो यह स्लोगन याद रखना कि 'हम अनेक बार के विजयी हैं, अब भी विजयी बनकर ही दिखायेंगे।'

04/03/1972

संगमयुग

यही संगमयुग है जो भाग्य प्राप्त करने का है। अभी जो भाग्य बनाया वह सारे कल्प में भोगना पडता है - चाहे श्रेष्ठ, चाहे नीच। लेकिन यह संगमयुग ही है जिसमें भाग्य बना सकते हो। जितना चाहो उतना बना सकते हो क्योंकि भाग्य बनाने वाला बाप साथ है। फिर यह बाप साथ नहीं रहेगा, न यह प्राप्ति रहेगी। प्राप्ति कराने वाला भी अब है और प्राप्ति भी अब होनी है। 'अब नहीं तो कब नहीं' - यह स्लोगन स्मृति में रखो।

15/03/1972

स्थूल धन, स्थूल सेवा, यज्ञ की वस्तु

ऐसे ही यह स्थूल धन भी अगर ईश्वरीय कार्य में, हर आत्मा के कल्याण के कार्य में वा अपनी उन्नति के कार्य में न लगाकर अन्य कोई स्थूल कार्य में लगाया तो व्यर्थ लगाया ना। क्योंकि अगर ईश्वरीय कार्य में लगाते हो तो यह स्थूल धन एक का लाख गुना बन कर प्राप्त होता है और अगर एक व्यर्थ गंवा दिया तो एक व्यर्थ नहीं गंवाया लेकिन लाख व्यर्थ गंवाया। इसी

प्रकार जो संगमयुग के सर्व खजाने हैं उस सर्व खजाने को चेक करो कि कोई भी खजाना व्यर्थ तो नहीं जाता है? तो ऐसे 'कम खर्च बाला नशीन' बने हो या अब तक अलबेले होने के कारण व्यर्थ गंवा देते हो? जो अलबेले होते हैं वह व्यर्थ गंवाते हैं और जो समझदार होते हैं, नॉलेजफुल होते हैं, सेन्सीबल होते हैं वह एक छोटी चीज भी व्यर्थ नहीं गंवाते। ऐसे के लिए ही कहा जाता है 'कम खर्च बाला नशीन'। ऐसे हो? जैसे साकार बाप ने 'कम खर्च बाला नशीन' बनकर के दिखाया ना। तो क्या फोलो फादर नहीं करना है? कोई भी स्थूल धन, अगर स्थूल धन नहीं है तो जो यज्ञ-निवासी हैं उनके लिए यह यज्ञ की हर वस्तु स्थूल धन के समान है। अगर यज्ञ की कोई भी वस्तु व्यर्थ गंवाते हैं तो भी 'कम खर्च बाला नशीन' नहीं कहेंगे। जो प्रवृति में रहने वाले हैं, स्थूल धन से अपना पद ऊँच बना सकते हैं, वैसे ही यज्ञ-निवासी भी अगर यज्ञ की स्थूल वस्तु 'कम खर्च बाला नशीन' बनकर यूज करते हैं, अपने प्रति वा दूसरों के प्रति, उनका भी इस हिसाब से भविष्य बहुत ऊँच बनता है। ऐसे नहीं कि स्थूल धन तो प्रवृति वालों के लिए साधन है लेकिन यज्ञ-निवासीयों के लिए यज्ञ की सेवा भी, यज्ञ की वस्तु की एकानामी रूपी धन स्थूल धन से भी ज्यादा कमाई का साधन है। इसलिए जब यज्ञ की एक भी चीज यथार्थ रूप से लगाते हो वा सम्भाल करते हो, व्यर्थ से बचाव करते हो तो समर्थी आती है भविष्य प्राप्ति के लिए। व्यर्थ से बचाव किया, अपना भविष्य बनाने की तो प्राप्ति हुई ना।

15/03/1972

स्वयं के कर्मों में निश्चय

पुरुषार्थी को कभी भी यह समझना नहीं चाहिए कि मेरे पुरुषार्थ करने के बाद कोई असफलता भी हो सकती है। सदैव ऐसे ही समझना चाहिए कि पुरुषार्थ जो किया वह कभी भी व्यर्थ नहीं जा सकता। अगर सही प्रकार से पुरुषार्थ किया तो उसकी सफलता अब नहीं तो कब मिलनी जरूर है।

27/04/1972

असफलता में सफलता समाई हुई है

तो जब भी अपने व्यक्तिगत पुरुषार्थ में वा संगठन के सम्पर्कमें वा ईश्वरीय सेवा में तीनों प्रकार के पुरुषार्थ में बाहर का रूप असफलता का दिखाई भी दे तो ऐसे ही समझना चाहिए कि यह असफलता नहीं लेकिन परिपक्वता का साधन है। जैसे सुनाया था कि तूफान को तूफान न समझकर एक तोफा समझना चाहिए। नैइया में झोंके आते हैं लेकिन वह आगे बढ़ाने का एक

साधन है। इसी प्रकार असफलता में सफलता समाई हुई है, यह समझ कर आगे बढ़ना चाहिए। असफलता शब्द ही बुद्धि में नहीं आना चाहिए अगर पुरुषार्थ सही है तो।

27/04/1972

मुरली का महत्व

रिवाइज कोर्स में भी वही सहज युक्ति बार-बार रिवाइज हो रही है। रिवाइज कोर्स अटेन्शन से सुनते हो, पढते हो? ऐसे तो नहीं समझते हो - जानी-जाननहार हो गये? जानी-जाननहार अपने को समझकर रिवाइज कोर्स को हल्का तो नहीं छोड देते हो? आज पेपर लेते हैं। ऐसा कौन है जो एक दिन भी रिवाइज कोर्स की मुरली मिस नहीं करते हैं वा धारणा में अटेन्शन नहीं देते है, वह हाथ उठावें? कहाँ आने-जाने में मुरली मिस करते हो वह पढ़ते हो वा मिस हो जाती है? ऐसे तो नहीं समझते हो अब नॉलेज को जान ही चुके हैं? भल जान चुके हो, लेकिन अभी बहुत कुछ जानने को रह गया है। जो अच्छी तरह से रिवाइज कोर्स को रिवाइज करते हैं वह स्वयं भी ऐसा अनुभव करते हैं। वह रिवाइज कोर्स करते भी पुराना लगता है वा नया लगता है? नयों के लिए तो नई बातें होंगी लेकिन जो पुराने हैं वह फिर से रिवाइज कोर्स से क्या अनुभव करते हैं? नया लगता है? क्योंकि ड्रामा अनुसार रिवाइज क्यों हुआ? यह भी ड्रामा की नूंध थी। रिवाइज क्यों कराया जाता है? अटेन्शन कम हो जाता है, स्मृति कम होती है तो बार-बार रिवाइज कराया जाता है। तो यह भी रिवाइज इसीलिए हो रहा है, क्योंकि अभी प्रैक्टिकल में पावर नहीं भरी है, इसलिए पावरफुल बनाने के लिए फिर से यह कोर्स चल रहा है।

24/06/1972

अमृतवेला

पहली जो बात पूछ रहे थे - सहज युक्ति कौन-सी है, जो रिवाइज कोर्स में भी बहुत रिवाइज हो रही है? वह है अमृतवेले अपने आप से और बाप से रूह-रूहान करना वा अमृतवेले को महत्व देना। जैसा नाम कहते हो वैसे ही उस वेला को वरदान भी तो मिला हुआ है। कोई भी श्रेष्ठ कर्म करते हें तो आज तक के यादगार में भी वेला को देखते हैं ना। यहाँ भी पुरुषार्थ के लिए सहज प्राप्ति के लिए सबसे अच्छी वेला कौन-सी है? अमृतवेला। अमृतवेले के समय अपनी आत्मा को अमृत से भरपूर कर देने से सारा दिन कर्म भी ऐसे होंगे। जैसे वेला श्रेष्ठ, अमृत श्रेष्ठ वैसे ही हर कर्म और संकल्प भी सारा दिन श्रेष्ठ होगा। अगर इस श्रेष्ठ वेला को साधारण रीति से चलाते तो सारा दिन संकल्प और कर्म भी साधारण ही चलते हैं। तो ऐसे समझना चाहिए यह अमृतवेला सारे दिन के समय का फाउण्डेशन वेला है। अगर फाउण्डेशन कमजोर वा साधारण डालेंगे तो ऊपर की बनावट भी ऑटोमेटिकली ऐसी होगी। इस कारण जैसे फाउण्डेशन

की तरफ सदैव अटेन्शन दिया जाता है। वैसे सारे दिन का फाउण्डेशन टाइम अमृतवेला है। उसका महत्व समझकर चलेंगे तो कर्म भी महत्व प्रमाण होंगे। इसको ब्रह्म-मुहूर्त भी क्यों कहते हैं? ब्रह्मा-मुहूर्त है वा ब्रह्म-मुहूर्त है? ब्रह्मा-मुहूर्त भी राइट है, क्योंकि सभी ब्रह्मा समान नये दिन का आरम्भ, स्थापना करते हो। वह भी राईट है, लेकिन ब्रह्म-मुहूर्त का अर्थ क्या है? उस समय का वायुमण्डल ऐसा होता है जो आत्मा सहज ही ब्रह्म-निवासी बनने का अनुभव कर सकती है। दूसरे समय में पुरुषार्थ करके आवाज से, वायुमण्डल से अपने को डिटैच करते हो या मेहनत से करते हो। लेकिन उस समय इस मेहनत की आवश्यकता नहीं होती। जैसे ब्रह्म घर शान्तिधाम है वैसे ही अमृतवेले के समय में भी आटोमेटिकली साइलेंस रहती है। साइलेंस के कारण शान्ति स्वरूप की स्टेज वा शान्तिधाम निवासी बनने की स्टेज को सहज ही धारण कर सकते हो। तो जो श्रीमत मिली हुई है, इसको ब्रह्म-मुहूर्त के समय स्मृतिमें लायेंगे तो ब्रह्म-मुहूर्त वा अमृतवेला के समय स्मृति भी सहज आयेगी। देखो, पढ़ाई पढ़ने वाले भी पढ़ाई को स्मृति में रखने के लिए इसी टाइम पढ़ने की कोशिश करते है, क्योंकि इसी समय सहज स्मृति रहती है। तो अपनी स्मृति को भी समर्थवान बनाना है वा स्वतः स्मृति स्वरूप बनाना है तो अमृतवेले की मदद से वा श्रीमत का पालन करने से सहज ही स्मृति को समर्थीवान बना सकते हो। जैसे समय की वैल्यु है इतनी इसी समय को वैल्यु देते हो वा कब नहीं देते हो? वैल्यू का तराजू कब नीचे, कब ऊपर जाता है? क्या होता है? यह बहुत सहज युक्ति है सिर्फ इस युक्ति को इतनी वैल्यू देनी है। जैसे श्रीमत है उसी प्रमाण समय को पहचान कर और समय प्रमाण कर्तव्य किया तो बहुत सहज सर्व प्राप्ति कर सकते हो। फिर मेहनत से छूट जायेंगे। छूटना चाहते हो तो उसके लिए जोसाधन है, उसको अपनाते जाओ।

24/06/1972

ब्राह्मण-सर्व श्रेष्ठ

कोई-कोई तो विशेष आत्माएं भी विशेष कर्तव्य करते रहते हैं ना। फिर भी निमित्त बने हुए हैं। जरूर कोई श्रेष्ठता वा विशेषता है, तब तो ड्रामा अनुसार समर्पण होने के बाद, सर्वस्व त्यागी बनने के बाद औरों की सेवा के लिए निमित्त बने हो ना। हरेक में कोई विशेषता जरूर है। एक दो की विशेषता का भी एक दो को परिचय होना चाहिए, कमियों का नहीं।

19/07/1972

निश्चय बुद्धि विजयन्ति

हिम्मत रखने से मदद स्वतः ही मिलती है। हिम्मत में कुछ जरा-सा भी कमी होती है तब मदद में भी कमी पडती है। कई समझते हैं मदद मिलेगी तो करके दिखावेंगे। लेकिन मदद

मिलेगी ही हिम्मत रखने वालों को। पहले हिम्मते बच्चे, फिर मददे बाप है। हिम्मत धारण करो तो आपकी एक गुण हिम्मत बाप की सौ गुणा मदद। अगर एक भी कदम ना उठावें तो बाप भी 100 कदम ना उठावेंगे। जो करेगा वो पावेगा। हिम्मत रखना अर्थात करना। सिर्फ बाप के ऊपर रखना कि बाबा मदद करेगा तो होगा - यह भी पुरुषार्थ हीन के लक्षण हैं। बापदादा को मालूम नहीं है कि हमको मदद करनी है? क्या आपके कहने से करेंगे? जो कहने से करता है उसको क्या कहा जाता है? जो स्वयं दाता बन कर रहे हैं उनको कहके कराना, यह इन्सल्ट नहीं है? देने वाले दाता के आगे 5 पैसे क्या देते हो? तो बापदादा को भी शिक्षा स्मृति में दिलाते हो कि आपको मदद करनी चाहिए? यह संकल्प कब ना रखो। यह तो स्वतःही प्राप्त होंगे। जब अपने को वारिस समझते हो तो वारिस वर्से के अधिकारी स्वतः ही होते हैं, मांगना नहीं पडता है। लौकिक में तो उन्हों को स्वार्थ रहता है तब मांगते हैं। यहाँ अपना स्वार्थ ही नहीं तो बाकी रख कर क्या करेंगे। इसलिये यह संकल्प रखना भी कमजोरी है। पूरा निश्चयबुद्धि बनना है - बाप हमारा साथी है, बाबा सदा मददगार है। निश्चयबुद्धि विजयन्ति। ऐसा सदा स्मृति में रखते हुए, हर कदम उठाओ तो देखो विजय आपके गले का हार बन जावेगी।

06/08/1972

श्रेष्ठ स्वमान

अभी तो दुनिया अज्ञान नींद में सोई है और आप अनेकों में से थोडी-सी आत्माएं बाप के वर्से के अधिकारी बन रहे हो। जब वह सभी जाग जावेंगे, कोशिश करेंगे कि हम भी कुछ कणा-दाना ले आवें, लेकिन क्या होगा? ले सकेंगे? जब लेट हो जावेंगे तो क्या ले पावेंगे? उस समय आप सभी आत्माओं को भी अपने श्रेष्ठ भाग्य का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार होगा। अभी तो गुप्त है ना। अभी गुप्त में न बाप को जानते हैं, न आप श्रेष्ठ आत्माओं को जानते हैं। साधारण समझते हैं। लेकिन वह समय दूर नहीं जबकि जागेंगे, तडपेंगे, रोयेंगे पश्चाताप करेंगे लेकिन फिर भी पा न सकेंगे। बताओ, उस समय आपको अपने ऊपर कितना नाज होगा कि हम तो पहले से ही पहचान कर अधिकारी बन गये हैं। ऐसे खुशी में रहना चाहिए। क्या मिला है, कौन मिला है और फिर क्या-क्या होने वाला है। यह सभी जानते हुए सदैव अतिन्द्रिय सुख में झूमते रहना है।

19/09/1972

अटेन्शन

किसी भी लौकिक अथवा अलौकिक कार्य की डेट फिक्स होने के बाद फिर ऑटोमेटिकली कर्म में भी बल आ जाता हैं। मालुम है फलानी डेट तक यह कार्य सम्पन्न करना है। डेट को

स्मृति में रखने से कर्म की स्पीड भी ऐसी चलती है। कल पूरा करना है तो स्पीड ऐसी रहेगी? इस ज्ञान का मुख्य स्लोगन ही है कि अभी नहीं तो कभी नहीं। इसकी डेट कल या परसों नहीं होती- इसकी डेट होती है 'अभी'। धण्टे के बाद भी नहीं। इसलिये जितना निश्चय रखेंगे कि ये करना ही है - करेंगे नहीं - करना ही है यह दृढ़ संकल्प। दृढ़ संकल्प के बिना दृढ़ता नहीं आती और पुरुषार्थ का समय बाकी कितना कम है? जास्ती समय दिखाई देता है क्या? समय का ख्याल तो रखना चाहिए ना। यह भी सोचो कि प्रालब्ध कितने समय की है? दो युग की प्रालब्ध है ना। इस पुरुषार्थ की प्रालब्ध का समय कितना कम रहा? यह स्मृति में होना चाहिए।

बहुत काल की प्रालब्ध पानी है, तो पुरुषार्थ भी बहुत काल का चाहिए ना। अगर लास्ट टाइम पुरुषार्थ करेंगे तो प्रालब्ध भी लास्टकी ही मिलेगी। पुरुषार्थ फर्स्ट नहीं और प्रालब्ध फर्स्ट वाली चाहिए? लास्ट में बचा-खुचा मिलने से क्या होगा? जैसे प्राप्ति का लक्ष्य फर्स्ट का है, वैसे पुरुषार्थ भी ऐसा करो। कोई भी बात सामने आये उसको एक साईट और सीन समझो जैसे रास्ते में अनेक प्रकार की साईट्स और सीन्स आती है, लेकिन जो मंजिल को पाने वाला होता है, वह उसको देखता नहीं हैं, उसकी बुद्धि में मंजिल की प्राप्ति ही रहती है। तो यहाँ भी बुद्धि में मंजिल ही रखनी है, न कि वह बातें। अगर छोटी-सी बात को देखने में ही समय गंवा देंगे तो मंजिल पर समय पर पहुँच नहीं सकेंगे, तो अब दृढ़ता लाने का समय है। नहीं तो कुछ समय के बाद इस समय को भी याद करना पडेगा कि समय पर जो करना था, वह नहीं किया।

09/02/1975

लास्ट पेपर

लास्ट ऑर्डर रूहानी मिलिट्री को कितने समय में मिलेगा? एक सेकेण्ड का ऑर्डर होगा। एक घण्टा पहले इतना नहीं होगी। तब तो आठ रत्न निकलते हैं। डेट निश्चित बता करके पेपर नहीं लेंगे। अर्थात् लास्ट डेट जो ड्रामा में निश्चित है, वह निश्चित डेट और समय नहीं बतलाया जायेगा। यह तो एवरेज बताया जाता है। लेकिन लास्ट पेपर एक ही क्वेश्चन का और एक ही सेकेण्ड का होगा इसलिए बच्चों को एवर-रेडी बनना है।

02/09/1975

सेवा करते अटेन्शन

मैजारिटी इस ब्राह्मण जीवन की आदि में अर्थात् पहले पहले जब बाप द्वारा बाप का परिचय, ज्ञान का खजाना प्राप्त होता है, अपने जन्म-सिद्ध अधिकार का मालूम पडता है, याद द्वारा अनुभव प्राप्त होता है, दुःख, 'सुख' में बदल जाता है, अशान्ति , 'शान्ति' में बदल जाती है और भटकना बन्द हो, ठिकाना मिल जाता - उस शुरु की स्थिति में बहुत अच्छे, तीव्र उमंग-

उल्लास वाले खुशी में झूमने वाले, सेवा में रात-दिन एक करने वाले, सम्बन्ध और शरीर की सुध-बुध भूले हुए, ऐसे फर्स्ट क्लास सर्विस-एबल, नॉलेजफुल और पॉवरफुल स्वयं को भी अनुभव करते हैं और अन्य ब्राह्मण भी उनको ऐसे ही अनुभव करते हैं। लेकिन आदि के बाद फिर जब मध्य में आते हैं तो पुरुषार्थ से, अपनी सेवा से, खुशी और उमंग से संतुष्ट नहीं रहते। अपने आप से क्वेश्चन करते रहते हैं कि - 'पहले ऐसा था अभी ऐसा क्यों, पहले जैसा उमंग कहाँ चला गया? पहले वाली खुशी गायब क्यों हो गई? चढती कला के बजाय रुकावट क्यों हो गई? जबकि ज्ञान गुह्य हो रहा है, समय समीप आ रहा है, सेवा के साधन भी बहुत प्राप्त हो रहे हैं और फिर भी पहले जैसा अनुभव क्यों नहीं होता?' मैजारिटी का यह अनुभव देखा। अब इसका कारण क्या? कारण यह है - जब सेवा में और ब्राह्मण परिवार के सम्पर्क में व सेवा द्वारा जो प्रत्यक्षफल प्राप्त होता है उसमें चलते-चलते कोई हद की पोजीशन में आ जाते हैं, कोई हमशरीक सर्विस-साथियों का ऑपोजीशन करने में लग जाते हैं, कोई स्थूल सेलवेशन लेने में लग जाते हैं अर्थात् सेलवेशन के आधार पर सेवा और पुरुषार्थ करते हैं, कोई क्वेश्चन करने लग जाते हैं और फिर कोई दूसरे की कोटेशन (उदाहरण) देने लग पडते हैं अर्थात् दूसरे के दृष्टान्त से अपना सिद्धांत बनाने लग जाते हैं। इन पाँच में से कोई-न-कोई उल्टा मार्ग अपना लेते हैं। बाप ने कहा कि सदा तपस्वी बनकर के अपने ईश्वरीय ब्राह्मणपन के, सर्वस्व त्यागी के पोजीशन में स्थित रहो। लेकिन हद की पोजीशन कि - 'मैं सबसे ज्यादा सर्विसएबल हू, प्लैनिंग बुद्धि हूँ, इनवेन्टर हूँ, धन का सहयोगी हूँ, दिन-रात लगाने वाला हूँ अर्थात् हार्ड-वर्कर हूँ या इन्चार्ज हूँ।' - इस प्रकार के हद के नाम, मान और शान के उन उल्टे पोजीशन को पकड लेते हैं। अर्थात् यथार्थ मंजिल से व्यर्थ मार्ग पर तीव्र गति से चल पडते हैं। बाप ने कहा - सैल्वेशन आर्मी हो अर्थात् अन्य आत्माओं को सैल्वेशन देने प्रति हो लेकिन हद की सैल्वेशन कि यह साधन होगा तो सर्विस करेंगे, पहले साधन दो फिर सर्विस करेंगे। साधन भी सेवा अर्थ नहीं, लेकिन अपने सुख के अर्थ मांगते हैं। अगर यह किया जाए तो बहुत सर्विस कर सकता हूँ, एक्स्ट्रा स्नेह, रिगार्ड दिया जाय, एक्स्ट्रा खतिरी की जाय और विशेष नाम लिया जाय - ऐसे अनेक प्रकार के सैल्वेशन के आधार पर अपना पुरुषार्थ करने लग पडते हैं, इसलिये आधार गलत होने के कारण उन्हें अपनी उन्नति का अनुभव नहीं होता।

इसी प्रकार बाप ने कहा - माया से ऑपोजीशन करना है। लेकिन माया के तो मित्र बन जाते हैं अर्थात् आसुरी संस्कारों रूपी आसुरी सम्प्रदाय के बजाय ईश्वरीय सम्प्रदाय अर्थात् एक-दो में ऑपोजीशन करते रहते हैं - 'यह ऐसा करता है तो मैं इससे भी ज्यादा करके दिखाऊँ, मैं गुप्त पुरुषार्थी हूँ, मुझे पहचानते नहीं और निमित्त टीचर से तो मैं ज्यादा अनुभवी हूँ, तुम अनपढ हो, मैं पढ़ी हुई हूँ।' ऐसे एक-दो में ऑपोजीशन करने में अपना सदा काल का श्रेष्ठ पोजीशन

गंवा देते हैं। आपस मे ऑपोजीशन के कारण माया से ऑपोजीशन करने में कमजोर बन जाते हैं अर्थात् विजयी नहीं बन सकते हैं।

इसी प्रकार क्वेश्चन, करेक्शन और कोटेशन देने में तो बडे होशियार, वकील और जज बन जाते हैं। बाप को करेक्शन दे रहते। आपने आपको छुडाने के लिये अर्थात् अपनी गलती को छिपाने के लिये कोटेशन देंगे - 'मेरे से बडा महारथी भी ऐसा करता है। इस समस्या पर फलाने को बापदादा ने ऐसा कहा था, इसलिये मैंने भी वहश्रीमत मानी। फलाने डेट की मुरली में यह बात बत कही गई है, उसी प्रमाण मैं यह कर रहा हूँ।' समय और सरकमस्टान्सेज को नहीं देखते लेकिन शब्द पकड लेते हैं। इन्हीं भूलों के कारण एक भूल से अनेक भूलें बढ़ती जाती है। अलबेलापन के संस्कार बढ़ते जाते हैं। पुरुषार्थ की गति तीव्र से मध्यम हो जाती है।

बाप ने कहा है कि मास्टर त्रिकालदर्शी अर्थात् तीनो कालों को जानने वाले हो। इस धारणा को अपनाने के कारण अपनी करेक्शन के बजाय दूसरों की करेक्शन करते रहेंगे। दूसरों की करेक्शन में बाप से कनेक्शन तोड देते हैं। इसलिये शक्ति हीन होने के कारण उलझते रहते हैं। सुख-शान्ति व अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति का ठिकाना नजर नहीं आता। परचिन्तन पतन की तरफ ले जाता है। समझा? इन बातों में आने के कारण जो आदि का नशा और खुशी का अनुभव होता है यह खत्म हो जाता है। इसलिये अपने आपको चेक करो कि इन पाँच में से कोई भी उल्टे व व्यर्थ मार्ग पर चलकर समय बर्बाद तो नहीं कर रहे हैं? चेक करो और फिर अपने को चेन्ज करो तो फिर चढ़ती कला की ओर चल पडेंगे। ऐसा मैजारिटी आत्माओं का अनुभव बापदादा ने देखा।

27/10/1975

अमृतवेला

रोज अमृतवेले बाप वरदान देते हैं, अगर रोज वरदान लेते रहो तो कभी भी कमजोर नहीं हो सकते। वरदान लेने से सिर्फ पात्र बनना। जो भी चाहिए अमृतवेले सब मिल सकता है। ब्राह्मणों के लिए स्पेशल समय फिक्स है जैसे कितना भी बडा आदमी हो, लेकिन फिर भी अपने फैमिली के लिए विशेष टाइम जरूर रखेंगे। तो अमृतवेला विशेष बच्चों के प्रति है, फिर विश्व की आत्माओं प्रति। पहला चान्स बच्चों का है। तो सब अच्छी तरह से चान्स लेते हो? इसमें अलबेले नहीं बनना। (पार्टीयों से)

26/04/1977

माला

बीमारी ज्यादा मार्क ली होंगी तो उसका यादगार फिर अब तक भी अपने में रिंग बनाकर पहनते हैं या गले में लॉकेट बनाकर डालते हैं। तो यह सब हिसाब वर्तमान समय के प्राप्ति के हैं। तो ऐसे कितने होंगे? गिनती करने में आते हैं? नाम बताने के नहीं दिखाने के हैं। अगर एनाउन्स भी करे और भविष्य में वह प्रसिद्ध भी होंगे लेकिन अभी सम्पूर्ण स्टेज पर न देख करके क्वेश्चन करेंगे यह क्यों, यह कैसे। इसलिए बाप भी बात नहीं सकता। दिखा सकते हैं - यह इस गिनती में हैं। यह हो सकता है। बताने की बात नहीं है। अब एक का भी नाम बतावें तो देखना कितने क्वेश्चन उठते। इसमें क्या है, हमारे में क्या नहीं है। इसमें तो यह है। कोई क्वेश्चन में समय व्यर्थ गंवाए, यह भी बाप नहीं चाहते। बाकी कल्प-कल्प के प्रसिद्ध हुए रत्न, कल्प पहले मुवाफिक प्रसिद्ध जरूर होंगे। आजकल नाम नहीं, काम चाहते हैं। अभी तो हरेक के अंदर यह लक्ष्य है कि मैं ही अपने को क्यों नहीं इतना आगे बढ़ा कर योग्य बनाऊं। अच्छा।

(दादीजी के साथ)

28/04/1977

धर्मराजपुरी

इतने अभ्यासी हुए हो कि कुछ भी हो - सहज ही शरीर से निकल जाएंगे। यह प्रेक्टिस है? कोई भी सम्बन्ध व संस्कार कसमकसा न करे। जाना तो सबको है लेकिन एक जाएंगे सहज, एक जाएंगे युद्ध करते-करते। तो जाने के लिए तैयार हो - यह तो ठीक, लेकिन सहज जाएंगे, यह तैयारी है? डायरेक्ट जायेंगे वा वाया जायेंगे? ‘धर्मराजपुरी क्स्टमपुरी है।’ अगर कुछ साथ में रह गया तो कस्टम में रुकना पडेगा। तो जाने के साथ यह भी तैयारी चाहिए। देखना कस्टम क्लियर है? पासपोर्ट आदि सब चेक करना, बैग-बैगेज सब चेक करना।(पार्टीयों के साथ)

11/05/1977

एक बल, एक भरोसा

ऐसे वन्डरफुल और रमणीक केस बापदादा के सामने बहुत आते हैं। प्वाइन्टस भी बडी अच्छी-अच्छी होती हैं। इनवेन्शन भी बहुत नई-नई करते हैं, क्योंकि बैकबोन माया होती है। जब बच्चें की ऐसी स्थिति देखते हैं तो रहम आता है, बाप सिखाते हैं और बच्चे छोटी-सी गलती के कारण क्या करते रहते हैं? छोटी-सी गलती है, श्रीमत में मनमत मिक्स करना। उसका आधार क्या है? ‘अलबेलापन और आलस्य।’ अनेक प्रकार के माया के आकर्षण के पीछे

आकर्षित होना। इसीलिए जो पहला उमंग और उत्साह अनुभव करते हैं, वह चलते-चलते मायाजीत बनने की सम्पूर्ण शक्ति न होने के कारण कोई पुरुषार्थ हीन हो जाते हैं। क्या करें, कब तक करें, यह तो पता ही नहीं था? ऐसे व्यर्थ संकल्पों के चक्कर में आ जाते हैं। लेकिन यह सब बातें साइडसीन अर्थात् रास्ते के नजारे हैं। मंजिल नहीं है। इनको पार करना है, न कि मंजिल समझकर यहाँ ही रुक जाना है। लेकिन कई बच्चे इसको ही अपनी ही मंजिल अर्थात् मेरा पार्ट ही यह है, वा तकदीर ही यह है, ऐसे रास्ते के नजारे को ही मंजिल समझ वास्तविक मंजिल से दूर हो जाते हैं। लेकिन ऊँची मंजिल पर पहुँचने से पहले आँधी तूफान लगते हैं, स्टीमर को उस पार जाने के लिए बीच में भँवर में क्रास करना ही पडता है। इसलिए जल्दी में घबराओ मत, थको मत, रुको मत। **भगवान को साथी बनाओ तो हर मुश्किल सहज हो जाएगी। हिम्मतवान बनो तो मदद मिल ही जायेगी। सी फादर करो। फॉलो फादर करो तो सदा सहज उमंग उल्लास जीवन में अनुभव करेंगे।** रास्ते चलते कोई व्यक्ति वा वैभव को आधार नहीं बनाओ। जो आधार ही स्वयं विनाशी है, वह अविनाशी प्राप्ति क्या करा सकता। 'एक बल एक भरोसा' इस पाठ को सदा पक्का रखो, तो बीच भँवर से सहज ही निकल जायेंगे। और मंजिल को सदा समीप अनुभव करेंगे।

16/05/1977

पाप और पुण्य की गहन गति

समय प्रमाण अब व्यर्थ की बातों को छोड समर्थी स्वरूप बनो। ऐसे विश्व सेवाधारी बनो। इतना बडा कार्य जिसके लिए निमित्त बने हुए हो उसको स्मृति में रखो। इतने श्रेष्ठ कार्य के लिए आगे स्वयं के पुरुषार्थ में हलचल वा स्वयं की कमजोरियाँ क्या अनुभव होती हैं? अपनी कमजोरियाँ, इतने विशाल कार्य के आगे क्या अनुभव करते हो, अच्छी लगती हैं वा स्वयं से ही शर्म आता है? चैलेन्ज और प्रैक्टिकल समान होना चाहिए। नहीं तो चैलेन्ज और प्रैक्टिकल में महान अन्तर होने से सेवाधारी के बजाए क्या टाइटल मिल जायेगा? ऐसे करने वाली आत्मायें अनेक आत्माओं को वंचित करने के निमित्त बन जाती, पुण्य आत्मा के बजाए बोझ वाली आत्माएं बन जाती हैं - इस पाप और पुण्य की गहन गति को जानो। पाप की गति श्रेष्ठ भाग्य से वंचित कर देती। संकल्प द्वारा भी पाप होता है। संकल्प के पाप का भी प्रत्यक्षफल होता है। संकल्प में स्वयं की कमजोरी, किसी भी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है, किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है। ऐसे ही कर्म अर्थात् सम्बन्ध और सम्पर्क द्वारा किसी के प्रति शुभ भावना के बजाए और कोई भी भावना है तो यह भी पाप का खाता जमा होता है - क्योंकि यह भी दुःख देना है। **शुभ भावना पुण्य का खाता वढ़ाती**

है। व्यर्थ भावना वा घृणा की भावना वा ईष्या की भावना पाप का खाता बढ़ाती है इसलिए बाप के बच्चे बने, वर्से के अधिकारी बने अर्थात् पुण्य आत्मा बने, यह निश्चय, यह नशा तो बहुत अच्छा। लेकिन नशा और ईर्ष्या मिक्स नहीं करना। बाप के बनने के बाद प्राप्ति अनगिनत है लेकिन पुण्य आत्मा के साथ पाप का बोझ भी सौ गुना के हिसाब से है। इसलिए इतने अलबेले भी मत बनना। बाप को जाना और वर्से को जाना, ब्रह्माकुमार कहलाया- इसलिए अब तो पुण्य ही पुण्य है, पाप तो खत्म हो गया वा सम्पूर्ण बन गये ऐसी बात न सोचना - **ब्रह्माकुमार जीवन के नियमों को भी ध्यान में रखो। मर्यादायें सदा सामने रखो। पुण्य और पाप दोनों का ज्ञान बुद्धि में रखो।** चेक करो पुण्य आत्मा कहलाते हुए मन्सा-वाचा-कर्मणा कोई पाप तो नहीं किया, कौन-सा खाता जमा हुआ - किसी भी प्रकार की चलन द्वारा बाप वा नालेज का नाम बदनाम तो नहीं किया। **बाप के पास तो हरेक का खाता स्पष्ट है। लेकिन स्वयं के आगे भी स्पष्ट करो। अपने आपको चलाओ मत अर्थात् धोखा मत दो - यह तो होता ही है, वह तो सब में हैं! भले सब में हो लेकिन मैं सेफ हूँ - ऐसी शुभ कामना रखो - तब विश्व सेवाधारी बन सकेंगे।** संगठित रूप में एकमत, एकरस स्थिति का अनुभव करा सकेंगे। अब तक भी पाप का खाता जमा होगा तो चुक्तू कब करेंगे, अन्य आत्माओं को पुण्य आत्मा बनाने के निमित्त कैसे बनेंगे। इसलिए अलबेलेपन में भी पाप का खाता बनाना बन्द करो। सदा पुण्य आत्मा भव का वरदान लो। अज्ञानी लोग यह स्लोगन कहते - बुरा न सुनो, न देखो, न सोचो - अब बाप कहते व्यर्थ भी न सुनो, न सुनाओ और न सोचो। सदा शुभभावना से सोचो, शुभ बोल बोलो, व्यर्थ को भी शुभ-भाव से सुनो - जैसे साइन्स के साधन बुरी चीज को परिवर्तन कर अच्छा बना देते, रूप परिवर्तन कर देते तो आप सदा शुभचिंतक, सर्व आत्माओं के बोल के भाव को परिवर्तन नहीं कर सकते? सदा भाव और भावना श्रेष्ठ रखो तो सदा पुण्य आत्मा बन जायेंगे।

03/12/1978

नम्बरवार बनने का कारण

मिले हुए वरदान को न स्वयं प्राप्त किया, न कराया तो इसको भी वेस्ट अर्थात् व्यर्थ कहेंगे। इसी प्रकार संकल्प भी एक खजाना है, ज्ञान भी एक खजाना है, स्थूल धन भी ईश्वर अर्थ समर्पण करने से एक नया पैसा एक रतन समान वैल्यू का हो जाता है, इन सब खजानों को स्वयं के प्रति वा सेवा के प्रति कार्य में नहीं लगाते तो भी व्यर्थ कहेंगे। हर सेकेण्ड स्व कल्याण वा विश्व कल्याण के प्रति हो। ऐसे सर्व खजाने इसी प्रति ही बाप ने दिये हैं - इसी कार्य में लगाते हो! कई बच्चे कहते हैं न अच्छा किया, न बुरा किया - तो किस खाते में गया! वैल्यू न रखना इसको भी

व्यर्थ कहेंगे। इस कारण पुरुषार्थ की रफ्तार तीव्र नहीं हो पाती और इसी के कारण नम्बरवार बन जाते हैं। तो अब समझा नम्बरवार बनने का कारण क्या हुआ। वेट और वैस्ट इन दोनों बातों को अब समाप्त करो तो फर्स्ट डिवीजन में आ जावेंगे। नहीं तो जास्ती वेट वालों को फिर वेइट (इन्तजार) भी करना पडेगा। फर्स्ट राज्य के बाजाए सेकण्ड राज्य में आना पडेगा। वेइट करना पसन्द है वा सीट लेना पसन्द है। अब क्या करेंगे - डबल लाइट बन जाओ! अच्छा -

10/01/1979

रीपीट

सदा बाप और सेवा इसी लगन में मगन होंगे। तो हरेक विघ्न विनाशक हो या लगन और विघ्न दोनों साथ-साथ चलते हैं? विघ्नों के आने से रूकने वाले तो नहीं हो, हर कल्प विघ्न आये हैं और हर कल्प विघ्न विनाशक बने हो। जो हर कल्प के अनुभवी हैं उनको रिपीट करने में क्या मुश्किल! सदा यह स्मृति रहे कि हम कल्प-कल्प के अनुभवी हैं। सदा यह स्मृति रहे कि हम कल्प-कल्प के विजयी हैं। अनेक बार कर चुके हैं अब सिर्फ रिपीट कर रहे हैं, तो सहज योगी होना चाहिए ना - क्या करें, कैसे करें, इन सब कम्पलेन से कम्पलीट आत्माओं की सब कम्पलेन खत्म हो जाती है। (पार्टीयों से)

12/01/1979

पेपर आना अर्थात क्लास आगे बढना

सदा कल्प पहले माफिक अपने को अंगद के समान अचल समझते हो? अंगद के समान अचल अर्थात् सदा निश्चय बुद्धि विजयन्ती। जरा भी हलचल में आये तो विजयी बन नहीं सकेंगे। माया के विघ्न यह तो ड्रामा में महावीर बनाने के लिए पेपर के रूप में आते हैं। बिना पेपर के कभी क्लास चेन्ज नहीं होता। **पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढना। तो पेपर आने से खुश होना चाहिए न कि हलचल में आना है।** माया से भी लेसन सीखो, वह कभी भी हलचल में नहीं आती - अटल रहती, यही लेसन माया से सीख मायाजीत बन जाओ।(पार्टीयों से)

18/01/1979

बीमारी को बीमारी नहीं खेल समझो

संगमयुग के अलौकिक जीवन की विशेषताओं को जानते हो ना। सदा स्वस्थ अर्थात् सदा स्व में स्थित रहने से तन का कर्मभोग भी कर्मयोग से सूली से काँटा हो जाता है। कर्म भोग को भी बेहद के ड्रामा के अन्दर खेल समझ कर खेलते हैं। तो तन का रोग योग में परिवर्तन हो गया। इसलिए सदा स्वस्थ हो। बीमारी को बीमारी नहीं समझते लेकिन अनेक जन्मों का बोझ

हल्का हो रहा है, हिसाब चुक्तू हो रहा है - ऐसे समझने से सदा स्वस्थ समझते हो - साथ-साथ मन की खुशी तो सदा प्राप्त है ही। मनमनाभव होना अर्थात् खुशियों के खजाने से सम्पन्न होना।

23/01/1979

एकव्रता

पहली बात - बाप का रिगार्ड - अर्थात् सदा जो हे वैसे स्वरूप से, यथार्थ पहचान से बाप के साथ सर्व सम्बन्धों की मर्यादाओं को निभाना। बाप के सम्बन्ध का रिगार्ड है फालो फादर करना। शिक्षक के सम्बन्ध का रिगार्ड है सदा पढाई में रेग्युलर और पंक्चुअल रहना। पढाई की सर्व सबजेक्ट में फुल अटेन्शन देना - सतगुरू के सम्बन्ध में रिगार्ड रखना - अर्थात् सतगुरू की आज्ञा देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध भूलकर देही स्वरूप अर्थात् सतगुरू के समान निराकारी स्थिति में स्थित रहना। सदा वापस घर जाने के लिए एवररेडी रहना। ऐसे ही साजन के सम्बन्ध का रिगार्ड - हर संकल्प और सेकेण्ड में उसी एक की लगन में अशिक रहना। तुम्ही से खाऊं, तुम्ही से हर कार्य में सदा संग रहूँ... इस वफादारी को निभाना। सखा वा बन्धु के सम्बन्ध का रिगार्ड अर्थात् सदा अपना सर्व बातों में साथीपन का अनुभव करना। ऐसे सर्व सम्बन्धों का नाता निभाना ही रिगार्ड रखना है। रिगार्ड रखना अर्थात् जैसे कहावत है एक बाप दूसरा न कोई - बाप ने कहा और बच्चे ने किया। कदम के ऊपर कदम रख चलना। मनमत वा परमत बुद्धि द्वारा ऐसे समाप्त हो जाए जैसे कोई चीज होती ही नहीं। मनमत वा परमत को संकल्प से टच करना स्वप्न मात्र भी न हो - अर्थात् अविद्या हो। **सिर्फ एक ही श्रीमत बुद्धि में हो - सुनो तो भी बाप से - बोलो तो भी बाप का - देखो तो भी बाप को - चलो तो भी बाप के साथ - सोचो तो भी बाप की बातें सोचो - करो तो भी बाप के सुनाये हुए श्रेष्ठ कर्म करो। इसको कहा जाता है बाप के रिगार्ड का रिकार्ड।**

25/01/1979

विश्वकल्याणी बनने का सहज साधन

चलते-चलते रहम के बदले दो बातों में बदल जाते हैं। कोई रहम करने के बदले आत्माओं में वहम भाव पैदा कर देते हैं - यह कभी बदल नहीं सकते, यह हैं ही ऐसे, सब तो राजा बनने वाले नहीं है, इस प्रकार के अनेक वहम भाव रहम को खत्म कर देते हैं। दूसरी बात - रहम भाव के बदले अहम् भाव 'मैं ही सब कुछ हूँ - यह कुछ नहीं है। यह कुछ नहीं कर सकते मैं सब कुछ कर सकता हूँ।' इस प्रकार के अहम भाव अर्थात् मैं-पन का अभिमान रहमदिल बनने नहीं देता। यह दोनों बातें बेहद के विश्व कल्याणकारी बना नहीं सकती। इसलिए स्व-कल्याण वा स्व-देश कल्याण तक रह जाते हैं। **विश्व कल्याणकारी बनने का सहज**

साधन जानते भी हो लेकिन समय पर भूल जाते हो। कैसी भी अवगुणधारी आत्मा हो - कैसी भी पतित आत्मा वा पुरुषार्थहीन आत्मा हो दोनों में से कोई भी हो अज्ञानी पतित आत्मा होगी और ब्राह्मण परिवार की पुरुषार्थहीन आत्मा होगी -दोनों आत्माओं के प्रति विश्व कल्याणकारी अर्थात् बेहद की दाता आत्मा, विश्व परिवर्तन अधिकारी आत्मा सदा उन आत्माओं की बुराई वा कमजोरियों को कल्याणकारी होने के नाते पहले क्षमा करेंगी। जैसे बेहद का बाप बच्चों को क्षमा करते हैं किस बात पर? बच्चों की बुराई वा कमजोरियों को दिल में न समाए क्षमा करते हैं, पूज्य देवता भक्तों पर क्षमा करते हैं। तो विश्वकल्याणकारी मास्टर रचता भी हैं, विश्व अधिकारी भी हैं अर्थात् छोटों के आगे बडा राजा के समान हैं, बाप के समान हैं, पूज्य आत्मा हैं, इन तीनों सम्बन्ध के आधार से बुराई वा कमजोरी दिल पर न रख क्षमा करेंगे। उसके बाद ऐसी आत्मा के कल्याण प्रति सदा हर आत्मा के वास्तविक स्वरूप और गुण को सामने रखते हुए महिमा करेंगे अर्थात् उस आत्मा को अपनी महानता की स्मृति दिलायेंगे। किसके बच्चे हो - किस कुल के हो! संगमयुग की विशेषता वा वरदान क्या हैं! बाप का कर्तव्य असम्भव को भी सम्भव करने का है, तुम आत्मा आदिकाल की राजवंशी हो, अब ब्रह्मावंशी हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो, इस प्रकार की महिमा करेंगे - जिससे वह आत्मा गुणों को सुनते हुए स्मृति और समर्थी में आये और कमजोरी को वा बुराई को मिटाने की हिम्मत में आये।

03/02/1979

संस्कार भिन्न-भिन्न होते हुए भी टकराव न हो

संस्कार तो भिन्न-भिन्न रहेंगे ही लेकिन उन संस्कारों का अपने ऊपर प्रभाव न हो। संस्कार तो अन्त तक किस के दास के रहेंगे, किसी के राजा के। 'संस्कार बदल जाएँ' यह इन्तजार न करो लेकिन मेरे ऊपर किसी का प्रभाव न हो। क्योंकि एक तो हरेक के संस्कार भिन्न-भिन्न हैं, दूसरा कोई न कोई माया का रूप बनकर भी आते हैं। यह तो खत्म होगा ही नहीं लेकिन उसमें स्वयं साक्षी और कमल पुष्प के समान सेफ रहें, यह तो कर सकते हो? बोलने वाला बोले लेकिन सुनने वाला न सुने, यह तो हो सकता है ना! मर्यादा की लकीर के अन्दर रहकर कोई भी बात का फैसला करो। संस्कार भिन्न-भिन्न होते हुए भी टक्कर न रहे, इसके लिए नालेजफुल हो जाओ। जब कहते हो हम विश्व कल्याणकारी हैं तो जरूर कोई अकल्याण वाले भी हैं तब तो आप कल्याणकारी बनेंगे। अगर अकल्याण वाले ही न हो तो किसके कल्याणकारी बनेंगे। अगर कोई कुछ राँग कर रहा है तो उसको परवश समझ कर रहम की दृष्टि से परिवर्तन करो। डिसकस नहीं करो। अगर कोई पत्थर से रूक जाता है, तो आपका

काम है पास करके चले जाना या उसको भी साथी बना कर पार ले जाओ। अगर इतनी हिम्मत नहीं है तो खुद तो नहीं रूको। क्रास करते हुए चलते जाओ। यह अटेन्शन चाहिए। **अगर देखना पडता है तो विशेषता देखो। छोडना है तो कमियों को छोडो। सम्पर्क में आना पडता है, देखना पडता है तो विशेषता ही दिखाई दे, नहीं तो बाप को देखो।**

हरेक यही संकल्प ले कि हमें शान्ति की, शक्ति की किरणें फैलानी हैं, तपस्वी मूर्त बनकर रहना है, एक दूसरे को मन्सा से वा वाणी से भी अब सावधान करने का समय नहीं, अब मन्सा शुभ भावना से एक दूसरे के सहयोगी बनकर आगे बढो और बढाओ।

कितना भी सेवा में बिजी हों, कार्य की चारो ओर की खींचतान हो, बुद्धि सेवा के कार्य में अति बिजी हो - ऐसे टाइम पर अशरीरी बनने का अभ्यास करके देखो। तो यथार्थ सेवा का कभी बन्धन होता ही नहीं। क्योंकि योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी सदा सेवा करते भी उपराम रहते हैं। ऐसे नहीं कि सेवा ज्यादा है इसलिए अशरीरी नहीं बन सकते। याद रखो मेरी सेवा नहीं बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे। 'ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त हूँ ' ऐसी प्रैक्टिस करो। अति के समय अन्त की स्टेज, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करो तब कहेंगे तेरे को मेरे में नहीं लाया है। अमानत में ख्यानत नहीं की है समझा, अभी का अभ्यास क्या करना है? जैसे बीच-बीच में संकल्पों की ट्रैफिक का कन्ट्रोल करते हो वैसे अति के समय अन्त की स्टेज का अनुभव करो तब अन्त के समय पास विद् ऑनर बन सकेंगे।

26/11/1979

निरंतर योगी, सहज योगी उसमें रेगुलर और पंक्चुअल बनो

इसमें खुश हो जाना कि रोज क्लास तो करते हैं, रेगुलर पन्क्चुअल हैं, सेवा भी करते हैं लेकिन जो बाप का डायरेक्शन है - निरंतर योगी, सहजयोगी - उसमें रेगुलर और पंक्चुअल बनो। बाप के पास वह प्रेजेन्ट मार्क पडेगी ना। उसकी भी मार्क्स मिलती हैं लेकिन नम्बर आगे तो इसी प्रेजेन्ट मार्क से बनेंगे। कौन-सी माला में आने वाले हो? अगर कभी-कभी इसी स्थिति में स्थित रहते हो तो कभी-कभी पूजने वाली माला में आयेंगे, पीछे का मणका बनेंगे। माताएँ कौन-सी सेवा करेंगी? सब नम्बर वन जायेंगी? नम्बरवन भी ग्रुप बनेगा। जितना सर्विस करो उतना ही लाख गुणा, पदम गुणा होकर मिलेगा। इसलिए यह संगमयुग है करने और पाने का। अभी-अभी करना, अभी-अभी पाना। प्रवृति में रहते भी डबल सेवा करो, हैन्डस भी बन जायेंगे और सेन्टर भी खुल जायेंगे। सरेन्डर हैन्डस तो कम ही हैं, वह चक्कर लगाते रहें लेकिन सम्भालने वाले प्रवृति वाले हों, ऐसे भी सेन्टर खुल सकते हैं। अगर बच्चों का, गृहस्थी का झंझट

है तो कमरा अलग लेकर सम्भालो। अगर बच्चों आदि की खिट-खिट नहीं है, कोई विघ्न रूप नहीं है तो घर में भी सेन्टर सम्भालो।(पार्टियों से)

26/11/1979

जरा भी हलचल में आना अर्थात फेल (ड्रामा)

ड्रामा की नॉलेज से क्या-क्यों के क्वेश्चन को समाप्त करने वाले ही प्रकृति जीत और मायाजीत बनतें हैं - सभी मायाजीत वा प्रकृतिजीत बने हो? यह 5 तत्व भी अपनी तरफ आकर्षित न करें और 5 विकार भी वार न करें। ऐसे मायजीत और प्रकृतिजीत दोनों ही पेपर में पास हो? अगर कोई प्रकृति द्वारा पेपर आये तो पास होने की शक्ति धारण हो गई है? हलचल में तो नहीं आयेंगे? जरा भी हलचल में आना अर्थात् फेल। यह क्या, यह क्यों, यह क्वेश्चन भी उठा तो क्या रिजल्ट होगी। अगर जरा भी कोई प्रकृति की समस्या वार करने वाली बन गई तो फेल हो जायेंगे। **कुछ भी हो, लेकिन अन्दर से सदा यह आवाज निकले वाह मीठा ड्रामा। इतना ड्रामा का ज्ञान पक्का किया है! या जब अच्छी बात है तो ड्रामा है, हलचल की बातें हैं तो हाय-हाय। 'हाय क्या हुआ' यह संकल्प में भी न आये,** ऐसे मजबूत हो? क्योंकि आगे चलकर अब ऐसी समस्यायें प्रकृति द्वारा भी आने वाली है। प्राकृतिक आपदायें तो दिन-प्रतिदिन बढनेवाली हैं ना। तो ऐसी स्थिति हो जो कोई भी संकल्प में भी हलचल न हो। ऐसे अचल और अडोल बने हो?

05/12/1979

अन्तिम दृश्य और दृष्टा की स्थिति

चारों ओर की हलचल की परिस्थितियाँ हों फिर भी सेकेण्ड में हलचल होते हुए भी अचल बन जाओ। फुल स्टॉप लगाना आता है? फुलस्टॉप लगाने में कितना समय लगता है? फुल स्टॉप लगाना इतना सहज होता है तो बच्चे भी लगा सकता है। क्वेश्चन मार्क नहीं लगा सकेगा, लेकिन फुल स्टॉप लगा सकेगा। तो वर्तमान समय हलचल बढने का समय है। लेकिन प्रकृति की हलचल और प्रकृतिपति का अचल होना। अब तो प्रकृति भी छोटे-छोटे पेपर ले रही है लेकिन फाइनल पेपर में पाँचों तत्वों का विकराल रूप होगा। एक तरफ प्रकृति का विकराल रूप, दूसरी तरफ पाँचों ही विकारों का अन्त होने के कारण अति विकराल रूप होगा। अपना लास्ट वार जमाने वाले होंगे। तीसरी तरफ सर्व आत्माओं के भिन्न-भिन्न रूप होंगे। एक तरफ तमोगुणी आत्माओं का वार, दूसरी तरफ भक्त आत्माओं की भिन्न-भिन्न पुकार। चौथी तरफ क्या होगा? पुराने संस्कार। लास्ट समय वह भी अपना चांस लेंगे। एक बार आकर फिर सदा के लिए विदाई लेंगे। संस्कार का स्वरूप क्या होगा? किसी के पास कर्मभोग के रूप में आयेंगे,

किसी के पास कर्म सम्बन्ध के बंधन के रूप में आयेंगे। किसी के पास व्यर्थ संकल्प के रूप में आयेंगे। किसी के पास विशेष अलबेलेपन और आलस्य के रूप में आयेंगे। ऐसे चारों ओर का हलचल का वातावरण होगा। राज्य सत्ता, धर्म सत्ता, विज्ञान सत्ता और अनेक प्रकार के बाहुबल सब अपनी सत्ताओं की हलचल में होंगे। ऐसे समय पर फुल स्टॉप लगाना आयेगा या क्वेश्चन मार्क सामने आयेगा? क्या होगा? इतनी समेटने की शक्ति अनुभव करते हो। देखते हुए न देखे, सुनते हुए न सुनो। प्रकृति की हलचल देख प्रकृतिपति बन प्रकृति को शान्त करो। अपने फुल स्टॉप की स्टेज से प्रकृति की हलचल को स्टॉप करो। तमोगुणी से सतोगुणी स्टेज में परिवर्तन करो। ऐसा अभ्यास है? ऐसे समय का आह्वान कर रहे हो ना? समेटने की शक्ति बहुत अपने पास जमा करो। इसके लिए विशेष अभ्यास चाहिए। अभी-अभी साकारी, अभी-अभी आकारी, अभी-अभी निराकारी। इन तीनों स्टेजेस में स्थित रहना इतना सहज हो जाए जैसे साकार रूप में सहज ही स्थित हो जाते हो वैसे आकारी और निराकारी स्थिति भी मेरी स्थिति है, तो अपनी स्थिति में स्थित होना तो सहज होना चाहिए। जैसे साकार रूप में एक ड्रेस चेन्ज कर दूसरी ड्रेस धारण करते हो ऐसे यह स्वरूप की स्थिति परिवर्तन कर सको। साकार स्वरूप की स्मृति को छोड आकारी फरिश्ता स्वरूप बन जाओ। तो फरिश्तेपन की ड्रेस सेकेण्ड में धारण कर लो। ड्रेस चेन्ज करना नहीं आता? ऐसा अभ्यास बहुत समय से चाहिए। तब ऐसे समय पर पास हो जायेंगे। समझा, समय की गति कितनी विकराल रूप लेने वाली है। ऐसे समय के लिए एवररेडी हो ना? या डेट बतायेंगे तब तो तैयार होंगे। डेट का मालूम होने से सोल कान्शंस के बजाए डेट कान्शंस हो जायेंगे। फिर फुल पास हो नहीं सकेंगे। इसलिए डेट बताई नहीं जायेगी लेकिन डेट स्वयं ही आप सबको टच होगी। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे इन आँखों के आगे कोई दृश्य देखते हो तो कितना स्पष्ट दिखाई देता है। ऐसे इनएडवान्स भविष्य स्पष्ट रूप में अनुभव करेंगे। लेकिन इसके लिए जहान के नूरों की आँखें सदा खुली रहें। अगर माया की धूल होगी तो स्पष्ट देख नहीं सकेंगे। समझा? क्या अभ्यास करना है? ड्रेस बदली करने का अभ्यास करो।

24/12/1979

चान्स है जो भी चाहे सीट ले सकते हैं

बापदादा एक-एक रत्न की वैल्यु को जानते हैं। एक-एक रत्न विश्व में अमूल्य रत्न है इसलिए बापदादा उसी विशेषता को देखते हुए रत्न की वैल्यु को देखते हैं। एक-एक रत्न अनेकों की सेवा के निमित्त बनने वाला है। सदा अपने को विजयी रत्न अनुभव करो। सदा अपने मस्तक पर विजय का तिलक लगा हुआ हो क्योंकि जब बाप के बन गये तो विजय आपका जन्म

सिद्ध अधिकार है। इसलिए यादगार भी 'विजय माला' गाई और पूजी जाती है। सभी विजय माला के मणके हो ना? अभी फाइनल नहीं हुआ है इसलिए चांस है जो भी चाहे सीट ले सकते हैं।

06/01/1982

विधि

पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आँखों की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है।

06/01/1982

जो होता है वह कल्याणकारी

सिर्फ एक बात है, छोटी चीज को बडा नहीं बनाओ। बडे को छोटा बनाओ। यह भी होता है क्या? यह क्वेश्चन नहीं। यह क्या हुआ? ऐसे भी होता है? इसके बजाए जो होता है, कल्याणकारी है। क्वेश्चन खत्म होने चाहिए। फुलस्टॉप। बुद्धि को इसमें ज्यादा नहीं चलाओ नहीं तो एनर्जी वेस्ट चली जाती है और अपने को शक्तिशाली नहीं अनुभव करते। क्वेश्चन मार्क ज्यादा होते हैं। तो अब मधुबन की वरदान भूमि में क्वेश्चन मार्क खत्म करके, फुलस्टॉप लगाकर जाओ। क्वेश्चन मार्क मुश्किल है, फुलस्टॉप सहज है। तो सहज को छोडकर मुश्किल को क्यों अपनाते हो! उसमें एनर्जी वेस्ट है और फुलस्टॉप में लाइफ ही बेस्ट हो जायेगी। वहाँ वेस्ट, वहाँ बेस्ट। तो क्या करना चाहिए? अभी वेस्ट नहीं करना। हर संकल्प बेस्ट, हर सेकण्ड बेस्ट। अच्छा

08/01/1982

बाप समान

सबके मुख से यही निकले कि हमारे समीप के सम्बन्धी हमें मिल गये हैं। पहले रिलेशन की अनुभूति कराओ फिर कनेक्शन सहज हो जायेगा। 'हमारे हमको मिल गये' - ऐसी लहर चारों ओर फैल जाए। तब मुख से निकलेगा - जिन्हें पाना था वह पा लिया। जैसे बाप को भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से आप अधिकारी आत्मायें अनुभव करती हो। ऐसे वो तडपती हुई आत्मायें यही अनुभव करें कि जो कुछ मिलना हैं, जो कुछ पाना है, इन्हीं द्वारा ही मिलना है, पाना है। फिर नाम भिन्न-भिन्न कहेंगे। ऐसे वायुमण्डल बनाओ। माँ भी बच्चे को बाप का परिचय स्वयं ही देती है। माँ ही बच्चे को बाप से मिलाती है। अपने तक नहीं बनाना है लेकिन बाप से कनेक्शन जोडने

योग्य बनाना है। सिर्फ माँ-माँ कहते रहें, ऐसे छोटे बच्चे नहीं बनाना। लेकिन बाबा-बाबा सिखाना। वर्से के अधिकारी बनाना। समझा?

जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज निकलती है - 'मेरा बाबा'। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो, जो हरेक समझे कि यह - 'मेरी माँ ' है। यह बेहद की पालना। हरेक से मेरे-पन की भावना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक, सहयोगी सेवा के साथी हैं। इसको कहा जाता है - 'बाप समान'। इसको ही कहा जाता है - कर्मातीत स्टेज के तख्तनशीन। जो सेवा के कर्म के भी बन्धन में न आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है। इस कर्मबन्धन से - 'कर्मातीत'। तो समझा - इस वर्ष क्या करना है? कर्मातीत बनना है और 'यह वही हैं, यही सब कुछ हैं,' यह महसूसता दिलाए, आत्माओं को समीप लाना है। ठिकाने पर लाना हे। अपने प्रति भी सुनाया और सेवा के प्रति भी सुनाया। अच्छा।

10/01/1982

भाग्य

बापदादा तो अमृतवेले से हर बच्चे का भाग्य देखते रहते हैं कि कितने प्रकार के भाग्य हर आत्मा के नूंधे हुए हैं। अमृतवेला ही भाग्य ले आता है। रूहानी मिलन का भाग्य अमृतवेला ही ले आता है ना। हर कर्म में आपका भाग्य है। देखते हो तो बाप को। यह आँखें मिली ही हैं बाप को देखने के लिए। कान मिले हैं बाप का सुनने के लिए। तो भाग्य हो गया ना! हर कर्मेन्द्रिय का भाग्य है। पाँव मिले हैं हर कदम पर कदम रखने के लिए। ऐसे हर कर्मेन्द्रिय का अपना-अपना भाग्य है। तो लिस्ट निकालो कि कितने भाग्य सारे दिन में प्राप्त होते हैं! बाप को देखो, बाप का सुना, बाप के साथ सोया, बाप के साथ खाया, सब कुछ बाप के साथ करते हो। सेवा की तो भी बाप का परिचय दिया, बाप से मिलाया... तो कितना भाग्य हो गया? तो बापदादा सदा हर बच्चे के भाग्य की लकीर कितनी स्पष्ट और लम्बी है, क्लीअर है - वह देखते हैं। भाग्य की लकीर बीच-बीच में कट तो नहीं जाती है।

14/01/1982

संकल्प शक्ति

वैसे भी ज्यादा स्थान पर अगर रोशनी फैलानी होती है तो क्या करते हैं? ऊँची रोशनी करते हैं ना! सूर्य भी विश्व में रोशनी तब दे सकता है जब ऊँचा है। तो साकार सृष्टि को सकाश देने के लिए ब्रह्मा बाप को भी ऊँचे स्थान निवासी बनना ही था। अब तो सेकण्ड में जहाँ चाहें अपना कार्य कर सकते और करा सकते हैं। मुख द्वारा व पत्रों द्वारा कैसे इतना कार्य करते,

इसलिए तीव्र विधि द्वारा बच्चों के सहयोगी बन कार्य कर रहे हैं। **सबसे तीव्र गति की सेवा का साधन है - 'संकल्प शक्ति'।** तो ब्रह्मा बाप के श्रेष्ठ संकल्प की विधि द्वारा वृद्धि में सदा सहयोगी है। तो वृद्धि की भी गति तीव्र हो रही है ना। विधि तीव्र है तो वृद्धि भी तीव्र है। बगीचे को देख खुशी होती है ना? अच्छा -

18/01/1982

निमित्त

बापदादा सेवाधारियों को देख खुश होते हैं। सभी सदा अपने को निमित्त समझकर चलना और नम्रचित्त होकर चलना। जितना निमित्त और नम्रचित्त होकर चलेंगे उतनी सेवा में सहज वृद्धि होगी। कभी मैंने किया, मैं टीचर हूँ, यह 'मैं' का भाव नहीं रखना। इसको कहा जाता है सर्विस करने के बजाए सर्विस में रुकती कला आने का आधार।

20/01/1982

खुद को भी बचाओ, दूसरो को भी बचाओ

जैसे क्रोध अग्नि से जलने के कारण दूर रहते हैं, तो यह सूक्ष्म घृणा भी क्रोध के अग्नि के समान, किनारा करा देती है। इसका रॉयल शब्द है - अपनी अवस्था को खराब करें इससे किनारा करना अच्छा है। न्यारा बनना और चीज है, किनारा करना और चीज है। प्यारे बन न्यारे बनते हो, वह राइट है। लेकिन सूक्ष्म घृणा भाव - 'यह ऐसा है, यह तो बदलना ही नहीं है' । ऐसे सदा के लिए उसके सूक्ष्म में श्रापित करते हो। सेफ रहो लेकिन उसको सर्टीफिकेट फाइनल नहीं दो। ऐसे ही विशेषता को देखते हुए सदा सर्व के प्रति श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना रखते हुए इस अंश को भी विदाई दो। अपनी श्रेष्ठ भावना औरश्रेष्ठ कामना को छोडो नहीं, अपना बचाव करते हुए दूसरी आत्माओं को गिरा करके अपना बचाव नहीं करो। यह घृणा भाव अर्थात् गिराना। दूसरे को गिरा करके अपने को बचाना यह ब्राह्मणों की विशेषता नहीं। खुद को भी बचाओ, दूसरे को भी बचाओ। इसको कहा जाता है - विशेष बनना और विशेषता देखना। यह छोटी-छोटी बातें चलते-चलते दो स्वरूप धारण कर लेती हैं - एक दिलशिकस्त और दूसरा अलबेला। तो अभी रावण के अंश को सदा के लिए विदाई देने के लिए इन दोनों रूपों को विदाई दो। और सदा अपने में बाप द्वारा मिली हुई विशेषता को देखो। मेरी विशेषता नहीं, बाप द्वारा मिली हुई विशेषता है। मेरी विशेषता सोचेंगे फिर अहंकार का अंश आ जायेगा। मेरी विशेषता से काम क्यों नहीं लिया जाता, मेरी विशेषता को जानते ही नहीं है! 'मेरी' कहाँ से आई? विशेष जन्म की गिफ्ट है विशेषता पाना। तो जन्म दाता ने गिफ्ट दी, 'मेरी' कहाँ से आई? मेरी विशेषता, मेरी नेचर, मेरी दिल यह कहती है, वा मेरी दिल यह करती है, यह मेरी नहीं है लेकिन

वरी (चिंता) है। आप लोग कहते हो ना - वरी, हरी, करी। समझा - यही अंश समाप्त करो और सदा बाप द्वारा मिली हुई स्वयं की विशेषता और सर्व की विशेषता को देखो अर्थात् सदा स्वयं को और सर्व को बधाई दो। सबका अंश समझ लिया ना? अभी मोह का अंश क्या है? नष्टोमोहा नहीं हुए हो क्या? अच्छा - मोह का रायल रूप कोई भी वस्तु व व्यक्ति अच्छा लगता है, यह चीज मुझे अच्छी लगती है, मोह नहीं लेकिन अच्छी लगती है। अगर किसी भी व्यक्ति या वस्तु में अच्छा लगाता तो सब अच्छा लगाना चाहिए - चत्तियों वाले कपडे भी अच्छे तो बढिया कपडा भी अच्छा। 36 प्रकार के भोजन भी अच्छे तो सूखी रोटी और गुड भी अच्छा। हर वस्तु अच्छी, हर व्यक्ति अच्छा। ऐसे नहीं - यह ज्यादा अच्छा लगता है! यह वस्तु ज्यादा अच्छी लगती है ऐसा समझकर कार्य में नहीं लगाओ। दवाई है, दवाई करके भले खाओ। लेकिन अच्छा लगता है इसलिए खाओ, यह नहीं। अच्छा अर्थात् अट्रैक्शन जायेगी। तो यह है मोह का अंश। खाओ, पियो, मौज करो लेकिन अंश को विदाई दे करके न्यारे बन प्रयोग करने में प्यारे बनो। समझा! - बापदादा के भण्डारे से स्वतः ही सर्व प्रमाण, सर्व प्राप्ति का साधन बना हुआ है, खूब खाओ लेकिन बाप के साथ-साथ खाओ, अलग नहीं खाओ। बाप के साथ खायेंगे, बाप के साथ मौज मनायेंगे तो स्वतः ही सदा 'लकीर के अन्दर अशोक वाटिका में होंगे'। जहाँ रावण का अंश आ नहीं सकता। खाओ, पियो, मौज करो लेकिन लकीर के अन्दर और बाप के साथ-साथ। फिर कोई बात मुश्किल नहीं लगेगी। हर बात मनोरंजन अनुभव होगी। समझा क्या करना है? सदा मनोरंजन करो। अच्छा -

22/01/1982

बाबा ही संसार है

प्रश्नः- बाबा ही संसार है, इसका भाव क्या है?

उत्तरः- वैसे भी बुद्धि जाती है तो संसार में ही जाती है ना! संसार में दो चीजें हैं - एक व्यक्ति, दूसरा वस्तु। बाप ही संसार है अर्थात् सर्व व्यक्तियों से जो प्राप्ति है वह एक बाप से है। और जो सर्व वस्तुओं से तृप्ति होती है वह भी बाप से है। तो संसार हो गया ना। सम्बन्ध भी बाप से, सम्पर्क भी बाप से, उठना-बैठना भी बाप से। तो संसार ही बाप हो गया ना। अच्छा -

22/01/1982

अभ्यास

बाप के साथ सम्पर्क सम्बन्ध होगा, अभ्यास की तीली पर मसाला ठीक होगा तब सेकण्ड में संकल्प किया और बना। तो सब साधन ठीक चाहिए। सम्बन्ध भी चाहिए। अभ्यास भी चाहिए। सम्बन्ध है और अभ्यास कम है तो मेहनत के बाद सफलता मिलेगी।

09/03/1982

भक्ति का फल है ज्ञान

भक्ति का फल है 'ज्ञान' अर्थात् मुहब्बत न कि मेहनत। 63 जन्म मेहनत की, थोडी वा ज्यादा लेकिन मेहनत तो की ना! अब अन्तिम एक जन्म मुहब्बत के समय भी मेहनत करेंगे क्या? अब तो मेहनत का फल खाओ। फल खाने के समय भी बीज बोते रहेंगे क्या! अब तो सदा बाप की मुहब्बत द्वारा फल खाओ अर्थात् सदा फलीभूत बनो। फल खाओ अर्थात् सदा सफल रहो।

09/03/1982

ईश्वरीय सेवा के साथ नोकरी

डबल विदेशी बच्चों का एक प्रश्न रहता है कि हमें डबल सर्विस (ईश्वरीय सर्विस के साथ नौकरी) के लिए क्यों कहा जाता है?इस प्रश्न का उत्तर देते हुए बापदादा बोले -

'समय कम है और प्राप्ति करने चाहते हो तो सबसे ज्यादा। इसके कारण तन भी लगे, मन भी लगे और धन भी लगे, इसलिए तीनों प्रकार की सर्विस करनी पडे। थोडे समय में आपका तीनों प्रकार का लााभ जमा होता है क्योंकि धन की भी मार्क्स हैं। वह मार्क्स जमा होने के कारण नम्बर आगे ले लेते हो। तो आप लोगों के फायदे के लिए कहा जाता है कि अपना धन लगाना तो धन की सबजेक्ट में भी एक का पद्म मिलता है। सब तरफ से अगर एक ही समय में लाभ हो सकता है तो क्यों न करो। बाकी जब निमित्त बनी हुई आत्मायें देखेंगी, समय ही नहीं है, इसे फुर्सत ही नहीं है, अपने खाने का भी समय नहीं मिलता, यह इतना बिजी हो गये हैं तो आटोमेटिकली उससे फ्री कर देंगी। लेकिन जब तक इतने बिजी हो जाओ तब तक यह जरूरी है। यह व्यर्थ नहीं जाता है, इसकी भी मार्क्स जमा हो रही है। बिजी हो जायेंगे तो ड्रामा ही आपको नौकरी करने नहीं देगा। कोई न कोई कारण ऐसा बनेगा जो चाहो भी लेकिन कर नहीं सकेंगे। इसीलिए जैसे अभी चल रहे हो उस में ही कल्याण है। ऐसे नहीं समझो हम सरेन्डर नहीं हैं। सरेन्डर हो, डायरेक्शन प्रमाण कर रहे हो। अपने मन से करते हो तो सरेन्डर नहीं हो। इसमें अगर अपनी मत चलाते हो, कि नहीं! मैं तो नहीं करुँगी, और ही मनमत है। इसलिए स्वयं को सदा हल्का रखो। जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं वह अगर कहती हैं तो समझो इसमें हमारा

कल्याण है। इसमें आप निश्चिंत रहो। इसमें जो ज्यादा सोचेंगे - मेरा शायद पार्ट नहीं है, मेरे को क्यों नहीं कहा जाता है, यह फिर व्यर्थ है। समझा।

12/03/1982

पुरुषार्थ में रुकावट

प्रश्नः- चलते-चलते पुरुषार्थ में रूकावट आती है तो क्या करना चाहिए? रूकावट आने का कारण क्या होता है?

उत्तरः- जब कई प्रकार के पेपर्स सामने आते हैं, तो उन पेपर्स का सामना करने की शक्ति न होने के कारण पुरुषार्थ में रूकावट आ जाती है, ऐसे समय पर दूसरों का सहयोग लेना जरूरी होता है। जैसे कार में बैटरी जब थोडी ढीली हो जाती है, कार अपने आप नहीं चलती है तो दूसरों से थोडा धक्का लगवाते हैं ना! तो जिस भी आत्मा में आपका फेथ हो और समझो इनसे हमको मदद मिल सकती है तो उनसे थोडा सा सहयोग लेकर आगे बढ जाना चाहिए। पहले उसे अपनी बात स्पष्ट सुनाना चाहिए कि ऐसा है, फिर सहयोग मिलने से चल पडेंगे। क्योंकि होता क्या है - जिस समय ऐसी स्टेज आती है उस समय डायरेक्ट बाप से सहयोग लेने की हिम्मत नहीं होती है, इसलिए फिर साकार में थोडा सा सहयोग लेंगे तो फिर डायरेक्ट लेने में मदद मिल जायेगी।

14/03/1982

सेवा और स्व का बैलेन्स

प्रश्नः- कई निश्चयबुद्धि बच्चे 4-5 साल चलने के बाद चले गये, यह लहर क्यों? इस लहर को कैसे समाप्त करें?

उत्तरः- जाने का विशेष कारण - सेवा में बहुत बिजी रहते हैं लेकिन सेवा और स्व का बैलेन्स खो देते हैं। तो जो अच्छे-अच्छे बच्चे रूक जाते हैं उन्हों का एक तो यह कारण होता और दूसरा उन्हों का कोई विशेष संस्कार ऐसा होता है जो शुरु से ही उसमें कमजोर होते हैं लेकिन उसे छिपाते हैं, युद्ध करते रहते हैं अपने आप से। बापदादा को वा निमित्त बनी हुई आत्माओं को अपनी कमजोरी स्पष्ट सुनाकर उसे खत्म नहीं करते। छिपाने के कारण वह बीमारी अन्दर ही अन्दर विकराल रूप लेती जाती है और आगे बढने का अनुभव नहीं होता, फिर दिलशिकस्त हो छोड देते हैं। तीसरा कारण यह भी होता है - कि आपस में संस्कार नहीं मिलते हैं। संस्कारों का टक्कर हो जाता है।

अब इस लहर को समाप्त करने के लिए एक तो सेवा के साथ-साथ स्व का फुल अटेन्शन चाहिए। दूसरा जो भी आते हैं उन्हों को बापदादा वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे

बिल्कुल कलीयर होना चाहिए। अगर सर्विस में थोडा भी अनुभव करो 'टू मच' है तो अपनी उन्नति का साधन पहले सोचना चाहिए और निमित्त बनी हुई आत्माओं को भी अपनी राय दे देनी चाहिए। जो नये आते हैं उन्हों को पहले इन बातों का अटेन्शन दिलाना चाहिए। अपने संस्कारों की चेकिंग पहले से ही करनी चाहिए। अगर किसी से अपना संस्कार टक्कर खाता है तो उससे किनारा कर लेना अच्छा है। जिस सरकमस्टांस से संस्कारों का टक्कर होता है, उनमें अलग हो जाना ही अच्छा है।

14/03/1982

शरीर से अलग मैं आत्मा हूँ

चलते-फिरते, बैठते, बातचीत करते पहली अनुभूति - यह शरीर जो हिसाब-किताब के वृक्ष का मूल तना है जिससे यह शाखायें प्रकट होती हैं, यह देह और आत्मा रूपी बीज, दोनों ही बिल्कुल अलग हैं। ऐसे आत्मा न्यारेपन का चलते फिरते बार-बार अनुभव करेंगे। नॉलेज के हिसाब से नहीं कि आत्मा और शरीर अलग हैं। लेकिन शरीर से अलग मैं आत्मा हूँ! यह अलग वस्तु की अनुभूति हो। जैसे स्थूल शरीर के वस्त्र और वस्त्र धारण करने वाला शरीर अलग अनुभव होता है ऐसे मुझ आत्मा का यह शरीर वस्त्र है, मैं वस्त्र धारण करने वाली आत्मा हूँ। ऐसा स्पष्ट अनुभव हो। जब चाहे इस देहभान रूपी वस्त्र को धारण करें, जब चाहे इस वस्त्र से न्यारे अर्थात् देहभान से न्यारे स्थिति में स्थित हो जायें। ऐसा न्यारापन का अनुभव होता है? वस्त्र को मैं धारण करता हूँ या वस्त्र मुझे धारण करता है? चैतन्य कौन? मालिक कौन? तो एक निशानी - 'न्यारेपन की अनुभूति।' अलग होना नहीं है लेकिन मैं हूँ ही अलग।

27/03/1982

सेवाधारी अर्थात निर्माण

सदा अपने को सेवा के निमित्त बने हुए सेवा के श्रृंगार समझकर चलते हो? सेवाधारी की मुख्य विशेषता कौन-सी है? सेवाधारी अर्थात निर्माण करने वाले सदा निर्मान। निर्माण करने वाले और निर्मान रहने वाले। निर्मानता ही सेवा की सफलता का साधन है। निर्मान बनने से सदा सेवा में हल्के रहेंगे। निर्मान नहीं, मान की इच्छा है तो बोझ हो जायेगा। बोझ वाला सदा रुकेगा। तीव्र नहीं जा सकता। इसलिए निर्मान हैं या नहीं है उसकी निशानी 'हल्का' होगा। अगर कोई भी बोझ अनुभव होता है तो समझो निर्मान नहीं हैं।

27/03/1982

ब्राह्मण माना ही भाग्यवान

श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का आधार है - 'श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्म।' चाहे ट्रस्टी आत्मा हो, चाहे सेवाधारी आत्मा हो, दोनों इसी आधार द्वारा नम्बर ले सकते हैं। दोनों को फुल अथार्टी है - भाग्य बनाने की। जो बनाने चाहें, जितना बनाना चाहें बना सकते हैं। संगमयुग पर वरदान द्वारा ड्रामा अनुसार समय को वरदान मिला हुआ है। जो चाहे वह श्रेष्ठ भाग्यवान बन सकता है। ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना अर्थात् जन्म से भाग्य ले ही आते हो। जन्मते ही भाग्य का सितारा सर्व के मस्तक पर चमकता हुआ है। यह तो 'जन्म-सिद्ध' अधिकार हो गया। ब्राह्मण माना ही - 'भाग्यवान'।

01/04/1982

अमानत

इस पुरानी देह को बापदादा द्वारा मिली हुई 'अमानत' समझो। सेवा अर्थ कार्य में लगाना है। यह मेरी देह नहीं लेकिन सेवा अर्थ अमानत है। जैसे मेहमान बन देह में रह रहे हैं। थोडे समय के लिए बापदादा ने कार्य के लिए आपको यह तन दिया है।

03/04/1982

लौकिक-अलौकिक दोनों संवंधो में महात्यागी अर्थात नष्टोमोहा

पहला त्याग - अपने देह की स्मृति का त्याग। दूसरा देह के सम्बन्ध का त्याग। देह के सम्बन्ध में पहली बात कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध की सुनाई - क्योंकि 24 घण्टे का सम्बन्ध इन कर्मेन्द्रियों के साथ है। इन्द्रियजीत बनना, अधिकारी आत्मा बनना यह दूसरा कदम। इसका स्पष्टीकरण भी सुना। अब तीसरी बात यह है - देह के साथ व्यक्तियों के सम्बन्ध की। इसमें लौकिक तथा अलौकिक सम्बन्ध आ जाता है। इन दोनों सम्बन्ध में महात्यागी अर्थात् 'नष्टोमोहा'। नष्टोमोहा की निशानी - दोनों सम्बन्धों में न किसी में घृणा होगी, न किसी में लगाव वा झुकाव होगा। अगर किसी से घृणा है तो उस आत्मा के अवगुण वा आपके दिलपसन्द न करने वाले कर्म बार-बार आपकी बुद्धि को विचलित करेंगे, न चाहते भी संकल्प में, बोल में, स्वप्न में भी उसी का उल्टा चिंतन स्वतः ही चलेगा। याद बाप को करेंगे और सामने आयेगी वह आत्मा। जैसे दिल के झुकाव में लगाव वाली आत्मा न चाहते भी अपने तरफ आकर्षित कर ही लेती है। वह गुण और स्नेह के रूप में बुद्धि को आकर्षित करती है और घृणा वाली आत्मा स्वार्थ की

पूर्ति न होने के कारण, स्वार्थ बुद्धि को विचलित करता है। जब तक स्वार्थ पूरा नहीं होता तब तक उस आत्मा के साथ विरोधी संकल्प वा कर्म का हिसाब-किताब समाप्त नहीं होता।

08/04/1982

सर्व संबंध एक बाप से

जब कोई समस्या जीवन में आयेगी, दिल में कोई उलझन की बात होगी तो न चाहते भी अल्पकाल के सहारे देने वाले वा अल्पकाल की प्राप्ति कराने वाले, लगाव वाली आत्मा ही याद आयेगी। बाप याद नहीं आयेगा। फिर से ऐसे लगाव लगाने वाली आत्मायें अपने आपको बचाने के लिए वा अपने को राइट सिद्ध करने के लिए क्या सोचती और बोलती हैं कि बाप तो निराकार और आकार है ना! साकार में कुछ चाहिए जरूर। लेकिन यह भूल जाती हैं अगर एक बाप से सर्व प्राप्ति का सम्बन्ध, सर्व सम्बन्धों का अनुभव और सदा सहारे दाता का अटल विश्वास है, निश्चय है तो बापदादा निराकार या आकार होते भी स्नेह के बन्धन में बाँधे हुए हैं। साकार रूप की भासना देते हैं। अनुभव न होने का कारण? नॉलेज द्वारा यह समझ है कि सर्व सम्बन्ध एक बाप से रखने हैं लेकिन जीवन में सर्व सम्बन्धों को नहीं लाया है। इसलिए सर्व सम्बन्ध की अनुभूति नहीं कर पाते हैं। जब भक्ति मार्ग में भक्त माला की शिरोमणी मीरा को भी साक्षात्कार नहीं लेकिन साक्षात् अनुभव हुआ तो क्या ज्ञान सागर के डायरेक्ट ज्ञान स्वरूप बच्चों को साकार रूप में सर्व प्राप्ति के आधार मूर्त, सदा सहारे दाता बाप का अनुभव नहीं हो सकता! तो फिर सर्वशक्तिवान को छोड यथाशक्ति आत्माओं को सहारा क्यों बनाते हो! यह भी एक गुह्य कर्मों का हिसाब बुद्धि में रखो। कर्मो का हिसाब कितना गुह्य है - इसको जानो। किसी भी आत्मा द्वारा अल्पकाल का सहारा लेते हो वा प्राप्ति का आधार बनाते हो, उसी आत्मा के तरफ बुद्धि का झुकाव होने के कारण कर्मातीत बनने के बजाए कर्मो का बन्धन बंध जाता है। एक ने दिया- दूसरे ने लिया - तो आत्मा का आत्मा से लेन-देन हुआ। तो लेन-देन का हिसाब बना वा समाप्त हुआ? उस समय अनुभव ऐसे करेंगे जैसे कि हम आगे बढ रहे हैं लेकिन वह आगे बढना, बढना नहीं, लेकिन कर्म बन्धन के हिसाब का खाता जमा किया। रिजल्ट क्या होगी! कर्म-बन्धनी आत्मा, बाप से सम्बन्ध का अनुभव कर नहीं सकेंगी, वह याद के सबजेक्ट में सदा कमजोर होगी। नॉलेज सुनने और सुनाने में भल होशियार, सेन्सीबुल होगी लेकिन इसेन्सफुल नहीं होगी। सर्विसएबुल होगी लेकिन विघ्न-विनाशक नहीं होगी। सेवा की वृद्धि कर लेंगे लेकिन विधि पूर्वक वृद्धि नहीं होगी। इसलिए ऐसी आत्मायें कर्म बन्धन के बोझ कारण स्पीकर बन सकती हैं लेकिन स्पीड में नहीं चल सकती अर्थात् उडती कला की स्पीड का अनुभव नहीं कर सकती। तो यह भी दोनों प्रकार के सम्बन्ध को चेक करो - किसी भी आत्मा से चाहे घृणा के सम्बन्ध में, चाहे

प्राप्ति वा सहारे के सम्बन्ध से लगाव तो नहीं है? अर्थात् बुद्धि का झुकाव तो नहीं है? बार-बार बुद्धि का जाना वा झुकाव सिद्ध करता है कि बोझ है। बोझ वाली चीज झुकती है। तो यह भी कर्मो का बोझ बनता है इसलिए बुद्धि का झुकाव न चाहते भी वहाँ ही होता है। समझा - अभी तो एक देह के सम्बन्ध की बात सुनाई।

08/04/1982

ब्रह्माकुमार/कुमारी अर्थात स्वर्ग के वर्से के अधिकारी

आज ऐसे ज्ञानवान मिलन की भावना स्वरूप आत्माओं से मिलने के लिए बापदादा बच्चों के बीच आये हुए हैं। कई ब्राह्मण आत्मायें शक्ति स्वरूप बन, महावीर बन सदा विजयी आत्मा बनने में वा इतनी हिम्मत रखने में स्वयं को कमजोर भी समझती हैं लेकिन एक विशेषता के कारण विशेष आत्माओं की लिस्ट में आ गई। कौन-सी विशेषता? सिर्फ बाप अच्छा लगता है, श्रेष्ठ जीवन अच्छा लगता है। ब्राह्मण परिवार का संगठन, निःस्वार्थ स्नेह - मन को आकर्षित करता है। बस यही विशेषता है कि बाबा मिला, परिवार मिला, पवित्र ठिकाना मिला, जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सहज सहारा मिल गया। इसी आधार पर मिलन की भावना में स्नेह के सहारे में चलते जा रहे हैं। लेकिन फिर भी सम्बन्ध जोडने के कारण सम्बन्ध के आधार पर स्वर्ग का अधिकार वर्से में पा ही लेते हैं - क्योंकि ब्राह्मण सो देवता, इसी विधि के प्रमाण देवपद की प्राप्ति का अधिकार पा ही लेते हैं। सतयुग को कहा ही जाता है - देवताओं का युग। चाहे राजा हो, चाहे प्रजा हो लेकिन धर्म देवता ही है - क्योंकि जब ऊँचे-ते-ऊँचे बाप ने बच्चा बनाया तो ऊँचे बाप के हर बच्चे को स्वर्ग के वर्सा का अधिकार, देवता बनने का अधिकार, जन्म सिद्ध अधिकार में प्राप्त हो ही जाता है। ब्रह्माकुमार और कुमारी बनना अर्थात् स्वर्ग के वर्से के अधिकार की अविनाशी स्टैम्प लग जाना। सारे विश्व से ऐसा अधिकार पाने वाली सर्व आत्माओं में से कोई आत्मायें ही निकलती हैं। इसलिए ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना कोई साधारण बात नहीं समझना। ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना ही विशेषता है और इसी विशेषता के कारण विशेष आत्माओं की लिस्ट में आ जाते हैं। इसलिए ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना अर्थात् ब्राह्मण लोक के, ब्राह्मण संसार के ब्राह्मण परिवार के बनना। ब्रह्माकुमार-कुमारी बन अगर कोई भी साधारण चलन वा पुरानी चाल चलते हैं तो सिर्फ अकेला अपने को नुकसान नहीं पहुँचाते - क्योंकि अकेले ब्रह्माकुमार-कुमारी नहीं हो लेकिन ब्राह्मण कुल के भाती हो। स्वयं का नुकसान तो करते ही हैं लेकिन कुल को बदनाम करने का बोझ भी उस आत्मा के ऊपर चढता है। ब्राह्मण लोक की लाज रखना यह भी हर ब्राह्मण का फर्ज है। जैसे लौकिक लोकलाज का कितना ध्यान रखते हैं। लौकिक लोकलाज पद्मापद्मपति बनने से भी कहाँ वंचित कर देती है। स्वयं ही अनुभव

भी करते हो और कहते भी हो कि चाहते तो बहुत हैं लेकिन लोकलाज को निभाना पडता है। ऐसे कहते हो ना? जो लोकलाज अनेक जन्मों की प्राप्ति से वंचित करने वाली है, वर्तमान हीरे जैसा जन्म कौडी समान व्यर्थ बनाने वाली है, यह अच्छी तरह से जानते भी हो फिर भी उस लोकलाज को निभाने में अच्छी तरह ध्यान देते हो, समय देते हो, एनर्जी लगाते हो। तो क्या इस ब्राह्मण लोकलाज की कोई विशेषता नहीं है।

18/04/1982

जो पाना है वह अभी पा लो

विघ्न-विनाशक आत्माओं के आगे विघ्न पुरुषार्थ में रुकावट डाल नहीं सकता। समय के हिसाब से रफ्तार का हिसाब नहीं। दो साल वाला आगे जा सकता, दो मास वाला नहीं जा सकता, यह हिसाब नहीं। यहाँ तो सेकण्ड का सौदा है। दो मास तो कितना बडा है। लेकिन जब से आये तब से तीव्रगति हैं? तो सदा तीव्र गति वाले कई अलबेली आत्माओं से आगे जा सकते हैं। इसलिए वर्तमान समय को और मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं को यह वरदान है - जो अपने लिए चाहो जितना आगे बढना चाहो, जितना अधिकारी बनने चाहो उतना सहज बन सकते हो क्योंकि - वरदानी समय है। फिर वरदान का समय भी समाप्त हो जायेगा। फिर मेहनत से भी कुछ पा नहीं सकेंगे। इसलिए जो पाना है वह अभी पा लो। जो करना है अभी कर लो। सोचो नहीं लेकिन जो करना है वह दृढ संकल्प से कर लो। और सफलता पा लो। अच्छा -

26/04/1982

बडो ने कहा और किया

सेवाधारी अर्थात् बडों के डायरेक्शन को फौरन अमल में लाने वाले। लोक संग्रह अर्थ कोई डायरेक्शन मिलता है तो भी सिद्ध नहीं करना चाहिए कि मैं राइट हूँ। भल राइट हो लेकिन लोक संग्रह अर्थ निमित्त आत्माओं का डायरेक्शन मिलता है तो सदा - 'जी हाँ', 'जी हाजिर', करना यही सेवाधारियों की विशेषता है, यह झुकना नहीं है, नीचे होना नहीं है लेकिन फिर भी ऊँचा जाना है। कभी-कभी कोई समझते हैं अगर मैंने किया तो मैं नीचे हो जाऊँगी, मेरा नाम कम हो जायेगा, मेरी पर्सनैलिटी कम हो जायेगी, लेकिन नहीं। मानना अर्थात् माननीय बनना, बडों को मान देना अर्थात् स्वमान लेना। तो ऐसे सेवाधारी हो जो अपने मान-शान का भी त्याग कर दो। अल्पकाल का मान और शान क्या करेंगे। आज्ञाकारी बनना ही सदाकाल का मान और शान लेना है। तो विनाशी लेना है या अभी-अभी का लेना है? तो सेवाधारी अर्थात् इन सब बातों के त्याग में सदा एवररेडी। बडों ने कहा और किया। ऐसे विशेष सेवाधारी, सर्व के और बाप के प्रिय होते हैं। झुकना अर्थात् सफलता या फल दायक बनना। उस समय भल ऐसे लगता

है कि मेरा नाम नीचे जा रहा है, वह बडा बन गया, मैं छोटी बन गई। मेरे को नीचे किया गया उसको ऊपर किया गया। लेकिन होता सेकण्ड का खेल है। सेकण्ड में हार हो जाती और सेकण्ड में जीत हो जाती। सेकण्ड की हार सदा की हार है जो चन्द्रवंशी कमानधारी बना देती है और सेकण्ड की जीत सदा की खुशी प्राप्त कराती है। जिसकी निशानी श्रीकृष्ण को मुरली बजाते हुए दिखाया है। तो कहाँ चन्द्रवंशी कमानधारी और कहाँ मुरली बजाने वाले! तो सेकण्ड की बात नहीं है लेकिन सेकण्ड का आधार सदा पर है। तो इस राज को समझते हुए सदा आगे चलते चलो। ब्रह्माबाप को देखा- ब्रह्माबाप ने अपने को कितना नीचे किया - इतना निर्मान होकर सेवाधारी बना जो बच्चों के पाँव दबाने के लिए भी तैयार। बच्चे मेरे से आगे हैं, बच्चे मेरे से भी अच्छा भाषण कर सकते हैं। ‘पहले मैं’ कभी नहीं कहा। आगे बच्चे, पहले बच्चे, बडे बच्चे कहा, तो स्वयं को नीचे करना नीचे होना नहीं है, ऊँचा जाना है। तो इसको कहा जाता है - ‘सच्चे नम्बरवन योग्य सेवाधारी।’

26/04/1982

अंतिम पेपर के समय एक सेकण्ड की मार्जिन मिलनी है।

इस संगमयुग के हीरो पार्टधारी अर्थात् विशेष आत्मायें। तो आप सबकी भी पहले से तैयारी चाहिए ना कि उस समय करेंगे? मार्जिन ही सेकण्ड की मिलनी है फिर क्या करेंगे? सोचने की भी मार्जिन नहीं मिलनी है। करूँ, न करूँ, यह करूँ, वह करूँ, ऐसे सोचने वाले ‘साथी’ के बजाए ‘बाराती’ बन जायेंगे। इसलिए अन्तःवाहक स्थिति अर्थात् कर्मबन्धन मुक्त कर्मातीत - ऐसी कर्मातीत स्थिति का वाहन अर्थात् अन्तिम वाहन, जिस द्वारा ही सेकण्ड में साथ में उडेंगे।

30/04/1982

यज्ञ सेवा

एक हैं - आत्माओं को बाप का परिचय दे बाप के वर्से के अधिकारी बनाने के निमित्त सेवाधारी और दूसरे हैं - यज्ञ सेवाधारी। तो इस समय आप सभी यज्ञ सेवा का पार्ट बजाने वाले हो। यज्ञ सेवा का महत्व कितना बडा है - उसको अच्छी तरह से जानते हो? यज्ञ के एक-एक कणे का कितना महत्व है? एक-एक कणा मुहरों के समान है। अगर कोई एक कणें जितना भी सेवा करते हैं तो मुहरों के समान कमाई जमा हो जाती है। तो सेवा नहीं की लेकिन कमाई जमा की। सेवाधारियों को वर्तमान समय एक तो मधुबन वरदान भूमि में रहने का चांस का भाग्य मिला और दूसरा सदा श्रेष्ठ वातावरण उसका भाग्य और तीसरा सदा कमाई जमा करने का भाग्य। तो कितने प्रकार के भाग्य सेवाधारियों को स्वतः प्राप्त हो जाते हैं। इतने भाग्यवान

सेवाधारी आत्मायें समझकर सेवा करते हो? इतना रूहानी नशा स्मृति में रहता है या सेवा करते भूल जाते हो? सेवाधारी अपने श्रेष्ठ भाग्य द्वारा औरों को भी उमंग-उल्लास दिलाने के निमित्त बन सकते हैं। सभी सेवाधारी जितना भी समय, जिस भी सेवा में रहे - निर्विघ्न रहे! मन्सा में भी निर्विघ्न। किसी भी प्रकार का कभी भी विघ्न वा हलचल न आये इसको कहा जाता है 'सेवा में सफलतामूर्त'। चाहे कितना भी संस्कार वा परिस्थितियाँ नीचे-ऊपर हो लेकिन जो सदा बाप के साथ हैं, सदा फालो फादर हैं, सदा सी फादर हैं वह सदा निर्विघ्न रहेंगे और अगर कहाँ भी किसी आत्माओं को देखा, आत्माओं को फालो किया तो हलचल में आ जायेंगे। तो सेवाधारी के लिए सेवा में सफलता पाने का आधार - 'सी फादर वा फालो फादर'। तो सभी ने सच्ची दिल से सेवा की ना? सेवा करते याद का चार्ट कैसे रहा? अच्छा। अपना श्रेष्ठ भाग्य बना लिया। रिजल्ट अच्छी हैं। बडी भाग्यवान आत्मायें हो जो यज्ञ सेवा का चांस मिला है। तो ऐसा कर्तव्य करके जाओ - जो आपाक यादगार बन जायें और फिर कभी आवश्यक्ता पडे तो आपको ही बुलाया जाए। अथक होकर जो सेवा करते हैं उनका फल वर्तमान और भविष्य दोनों जमा हो जाता है। तो सभी ने अपना-अपना अच्छा पार्ट बजाया।

30/04/1982

परीक्षा में पास होने की विधि

आज बापदादा सभी की जीवन कहानी देख रहे थे। तो सदा चढती कला वाले कितने होंगे और कौन होंगे? अपने को तो जान सकते हो ना कि मैं किस लिस्ट में हूँ! उतरने की परिस्थितियाँ, परीक्षायें तो सबके सामने आती हैं, बिना परीक्षा के तो कोई भी पास नहीं हो सकता लेकिन - 1. परीक्षा में साक्षी और साथी की स्मृति स्वरूप द्वारा फुल पास होना वा पास होना वा मजबूरी से पास होना इसमें अन्तर हो जाता है। 2. बडी परीक्षा को छोटा समझना वा छोटी-सी बात को बडा समझना, इसमें अन्तर हो जाता है। 3. कोई छोटी-सी बात को ज्यादा सिमरण, वर्णन और वातावरण में फैलाए इससे भी छोटे को बडा कर देते हैं। और कोई फिर बडी बात को भी चेक किया और साथ-साथ चेन्ज किया और सदा के लिए कमजोर बात को फुल स्टॉप लगा देते हैं! फुल स्टॉप लगाना अर्थात् फिर से भविष्य के लिए फुल स्टॉक जमा करना। आगे के लिए फुल पास के अधिकारी बनना।

02/05/1982

संस्कारो के टक्कर से बचने की विधि

बाकी ब्राह्मण आत्माओं में जब हम शरीक होने के कारण ईर्ष्या उत्पन्न होती है, ईर्ष्या के कारण संस्कारों का टक्कर होता है लेकिन इसमें विशेष बात यह सोचो कि जो हम शरीक हैं

उसको निमित्त बनाने वाला कौन? उनको नहीं देखो- फलाना इस ड्युटी पर आ गया, फलानी टीचर हो गई, नम्बरवन सर्विसएबुल हो गई। लेकिन यह सोचो कि उस आत्मा को निमित्त बनाने वाला कौन? चाहे निमित्त बनी हुई विशेष आत्मा द्वारा ही उनको ड्यूटी मिलती है लेकिन निमित्त बनाने वाली टीचर को भी निमित्त किसने बनाया? इसमें जब बाप बीच में हो जायेगा तो माया भाग जायेगी। ईर्ष्या भाग जायेगी लेकिन जैसे कहावत है ना - या होगा बाप या होगा पाप। जब बाप को बीच से निकालते हो तब पाप आता है। ईर्ष्या भी पाप कर्म है ना। अगर समझो बाप ने निमित्त बनाया है तो बाप जो कार्य करते उसमें कल्याण ही है। अगर उसकी कोई ऐसी बात अच्छी न भी लगती है, रांग भी हो सकती है, क्योंकि सब पुरुषार्थी हैं। अगर रांग भी है तो अपनी शुभ भावना से ऊपर दे देना चाहिए। ईर्ष्या के वश नहीं। सोचो कि यह बात दी फिर क्या हुआ? कुछ हुआ नहीं। हुआ वा नहीं, यह जिम्मेवारी बडों की हो जाती है। आपने शुभ भावना से दी, आपका काम है आपने को खाली करना। अगर देखते हो बडों के ख्याल में बात नहीं आई तो भल दुबारा लिखो। लेकिन सेवा की भावना से। अगर निमित्त बने कहते हैं कि इस बात को छोड दो तो अपना संकल्प और समय व्यर्थ नहीं गँवाओ। ईर्ष्या नहीं करो। लेकिन किसका कार्य है, किसने निमित्त बनाया है, उसको याद करो। किस विशेषता के कारण उनको विशेष बनाया गया है वह विशेषता अपने में धारण करो तो रेस हो जायेगी न कि रीस। समझा।

09/01/1983

कुमारी जीवन अर्थात प्युअर जीवन

कुमारियों से - कुमारियाँ तो अपना भाग्य देख सदा हर्षित होती हैं। कुमारी लौकिक जीवन में भी ऊँची गाई जातीहै और ज्ञान में तो कुमारी है ही महान। लौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें और पारलौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें। ऐसे अपने को महान समझती हो? आप तो 'हाँ ' ऐसे कहो जो दुनिया सुने। कुमारियों को तो बापदादा अपने दिल की तिजोरी में रखता है कि किसी की भी नजर न लगे। ऐसे अमूल्य रतन हो। कुमारियाँ सदा पढाई और सेवा इसी में ही बिजी रहती हैं। कुमारी जीवन में बाप मिल गया और चाहिए ही क्या। अनेक सम्बन्धों में भटकना नहीं पडा, बच गई। एक में सर्व सम्बन्ध मिल गये। नहीं तो पता है कितने व्यर्थ के सम्बन्ध हो जाते, सासू का, ननंद का, भाभीयों का... सबसे बच गई ना। न जाल में फॅसी, न जाल से छुडाने का समय ही था। कुमारियाँ तो हैं ही डबल लाइट। कुमारियाँ सदा बाप समान सेवाधारी और बाप समान सर्व धारणाओं स्वरूप। कुमारी जीवन अर्थात् प्युअर जीवन। प्युअर आत्मायें श्रेष्ठ

आत्मायें हुई ना। तो बापदादा कुमारियों को महान पूज्य आत्मा के रूप में देखते हैं। पवित्र आत्मायें सर्व की और बाप की प्रिय हैं।

11/01/1983

सेवा करना अर्थात भाग्य का सितारा चमकाना

सेवाधारी का अर्थ ही है प्रत्यक्षफल खाने वाले। सेवा की और खुशी की अनुभूति की तो प्रत्यक्षफल खाया ना। सेवाधारी बनना यह तो बडे ते बडे भाग्य की निशानी है। जन्म-जन्म के लिए अपने को राज्य अधिकारी बनने का सहज साधन है। इसलिए सेवा करना अर्थात् भाग्य का सितारा चमकना। तो ऐसे समझते हुए सेवा कर रहे हो ना। सेवा लगती है या प्राप्ति लगती है? नाम सेवा है लेकिन यह सेवा करना नहीं है, मिलना है। कितना मिलता है? करते कुछ भी नहीं हो ओर मिलता सब कुछ है। करने में सब सुख के साधन मिलते हैं। कोई मुश्किल नहीं करना पडता है, कितना भी हार्ड वर्क हो लेकिन सैलवेशन भी साथ-साथ मिलती है तो वह हार्ड वर्क नहीं लगता खेल लगता है। इसलिए सेवाधारी बनना अर्थात् प्राप्तियों के मालिक बनना। सारे दिन में कितनी प्राप्ति करते हो? एक-एक दिन की, एक-एक घण्टे की प्राप्ति का अगर हिसाब लगाओ तो कितना अनगिनत है, इसलिए सेवाधारी बनना भाग्य की निशानी है। सेवा का चान्स मिला अर्थात् प्राप्तियों के भण्डार भरपूर हो गए। स्थूल प्राप्ति भी है और सूक्ष्म भी। कहीं भी कोई सेवा करो तो स्थूल साधन इतने नहीं मिलते जितने मधुबन में मिलते हैं। यहाँ सेवा के साथ-साथ पहले तो अपने आत्मा की, शरीर की पालना, डबल होती है। तो सेवा करते खुशी होती है या थकावट होती है? सेवा करते सदैव यह चेक करो कि डबल सेवा कर रहा हूँ। मंसा द्वारा वायुमण्डल श्रेष्ठ बनाने की और कर्म द्वारा स्थूल सेवा। तो एक सेवा नहीं करनी है। लेकिन एक ही समय पर डबल सेवाधारी बन करके अपना डबल कमाई का चांस लेना है।

सभी सन्तुष्ट हो? सभी अपने-अपने कार्य में अच्छी तरह से निर्विघ्न हो? कोई भी कार्य में कोई खिट-खिट तो नहीं है? कभी आपस में खिट-खिट तो नहीं करते हो। कभी तेरा-मेरा, मैंने किया-तुमने किया – यह भावना तो नहीं आती है? क्योंकि अगर किया और यह संकल्प में भी आया मैंने तो जो भी किया वह सारा खत्म हो गया। **मेरा-पन आना माना सारे किये हुए कार्य पर पानी डाल देना। ऐसे तो नहीं करते हो? सेवाधारी अर्थात् करावनहार बाप निमित्त बनाए करा रहे हैं। करावनहार को नहीं भूलें।** जहाँ निमित्त भाव होगा मैं-पन आया तो माया भी आई। निमित्त हूँ, निर्माण हूँ तो माया आ नहीं सकती। संकल्प या स्वप्न में भी

माया आती है तो सिद्ध होता कि कहाँ मैं-पन का दरवाजा खुला है। मैं-पन का दरवाजा बन्द रहे तो कभी भी माया आ नहीं सकती। अच्छा -(सेवाधारीयों से)

26/01/1983

दास सदा उदास ही रहता है

जैसे कमजोर शरीर वाले का चेहरा पीला हो जाता है क्योंकि वह खून की शक्ति नहीं ऐसे कमजोर आत्मा उदास बन जाती। ज्ञान भी सुनेगा, सेवा भी करेगा लेकिन उदास रूप में। खुशी की शक्ति, सर्व प्राप्तियों की शक्ति खत्म हो जाती है। दास सदा उदास ही रहेगा। दास आत्मा की और क्या हंसाने वाली बातें होती हैं? छोटी सी बातों में बोलते कनफ्यूज हो गये हैं, मूँझ गये हैं। जैसे आँखों की नजर कम हो जाती है ना तो एक चीज के बजाए दो-दो, तीन-तीन चीजें दिखाई देती हैं और उसी में कनफ्यूज हो जाते हैं कि यह सही है या वह सही है। ऐसे कमजोर आत्मायें एक रास्ते के बजाए दूसरे रास्ते भी देखते हैं। एक श्रीमत के साथ-साथ और मतें भी दिखाई देती है। फिर सोचते कि यह करें वा वह करें। यह यथार्थ है वा वह यथार्थ है! जब है ही एक रास्ता, एक श्रेष्ठ मत तो यह करें, क्या करें यह क्वेश्चन ही नहीं! कनफ्यूज क्यों नहीं होंगे, स्वयं ही दो बनाए दुविधा में आते हैं। तो यह विचित्र चाल देख बापदादा मुस्करा रहे थे। बापदादा कहते सीट पर स्थित रहो तो एकरस रहेंगे लेकिन चंचल बच्चे के समान बार-बार चक्कर लगाने के अभ्यासी फिर कहते माया का चक्र आ गया। कनफ्यूज होने का कोई आधार ही नहीं है। लेकिन व्यर्थ, कमजोर संकल्पों के आधार ले लेते हैं। जब है ही व्यर्थ और कमजोर आधार तो फिर रिजल्ट क्या होगी? या अटकेंगे या लटकेंगे या नीचे गिरेंगे। फिर चिल्लायेंगे - बाबा मैं आपका हूँ, आप शक्ति दे दो। सीट पर सेट रहो तो ज्ञान सूर्य के शक्तियों की किरणें, आपके सीट की छत्रछाया स्वतः ही, सदा ही प्राप्त है। सीट से नीचे उतर व्यर्थ वा कमजोरी के संकल्पों की दीवार खडी कर देते। व्यर्थ संकल्प एक नहीं आता। एक सेकण्ड में एक से अनेक संकल्प पैदा हो जाते और उसीसे अनेक ईटों की दीवार बन जाती है। इसलिए ज्ञान सूर्य के शक्तियों की किरणें पहुँच नहीं सकती। और फिर कहते मदद नहीं मिलती, शक्ति नहीं आती। खुशी नहीं आती वा याद रहती नहीं। आ ही कैसे सकती! तो बापदादा, पुराने-नये जो ऐसा खेल करते हैं उन्हों का खेल देख मुस्करा रहे थे। सेकेण्ड की बात को इतना मुश्किल क्यों बना दिया है। एक रास्ता, एक मत उसको छोड - मनमत, परमत उसको मिक्स क्यों करते हो! अपनी कमजोरी के बनाये हुए रास्ते, ऐसे तो होता ही है, ऐसा तो चलता ही है - इन रास्तों को स्वयं ही बनाए फिर स्वयं ही भूल-भुलैया के खेल में आ जाते हैं। मंजिल से दूर हो जाते हैं। ऐसे करते क्यों हैं? यह सोच रहे हो, हो जाता है, करते नहीं लेकिन हो जाता है। होता भी क्यों हैं? बीमारी

क्यों आती हैं? बदपरहेज वा कमजोरी से। वा यह कहेंगे कि बीमारी आ जाती है? न कमजोर बनो, न मर्यादाओं की परहेज से वा मर्यादाओं की लकीर से बहार आओ। अभी तक यही खेल करने है? विश्व कल्याण के ठेकेदार इतने बडे आक्यूपेशन वाले और यह बच्चों के खेल खेलते, यह कब तक? विश्व आपका इन्तजार कर रहा है कि शान्ति के दूत आये कि आये। हमारे देव हमारे ऊपर शान्ति की आशीर्वाद वा कृपा करने के लिए आये कि आये। जोर-जोर से चिल्ला के घण्टियाँ बजाते। कभी तो चिमटे भी बजाते हैं, नगाडे भी बजाते हैं। आओ, आओ करके पुकारते हैं। ऐसी देव आत्मायें अगर अपने बचपन के खेल में रहेंगी तो उन्हों की पुकार सुनेगी कैसे! इसलिए पुकार सुनो और उपकार करो। समझा, क्या करना है। अच्छा बाप भी समय का ख्याल रखता, आप लोग नहीं रखते।

04/05/1983

श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना रखना - यह सबसे बडा पुण्य है

आप सभी सबसे बडे ते बडे कुल, श्रेष्ठ कुल के हो। तो श्रेष्ठ कुल वाली ब्राह्मण आत्मायें अर्थात् सर्व खजानों से संपन्न आत्मायें, उन्हों का लक्ष्य भी क्या है? सदा महादानी बनो। सदा पुण्य आत्मा बनो। कभी भी संकल्प में भी किसी विकार के वश कोई संकल्प भी किया तो उसको क्या कहा जायेगा? पाप वा पुण्य? पाप कहेंगे ना। स्वयं के प्रति भी सदा पुण्यकर्ता बनो। संकल्प में भी पुण्य आत्मा, बोल में भी पुण्य आत्मा और कर्म में भी पुण्य आत्मा। तो सदा यह स्मृति में रखो कि हम सर्व ब्राह्मण आत्मायें सदा की पुण्य आत्मायें हैं। **किसी भी आत्मा के प्रति सदा श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना रखना- यह सबसे बडा पुण्य है।** चाहे कैसी भी आत्मा हो, विरोधी आत्मा हो वा स्नेही आत्मा हो लेकिन पुण्य आत्मा का पुण्य ही है - जो विरोधी आत्मा को भी श्रेष्ठ भावना के पुण्य की पूँजी से उस आत्मा को भी परिवर्तन करे। पुण्य कहा ही जाता है, जिस आत्मा को जिस वस्तु की अप्राप्ति हो उसको प्राप्त कराने का कार्य करना - यह पुण्य है। जब कोई विरोधी आत्मा आपके सामने आती है तो पुण्य आत्मा, सदा उस आत्मा को सहनशक्ति से वंचित आत्मा है - उसी नजर से देखेंगे। और अपने पुण्य की पूँजी द्वारा शुभ भावना द्वारा श्रेष्ठ संकल्प द्वारा उस आत्मा को सहनशक्ति की प्राप्ति के सहयोगी आत्मा बनेंगे। उसके लिए यही पुण्य का कार्य हो जाता है। पुण्य आत्मा सदा स्वयं को दाता के बच्चे देने वाला समझते हैं। किसी भी आत्मा द्वारा अल्पकाल की प्राप्ति के लेने की कामना से परे रहते हैं। यह आत्मा कुछ देवे तो मैं दूँ, वा यह भी कुछ करे तो मैं भी करूँ, ऐसी हद की कामना नहीं रखते। दाता के बच्चे बन सबके प्रति स्नेह, सहयोग, शक्ति देने वाले पुण्य आत्मा होंगे। पुण्य आत्मा

कभी भी अपने पुण्य के बदले प्रशंसा लेने की कामना नहीं रखते। क्योंकि पुण्य आत्मा जानते हैं कि यह हद की प्रशंसा को स्वीकार करना सदाकाल की प्राप्ति से वंचित होना है।

15/05/1983

खुशी

प्रश्नः- सबसे बडा खजाना कौनसा है? जिससे ही ज्ञान और योग की परख होती है?
उत्तरः- सबसे बडा खजाना है - 'खुशी'। चाहे कितना भी ज्ञान हो, योग हो लेकिन खुशी की प्राप्ति नहीं तो ज्ञान ठीक नहीं। कोई भी परिस्थिति आ जाए तो खुशी गायब नहीं हो सकती। अविनाशी बाप का अविनाशी खजाना मिला है इसलिए खुशी कभी गायब नहीं हो सकती। योग लगाते लेकिन खुशी नहीं तो योग ठीक नहीं। आपकी खुशी देख दूसरे आपसे पूछें कि आपको क्या मिला है! यही ज्ञान और योग की प्रत्यक्षता का साधन है।

03/12/1983

भाग्य के आगे त्याग कौडी का है

कभी-कभी बाप के आगे कई लाडले ही कहें, लाड प्यार दिखाते हैं कि हमने इतना त्याग किया, इतना छोडा फिर भी ऐसे क्यों? बापदादा मुस्कराते हुए बच्चों को पूछते हैं कि छोडा क्या और पाया क्या? इसकी लिस्ट निकालो। कौनसा तरफ भारी है - छोडने का वा पाने का? आज नहीं तो कल तो छोडना ही है, मजबूरी से भी छोडना ही पडेगा, अगर पहले से ही समझदार बन, प्राप्त कर फिर छोडा तो वह छोडना हुआ क्या! भाग्य के वर्णन के आगे त्याग कौडी है। भाग्य हीरा है। ऐसे समझते हो ना! वा बहुत त्याग किया है? बहुत छोडा है? छोडने वाले हो या लेने वाले हो? कभी भी स्वप्न में भी ऐसा संकल्प किया तो क्या होगा? अपने भाग्य की रेखा, मैंने किया, मैंने छोडा, इससे लकीर को मिटाने के निमित्त बन जाते। इसलिए स्वप्न में भी कभी ऐसा संकल्प नहीं करना।

19/12/1983

डबल लाइट

बापदादा जानते हैं कि राज्य-भाग्य गँवाने के बाद बच्चे अनेक जन्म भिन्न-भिन्न प्रकार की तन की, मन की, धन की मेहनत ही करते रहे हैं! कहाँ विश्व के मालिक ताज, तख्तधारी, सर्व प्राप्तियों के भण्डार के मालिक! प्रकृति भी दासी! ऐसे राज्य अधिकारी, राज्य-भाग्य करने वाले, अब अधीन बनने से क्या कर रहे हैं! नौकरी कर रहे हैं! तो मेहनत हुई ना। कहाँ राजे और कहाँ कमाई करके खाने वाले गवर्मेन्ट के सर्वेन्ट हो गये। कितने जन्म शरीर को चलाने के लिए,

शरीर निर्वाह का कर्म, मन को बाप से लगाने के लिए भिन्न-भिन्न जन्मों में भिन्न-भिन्न कार्य किये। ऐसे ताज-तख्तधारी सुख-चैन से पलने वाले को क्या-क्या करना पडा। तो बच्चों की मेहनत को देख बापदादा ने मेहनत से छुडाए सहज योगी बना दिया है। सेकण्ड में स्वराज्य अधिकारी बनाया ना। मेहनत से छुडाया ना। यह सब सोचते हैं कि नौकरी से तो छुडाया। लेकिन अभी कुछ भी करते हो अपने लिए नहीं करते हो। ईश्वरीय सेवा के प्रति करते हो। अभी मेरा काम समझकर नहीं करते हो। ट्रस्टी बन करके करते हो। इसलिए मेहनत मुहब्बत में बदल गई। बाप की मुहब्बत में, सेवा की मुहब्बत में, मिलन मनाने की मुहब्बत में - मेहनत नहीं लगती।

दूसरी बात, करावनहार बाप है। निमित्त करने वाले आप हो। सर्वशक्तिवान बाप की शक्ति से अर्थात् स्मृति के कनेक्शन से अभी निमित्त मात्र कार्य करने वाले हो। जैसे लाइट के कनेक्शन से बडी-बडी मशीनरी चलती है। तो आधार है लाइट। आप सभी हर कर्म करते कनेक्शन के आधार से स्वयं भी डबल लाइट बन चलते रहते हो ना। जहाँ डबल लाइट की स्थिति है वहाँ मेहनत और मुश्किल शब्द समाप्त हो जाता है। नौकरी से नहीं छुडाया लेकिन मेहनत से छुडाया ना। भावना और भाव बदल गया ना। ट्रस्टीपन का भाव और ईश्वरीय सेवा की भावना, तो बदल गयी ना। अभी अपना-पन है? तीन पैर पृथ्वी तो मिली है वह भी बाबा का घर कहते हो ना। मेरे घर तो नहीं कहते हो ना। अपने घर में नहीं रहते। बाप के घर में रहते हो। बाप के डायरेक्शन से कार्य करते हो। अपनी इच्छा से, अपनी आवश्यकताओं के कारण नहीं करते। जो डायरेक्शन बापका, उसमें निश्चिंत और न्यारे होकर करते जो मिला बाप का है वा सेवा अर्थ है। भले शरीर प्रति भी लगाते हो लेकिन शरीर भी अपना नहीं है। वह भी बाप को दे दिया ना। तन-मन-धन सब बाप को दे दिया है ना वा कुछ रखा है किनारे करके, ऐसे तो नहीं हो ना। तो बापदादा ने बच्चों की जन्म-जन्म की मेहनत देख अब से अनेक जन्मों तक मेहनत से छुडा दिया। यही निशानी है बाप और बच्चों के मुहब्बत की।

23/12/1983

जैसा संकल्प वैसी सृष्टि

बाप का बच्चा बनना अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी बनना। ऐसे स्वदर्शन चक्रधारी ही विश्व कल्याणकारी हैं। क्योंकि विघ्न-विनाशक हैं। विघ्न विनाशक गणेश को कहते हैं। गणेश की कितनी पूजा होती है! कितना प्यार से पूजा करते हैं, कितना सजाते हैं, कितना खर्चा करते हैं, ऐसी विघ्न विनाशक आत्मायें कौन हैं? सदा स्मृति में रहे कि हम विघ्न-विनाशक हैं, यह संकल्प ही विघ्न को समाप्त कर देता है क्योंकि संकल्प ही स्वरूप बनाता है। विघ्न हैं, विघ्न हैं, कहने

से विघ्न स्वरूप बन जाते, कमजोर है तो उसके पीछे अनेक कमजोर संकल्प पैदा हो जाते हैं। **एक क्यों और क्या का संकल्प, अनेक क्यों-क्या में ले आता है।** समर्थ संकल्प उत्पन्न हुआ - मैं महावीर हूँ, मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, तो सृष्टि भी श्रेष्ठ होती है। तो **'जैसा संकल्प वैसी सृष्टि'। यह सारी संकल्प की बाजी है। अगर खुशी का संकल्प रचो तो उसी समय खुशी का वातावरण अनुभव होगा। दुःख का संकल्प रचो तो खुशी के वातावरण में भी दुःख का वातावरण लगेगा। खुशी का अनुभव नहीं होगा। तो वातावरण बनाना, सृष्टि रचना अपने हाथ में है, दृढ संकल्प रखे तो विघ्न छू-मंत्र हो जायेंगे।** अगर सोचते - पता नहीं होगा या नहीं होगा तो मंत्र काम नहीं करता। जैसे कोई डाक्टर के पास जाते हैं तो डाक्टर भी पहले यही पूछते हैं कि तुम्हारा मेरे में फेथ है? कितनी भी बढिया दवाई हो लेकिन अगर फेथ नहीं तो उस दवाई का असर नहीं हो सकता। यह विनाशी बात है, यहाँ है अविनाशी बात। तो सदा विघ्न-विनाशक आत्मायें हैं, पूज्य आत्मायें हैं। आपकी अभी भी किस रूप में पूजा हो रही है? यह लास्ट का विकारी जन्म होने के कारण इस रूप का यादगार नहीं रखते हैं लेकिन किस न किस रूप में आपका यादगार है। तो सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान्, विघ्न विनाशक शिव के बच्चे 'गणेश' समझकर चलो। अपना ही संकल्प रचते हो कि - 'पता नहीं, पता नहीं', तो इस कमजोर संकल्प के कारण ही फँस जाते। तो सदा खुशी में झूलने वाले सर्व के विघ्न हर्ता बनो। सर्व के मुश्किल को सहज करने वाले बनो। इसके लिए बस सिर्फ 'दृढ संकल्प और डबल लाइट बनो'। मेरा कुछ नहीं, सब कुछ बाप का है। जब बोझ अपने ऊपर रखते हो तब सब प्रकार के विघ्न आते हैं। मेरा नहीं तो - निर्विघ्न। मेरा है तो विघ्नों का जाल है। तो जाल को खत्म करने वाले विघ्न-विनाशक। बाप का भी यही कार्य है। जो बाप का कार्य वह बच्चों का कार्य। कोई भी कार्य खुशी से करते हो तो उस समय विघ्न नहीं होता। तो खुशी-खुशी कार्य में बिजी रहो। बिजी रहेंगे तो माया नहीं आयेगी। अच्छा। (पार्टीयों से)

29/12/1983

मैं ही था, मैं ही हूँ और कल्प-कल्प मैं ही बनुँगा

जो भी हो, जैसे भी हो लेकिन बापदादा को पसंद हो, इसलिए सदा अपने को समझो कि हम बाप के है और सदा बाप के ही रहेंगे। यह द्रढ संकल्प ही सदा आगे बढाता रहेगा। ज्यादा कमजोरीयों को सोचो नहीं। कमजोरीयों को सोचते-सोचते और भी कमजोर हो जाते हैं। मैं बीमार हूँ..., मैं बीमार हूँ... कहने से डबल बीमार हो जाते हो। मैं इतनी शक्तिशाली नहीं, मेरा योग इतना अच्छा नहीं, मेरी सेवा इतनी अच्छी नहीं, मैं बाबा की प्यारी हूँ वा नहीं, पता नहीं आगे चल सकूँगी वा नहीं यह सोच भी ज्यादा कमजोर बनाता है। पहले माया हल्के रूप में ट्रायल

करती है और आप उसको बडा रूप कर देते हो। तो माया को चांस मिल जाता है। अपना साथी बनाने का, वह सिर्फ ट्रायल करती है लेकिन उसकी ट्रायल को न जानकर आप समझते हो कि मैं हूँ ही ऐसी। इसलिए वह भी साथी बन जाती है। ऐसे कमजोरों की साथी माया है। इसलिए **कभी भी कमजोर संकल्पों को बार-बार न वर्णन करो, न सोचो। बार-बार सोचने से स्वरूप बन जाते हैं।** सदा यह सोचो कि मैं बाबा का नहीं बनुँगा तो और कौन बनेगा। मैं ही था, मैं ही हूँ और कल्प-कल्प मैं ही बनुँगा। यह संकल्प तंदुरस्त मायाजीत बना देगा। कमजोरी पीछे आती है, पहले माया का मोहिनी रूप व्यर्थ संकल्प के रूप में (हल्के रूप में) आता है। आप उस मोहिनी रूप को न पहचान सत्य समझ लेते हो तो माया आपको अपना बना देती है। जैसे सीता का ड्रामा दिखाते हो न? भीखारी था नहीं लेकिन भीखारी समझ लिया। वह तो सिर्फ ट्रायल करने आया और उसे सच समझ लिया। तो ऐसा सत्य समझ लेने से सीता के भोलेपन को देख रावण ने उसको अपना बना लिया। ऐसे व्यर्थ वा कमजोर संकल्प माया का रूप बन ट्रायल करने के लिए आते हैं लेकिन आप उसको सच समझ लेते हो अर्थात आप भोले बन जाते हो तो माया आपको अपना बना लेती है। 'मैं हूँ ही ऐसी' ऐसे करते-करते माया अपना स्थान बना लेती है। ऐसे आप कमजोर हो नहीं, समर्थ हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो, बापदादा के चुने हुए कोटो में से कोई हो तो ऐसे कमजोर कैसे हो सकते हो? यह सोचना ही माया को स्थान देना है। स्थान देकर फिर कहते है अब निकालो तो स्थान देते ही क्यूँ हो? कोई कमजोर नहीं सब मास्टर्स हो। सदा बाहादुर, सदा के महावीर हो यही श्रेष्ठ संकल्प रखो कि सदा बाप के साथी है। जहाँ बाप के साथी है वहाँ माया अपना साथी बना नहीं सकती।

12/01/1984

सफल होने का स्लोगन है - 'रिगार्ड देना, रिगार्ड लेना'

बापदादा सदैव एक स्लोगन सभी बच्चों को कार्य में लाने लिए याद दिलाते रहते। एक है अपनी स्व-स्थिति में रहना। दूसरा है कारोबार में आना। **स्व स्थिति में तो सभी बडे हो, कोई छोटा नहीं। कारोबार में निमित्त बनना ही पडता है। इसलिए कारोबार में सदा सफल होने का स्लोगन है - 'रिगार्ड देना, रिगार्ड लेना'। दूसरे को रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। देने में लेना भरा हुआ हे। रिगार्ड कभी प्रयत्न करने वा माँगने से नहीं मिलता है। रिगार्ड दो और रिगार्ड मिलेगा। रिगार्ड लेने का साधन ही है - रिगार्ड देना। आप रिगार्ड दो और आपको नहीं मिले यह हो नहीं सकता।** लेकिन दिल से दो। मतलब से नहीं। जो दिल से रिगार्ड देता है उसको दिल से रिगार्ड मिलता है। मतलब का रिगार्ड देंगे तो मिलेगा भी मतलब का। सदैव दिल से दो और दिल से लो। इस स्लोगन द्वारा सदा ही निर्विघ्न,

निरसंकल्प, निश्चिंत रहेंगे। मेरा क्या होगा यह चिंता नहीं रहेगी। हुआ ही पडा है। बना ही पडा है। निश्चिंत रहेंगे। और ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठ प्रालब्ध वर्तमान और भविष्य निश्चित ही है। कोई इसको बदल नहीं सकता। कोई किसकी सीट ले नहीं सकता। निश्चित है। निश्चिंत की निश्चित है। इसको कहा जाता है - बाप समान फालो फादर करने वाले। समझा।

22/02/1984

भगवान को भोलापन प्यारा है

आज भोलेनाथ बाप अपने भोले बच्चों से बच्चों का सो बाप का सो बच्चों का अवतरण दिवस अर्थात् अलौकिक रूहानी जयन्ती मनाने आये हैं। भोलेनाथ बाप को सबसे प्रिय भोले बच्चे हैं। भोले अर्थात् जो सदा सरल स्वभाव, शुभ भाव और स्वच्छता सम्पन्न और सफाई, ऐसे भोले बच्चे भोलानाथ बाप को भी अपने ऊपर आकर्षित करते हैं। भोलानाथ बाप ऐसे सरल स्वभाव भोले बच्चों के गुणों की माला सदा ही सिमरण करते रहते हैं। आप सभी ने अनेक जन्मों में बाप के नाम की माला सिमरण की और बाप अभी संगमयुग पर बच्चों को रिटर्न दे रहे हैं। बच्चों की गुण माला सिमरण करते हैं। कितने भोले बच्चे भोलानाथ को प्यारे हैं। जितना ज्ञान स्वरूप, नालेजफुल, पावरफुल उतना ही भोलापन। भगवान को भोलापन प्यारा है। ऐसे अपने श्रेष्ठ भाग्य को जानते हो ना। जो भगवान को मोह लिया। अपना बना दिया।

28/02/1984

सेवा का भाग्य मिलना यह बहुत बडे भाग्य की निशानी है

सेवाधारियों से :- यज्ञ सेवा का भाग्य मिलना यह भी बहुत बडे भाग्य की निशानी है। चाहे भाषण नहीं करो, कोर्स नहीं कराओ लेकिन सेवा की मार्क्स तो मिलेंगी ना। इसमें भी पास हो जायेंगे। हर सब्जेक्ट की अपनी-अपनी मार्क्स है। ऐसे नहीं समझो कि हम भाषण नहीं कर सकते तो पीछे हैं! **सेवाधारी सदा ही वर्तमान और भविष्य फल के अधिकारी हैं।** खुशी तो होती है ना! माताओं को मन का नाचना आता है। और कुछ भी नहीं करो, सिर्फ खुशी में मन से नाचती रहो तो भी बहुत सेवा हो जायेगी। अच्छा - ओम शान्ति।

01/03/1984

मुरली का एक-एक महावाक्य समर्थ संकल्प है

सारी विश्व जिस बाप को एक सेकण्ड की झलक देखने की चात्रक है, उस बाप के सेकण्ड में अधिकारी बनने वाले हम श्रेष्ठ आत्मायें हैं। यह स्मृति में रहता है? यह स्मृति स्वतः ही समर्थ बनाती है। ऐसी समर्थ आत्मायें बने हो? समर्थ अर्थात् व्यर्थ को समाप्त करने वाले।

व्यर्थ है तो समर्थ नहीं। अगर मंसा में व्यर्थ संकल्प है तो समर्थ संकल्प ठहर नहीं सकते। व्यर्थ बार-बार नीचे ले आता है। समर्थ संकल्प बाप के मिलन का भी अनुभव कराता। मायाजीत भी बनाता। सफलता स्वरूप सेवाधारी भी बनाता। व्यर्थ संकल्प सदा उत्साह उमंग को समाप्त करता है। वह सदा क्यों, क्या की उलझन में रहता। इसलिए छोटी-छोटी बातों में स्वयं से दिलशिकस्त रहता। व्यर्थ संकल्प सदा सर्व प्राप्तियों के खजाने को अनुभव करने से वंचित कर देता। व्यर्थ संकल्प वाले के मन की चाहना वा मन की इच्छायें बहुत ऊँची होती हैं। यह करूँगा, यह करूँ, यह प्लैन बहुत तेजी से बनाते अर्थात् तीव्रगति से बनाते हैं। क्योंकि व्यर्थ संकल्पों की गति फास्ट होती है। इसलिए बहुत ऊँची-ऊँची बातें सोचते हैं, लेकिन समर्थ न होने के कारण प्लैन और प्रैक्टिकल में महान अन्तर हो जाता है। इसलिए दिलशिकस्त हो जाते हैं। समर्थ संकल्प वाले सदा जो सोचेंगे वह करेंगे। सोचना और करना दोनों समान होगा। सदा धैर्यवत् गति से संकल्प और कर्म में सफल होंगे। व्यर्थ संकल्प तेज तूफान की तरह हलचल में लाता है। समर्थ संकल्प सदा बहार के समान हरा-भरा बना देता है। व्यर्थ संकल्प एनर्जी अर्थात् आत्मिक शक्ति और समय गंवाने के निमित्त बनाता है। समर्थ संकल्प सदा आत्मिक शक्ति अर्थात् एनर्जी जमा करता हे। समय सफल करता है। व्यर्थ संकल्प रचना होते हुए भी, व्यर्थ रचना, आत्मा रचता को भी परेशान करती है। अर्थात् मास्टर सर्व शक्तिवान समर्थ आत्मा की शान से परे कर देती है। समर्थ संकल्प से सदा श्रेष्ठ शान के स्मृति स्वरूप रहते हैं। इस अन्तर को समझते भी हो फिर भी कई बच्चे व्यर्थ संकल्पों की शिकायत अभी भी करते हैं। अब तक भी व्यर्थ संकल्प क्यों चलता, इसका कारण? जो बापदादा ने समर्थ संकल्पों का खजाना दिया है - वह है ज्ञान की मुरली। मुरली का एक-एक महावाक्य समर्थ खजाना है। इस समर्थ संकल्प के खजाने का महत्व कम होने के कारण समर्थ संकल्प धारण नहीं होता तो व्यर्थ को चांस मिल जाता है। **हर समय एक-एक महावाक्य मनन करते रहें तो समर्थ बुद्धि में व्यर्थ आ नहीं सकता है।** खाली बुद्धि रह जाती है, इसलिए खाली स्थान होने के कारण व्यर्थ आ जाता है। जब मार्जिन ही नहीं होगी तो व्यर्थ आ कैसे सकता? समर्थ संकल्पों से बुद्धि को बिजी रखने का साधन नहीं आना अर्थात् व्यर्थ संकल्पों का आह्वान करना।

17/12/1984

स्वयं को मोल्ड करना अर्थात रीयल गोल्ड बनना

सेवा में भी अभिमान और अपमान का अलाए मिक्स न हो। इसको कहा जाता है गोल्डन एजड सेवा। स्वभाव में भी ईर्ष्या, सिद्ध और जिद्द का भाव न हो। यह है अलाए। इस अलाए को समाप्त कर गोल्डन एजड स्वभाव वाले बनो। संस्कार में सदा हाँ जी। जैसा समय, जैसी सेवा

वैसे स्वयं को मोल्ड करना है अर्थात् रीयल गोल्ड बनना है। मुझे मोल्ड होना है। दूसरा करे तो मैं करूँ, यह जिद्द हो जाती है। यह रीयल गोल्ड नहीं! यह अलाए समाप्त कर गोल्डन एजड बनो। सम्बन्ध में सदा हर आत्मा के प्रति शुभभावना, कल्याण की भावना हो। स्नेह की भावना हो, सहयोग की भावना हो। कैसे भी भाव स्वभाव वाला हो लेकिन आपका सदा श्रेष्ठ भाव हो। इन सब बातों में स्व-परिवर्तन ही गोल्डन जुबली मनाना है। अलाए को जलाना अर्थात् गोल्डन जुबली मनाना। समझा।

06/01/1986

सच्ची सेवा

कोई भी कर्म करो चाहे कितनी भी बडी सेवा का काम हो लेकिन जो सेवा आन्तरिक खुशी, रुहानी मौज, बेहद की प्राप्ति से नीचे ले आती है अर्थात् हद में ले आती है, खुशी से वंचित कर देती है, ऐसी सेवा को छोड दो लेकिन खुशी को नहीं छोडो। सच्ची सेवा सदा बेहद की स्थिति का, बेहद की खुशी का अनुभव कराती है। अगर ऐसी अनुभूति नहीं है तो वह मिक्स सेवा है। सच्ची सेवा नहीं है। यह लक्ष्य सदैव रखो कि सेवा द्वारा स्व-उन्नति, स्व प्राप्ति, सन्तुष्टता और महानता की अनुभूति हुई? जहाँ सन्तुष्टता की महानता होगी वहाँ अविनाशी प्राप्ति की अनुभूति होगी। सेवा अर्थात् फूलों के बगीचे को हरा-भरा करना। सेवा अर्थात् फूलों के बगीचे का अनुभव करना, न कि कांटों के जंगल में फँसना। उलझन, अप्राप्ति, मन की मूंझ और मौज, अभी-अभी मूंज - यह है कांटे। इन कांटों से किनारा करना अर्थात् बेहद की खुशी का अनुभव करना है। कुछ भी हो जाए - हद की प्राप्ति का त्याग भी करना पडे, कई बातों को छोडना भी पडे, बातों को छोडो लेकिन खुशी को नहीं छोडो। **जिस लिये आये हो उस लक्ष्य से किनारे न हो जाओ। यह सूक्ष्म चेकिंग करो।** खुश तो हैं लेकिन अल्पकाल की प्राप्ति के आधार से खुश रहना इसी को ही खुशी तो नहीं समझते? कहाँ साइडसीन को ही मंजिल तो नहीं समझ रहे हो? क्योंकि साइडसीन भी आकर्षण करने वाले होते हैं। लेकिन मंजिल को पाना अर्थात् बेहद के राज्य अधिकारी बनना। मंजिल से किनारा करने वाले विश्व के राज्य अधिकारी नहीं बन सकते। रॉयल फैमिली में भी नहीं आ सकते। इसलिए लक्ष्य को, मंजिल को सदा स्मृति में रखो। अपने से पूछो। चलते-चलते कहाँ कोई हद की गली में तो नहीं पहुँच रहे हैं! अल्पकाल की प्राप्ति की खुशी, सदाकाल की खुशनसीबी से किनारा तो नहीं करा रही है? थोडे में खुश होने वाले तो नहीं हो? अपने आप को खुश तो नहीं कर रहे हो? जैसी हूँ, वैसी हूँ, ठीक हूँ, खुश हूँ। अविनाशी खुशी की निशानी है - उनको औरों से भी सदा खुशी की दुआयें अवश्य प्राप्त होंगी। बापदादा और निमित्त बडों के स्नेह की दुआयें अन्दर अलौकिक आत्मिक खुशी के

सागर में लहराने का अनुभव करायेंगी। अलबेलापन में यह नहीं सोचना कि मैं तो ठीक हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं जानते। क्या सूर्य की रोशनी छिप सकती है? सत्यता की खुश्बू कभी मिट नहीं सकती। छिप नहीं सकती। इसलिए धोखा कभी नहीं खाना। यह पाठ पक्का करना। पहले अपनी बेहद की अविनाशी खुशी फिर दूसरी बातें। बेहद की खुशी सेवा की वा सर्व के स्नेह की, सर्व द्वारा अविनाशी सम्मान प्राप्त होने की खुशनसीबी अर्थात् श्रेष्ठ भाग्य स्वतः ही अनुभूति करायेगी। जो सदा खुश है वह खुशनसीब है। बिना मेहनत, बिना इच्छा अथवा बिना कहने के सर्व प्राप्ति सहज होंगी। यह पाठ पक्का किया?

बापदादा देखते हैं - आये किसलिए हैं, जाना कहाँ है और जा कहाँ रहे हैं। हद को छोड फिर भी हद में ही जाना तो बेहद का अनुभव कब करेंगे! बापदादा को भी बच्चों पर स्नेह होता है। रहम तो नहीं कहेंगे क्योंकि भिखारी थोडे ही हो। दाता, विधाता के बच्चे हो, दुखियों पर रहम किया जाता है। आप तो सुख स्वरूप सुख दाता के बच्चे हो। अब समझा क्या करना है? बापदादा इस वर्ष के लिए बार-बार भिन्न-भिन्न बातों में अटेन्शन दिला रहे हैं। इस वर्ष विशेष स्व पर अटेन्शन रखने का समय दिया जा रहा है। दुनिया वाले तो सिर्फ कहते हैं कि खाओ, पियो, मौज करो। लेकिन बापदादा कहते हैं - खाओ और खिलाओ। मौज में रहो और मौज में लाओ। अच्छा -

13/01/1986

स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो

इतना सारा प्रकृति परिवर्तन का कार्य, तमोगुणी संस्कार वाली इतनी आत्माओं का विनाश किसी भी विधि से होगा लेकिन अचानक के मृत्यु, अकाले मृत्यु, समूह रूप में मृत्यु, उन आत्माओं के वायब्रेशन कितने कितने तमोगुणी होंगे, उसको परिवर्तन करना और स्वयं को भी ऐसे खूनी नाहक वायुमण्डल के वायब्रेशन से सेफ रखना और उन आत्माओं को सहयोग देना - क्या इस विशाल कार्य के लिए तैयारी कर रहे हो? वह पूछ रहे थे। आज बापदादा उन्हों का संदेश सुना रहे हैं। इतना बेहद का कार्य करने के निमित्त कौन हैं? जब आदि में निमित्त बने हो तो अंत में भी परिवर्तन के बेहद के कार्य में निमित्त बनना है ना। वैसे भी कहावत है - जिसने अंत किया उसने सबकुछ किया। गर्भ महल भी तैयार करने हैं। तब तो नई रचना का, योगबल का आरम्भ होगा। योगबल के लिए मन्सा शक्ति की आवश्यकता है। अपनी सेफ्टी के लिए भी मन्सा शक्ति साधन बनेगी। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। नहीं तो साकार सहयोग समय पर सरकमस्टांस प्रमाण न भी प्राप्त हो सकता है। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर नहीं होगी तो अपनी

कमजोरियाँ पश्चाताप के रूप में भूतों के मिसल अनुभव होंगी। क्योंकि स्मृति में कमजोरी आने से भय - भूत की तरह अनुभव होगा। अभी भले कैसे भी चला लेते हो लेकिन अंत में भय अनुभव होगा। इसलिए अभी से बेहद की सेवा के लिए, स्वयं सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो, तब ही अंत सुहाना और बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद के विश्व राज्य अधिकारी बनेंगे। अभी आपके साथी, आपके सहयोग का इन्तजार कर रहे हैं। कार्य चाहे अलग-अलग है लेकिन परिवर्तन के निमित्त दोनों ही हैं। वही अपनी रिजल्ट सुना रहे थे।

18/01/1986

याद और सेवा का बैलेन्स है तो सेवा उन्नति का अनुभव करायेगी

सेवा वर्तमान और भविष्य दोनों को ही श्रेष्ठ बनाती है। सेवा का बल कम नहीं है। याद और सेवा दोनों का बैलन्स चाहिए। तो सेवा उन्नति का अनुभव करायेगी। याद में सेवा करना नैचुरल हो। ब्राह्मण जीवन की नेचर क्या है? याद में रहना। ब्राह्मण जन्म लेना अर्थात् याद का बंधन बांधना। जैसे वह ब्राह्मण जीवन में कोई न कोई निशानी रखते हैं - तो इस ब्राह्मण जीवन की निशानी है - याद। याद में रहना नैचुरल हो। इसलिए याद अलग की, सेवा अलग की, नहीं। दोनों इकट्ठे हों। इतना टाइम कहाँ है जो याद अलग करो, सेवा अलग करो। इसलिए याद और सेवा सदा साथ है ही। इसी में ही अनुभव भी बनते हैं, सफलता भी प्राप्त करते हैं। अच्छा।-

18/01/1986

गुप्त सेवा का महत्व

बापदादा के पास सभी सेवाधारियों का पूरा रिकार्ड है। सेवा करते चलो, नाम हो यह संकल्प नहीं करो। जमा हो यह सोचो। अविनाशी फल के अधिकारी बनो। अविनाशी वर्से के लिए आये हो। सेवा का फल विनाशी समय के लिए खाया तो अविनाशी वर्से का अधिकार कम हो जायेगा। इसलिए सदा विनाशी कामनाओं से मुक्त निष्काम सेवाधारी, राइट हैण्ड बन सेवा में बढते चलो। **गुप्त सेवा का महत्त्व ज्यादा होता है। वह आत्मा सदा स्वयं में भरपूर होगी। बेपरवाह बादशाह होगी।** नाम-शान की परवाह नहीं। इसमें ही बेपरवाह बादशाह होंगे अर्थात् सदा स्वमान के अधिकारी होंगे। हद के मान के तख्तनशीन नहीं। स्वमान के तख्तनशीन, अविनाशी तख्तनशीन। अटल अखण्ड प्राप्ति के तख्तनशीन। इसको कहते हो - विश्व-कल्याणकारी सेवाधारी। कभी साधारण संकल्पों के कारण विश्व-सेवा के कार्य में सफलता

प्राप्त करने में पीछे नहीं हटना। त्याग और तपस्या से सदा सफलता को प्राप्त कर आगे बढते रहना। समझा।

22/02/1986

बापदादा का आटोमेटिक एकाउण्ट

बापदादा के पास हर एक बच्चे का आदि से अंत तक सेवा का खाता है। और आटोमेटिकली उसमें जमा होता रहता है। एक-एक का एकाउण्ट नहीं रखना पडता हैं। एकाउण्ट रखने वालों के पास बहुत फाइल होती हैं। बाप के पास स्थूल फाइल कोई नहीं है। एक सेकण्ड में हर एक का आदि से अभी तक का रजिस्टर सेकण्ड में इमर्ज होता है। आटोमेटिक जमा होता रहता है। **ऐसे कभी नहीं समझना हमको तो कोई देखता नहीं, समझता नहीं। बापदादा के पास तो जो जैसा है, जितना करता है, जिस स्टेज से करता है सब जमा होता है। फाइल नहीं है लेकिन फाइनल है।**

01/03/1986

सभी बंधनों को छोडना यही कर्मातीत स्थित की निशानी है

अब चेक करो - कहाँ तक कर्मो के बंधन से न्यारे बने हो? पहली बात - लौकिक और अलौकिक, कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त। दूसरी बात - पिछले जन्मों के कर्मो के हिसाब-किताब वा वर्तमान पुरुषार्थ के कमजोरी के कारण किसी भी व्यर्थ स्वभाव-संस्कार के वश होने से मुक्त बने हैं? कभी भी कोई कमजोर स्वभाव-संस्कार वा पिछला संस्कार-स्वभाव वशीभूत बनता है तो बंधन युक्त हैं, बंधन मुक्त नहीं। ऐसे नहीं सोचना कि चाहते नहीं हैं लेकिन स्वभाव या संस्कार करा देते हैं। यह भी निशानी बंधनमुक्त की नहीं लेकिन बंधनयुक्त की है। और बात - कोई भी सेवा की, संगठन की, प्रकृति की परिस्थिति स्व-स्थिति को वा श्रेष्ठ स्थिति को डगमग करती है - यह भी बंधनमुक्त स्थिति नहीं है। इस बंधन से भी मुक्त। और तीसरी बात - पुरानी दुनिया में पुराने अंतिम शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि अपनी श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में लाये - इससे भी मुक्त। एक है व्याधि आना, एक है व्याधि हिलाना। तो आना - यह भावी हैं लेकिन स्थिति हिल जाना - यह है बंधनयुक्त की निशानी है। स्व-चिंतन, ज्ञान चिंतन, शुभ-चिंतक बनने का चिंतन बदल शरीर की व्याधि का चिंतन चलना - इससे मुक्त। क्योंकि ज्यादा प्रकृति का चिंतन, चिंता के रूप में बदल जाता है। तो इससे मुक्त होना - इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है। इन सभी बंधनों को छोडना - यही कर्मातीत स्थिति की निशानी है। ब्रह्माबाप ने इन सभी बंधनों से मुक्त हो कर्मातीत स्थिति को प्राप्त किया।

तो आज का दिवस ब्रह्मा बाप समान कर्मातीत बनने का दिवस है। आज के दिवस का महत्त्व समझा? अच्छा।

18/01/1987

बेहद के बाप की दृष्टि

आज भाग्यविधाता बाप अपने सर्व श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को देख रहे हैं। बापदादा के आगे अब भी सिर्फ यह संगठन नहीं है लेकिन चारों ओर के भाग्यवान बच्चे सामने हैं। चाहे देश-विदेश के किसी भी कोने में हैं लेकिन बेहद का बाप बेहद बच्चों को देख रहे हैं। यह साकार वतन के अंदर सृष्टि की हद आ जाती है, लेकिन बेहद बाप की दृष्टि की सृष्टि बेहद है। बाप की दृष्टि में सर्व ब्राह्मण आत्माओं की सृष्टि समाई हुई है। तो दृष्टि की सृष्टि में सर्व सम्मुख हैं। **सर्व भाग्यवान बच्चों को भाग्यविधाता भगवान देख-देख हर्षित होते हैं। जैसे बेहद के बाप को बच्चों को देख रूहानी नशा व फखुर है कि एक-एक बच्चा इस विश्व के आगे विशेष आत्माओं की लिस्ट में हैं। चाहे 16,000 की माला का लास्ट मणका भी है, फिर भी, बाप के आगे आने से, बाप का बनने से विश्व के आगे विशेष आत्मा है।** इसलिए, चाहे और कुछ भी ज्ञान के विस्तार को जान नहीं सकते लेकिन एक शब्द 'बाबा' दिल से माना और दिल से औरों को सुनाया तो विशेष आत्मा बन गये, दुनिया के आगे महान आत्मा बन गये, दुनिया के आगे महान आत्मा के स्वरूप में गायन योग्य बन गये, इतना श्रेष्ठ और सहज भाग्य है, समझते हो? क्योंकि बाबा शब्द है 'चाबी'। किसकी? सर्व खजानों की, श्रेष्ठ भाग्य की। चाबी मिल गई तो भाग्य वा खजाना अवश्य प्राप्त होता ही है। तो सभी मातायें वा पाण्डव चाबी प्राप्त करने के अधिकारी बने हो? चाबी लगाने भी आती है या कभी लगती नहीं है? चाबी लगाने की विधि है - दिल से जानना और मानना।

21/01/1987

संगठन में रहते बुद्धि का सहारा एक बाप हो

कई बच्चों को सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति में आगे बढने में मेहनत लगती है। इसलिए बीच-बीच में कोई को कम्पैनियन बनाने का भी संकल्प आता है और कम्पनी भी आवश्यक है - यह भी संकल्प आता है। संन्यासी तो नहीं बनना है लेकिन आत्माओं की कम्पनी में रहते बाप की कम्पनी को भूल नहीं जाओ। नहीं तो समय पर उस आत्मा की कम्पनी याद आयेगी और बाप भूल जायेगा। तो समय पर धोखा मिलना सम्भव है क्योंकि साकार शरीरधारी के सहारे की आदत होगी तो अव्यक्त बाप और निराकार बाप पीछे याद आयेगा, पहले शरीरधारी आयेगा। अगर किसी भी समय पहले साकार का सहारा याद आया तो नम्बरवन वह हो गया और दूसरा

नम्बर बाप हो गया! जो बाप को दूसरा नम्बर में रखते हैं तो उसको पद क्या मिलेगा - नम्बर वन(एक) वा टू(दो)? सिर्फ सहयोग लेना, स्नेही रहना वह अलग चीज है, लेकिन सहारा बनाना अलग चीज है। यह बहुत गुह्य बात है। इसको यथार्थ रीति से जानना पडे। कोई-कोई संगठन में स्नेही बनने के बजाए न्यारे भी बन जाते हैं। डरते हैं - ना मालूम फँस जाएँ, इससे तो दूर रहना ठीक है। लेकिन नहीं। 21 जन्म भी प्रवृति में, परिवार में रहना है ना। तो अगर डर के कारण किनारा कर लेते, न्यारे बन जाते तो वह कर्म-सन्यासी के संस्कार हो जाते हैं। कर्मयोगी बनना है, कर्म सन्यासी नहीं। संगठन में रहना है, स्नेही बनना है लेकिन बुद्धि का सहारा एक बाप हो, दूसरा न कोई। **बुद्धि को कोई आत्मा का साथ वा गुण वा कोई विशेषता आकर्षित नहीं करे।** इसको कहते हैं - पवित्रता।

20/02/1987

सरेण्डर माना श्रीमत के अण्डर

यह सब तो हैं ही सरेण्डर (समर्पित) अगर यह सरेण्डर नहीं होते तो सेवा के निमित्त कैसे बनते। सरेण्डर हैं तब तो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी बन सेवा के निमित्त बने हो। देश चाहे विदेश में कोई क्रिश्चन कुमारी वा बौद्ध-कुमारी बनकर तो सेवा नहीं करते हो? बी.के. बनकर ही सेवा करते हो ना। तो सरेण्डर ब्राह्मणों की लिस्ट में सभी हैं। अब औरों को कराना है। मरजीवा बन गये। ब्राह्मण बन गये। बच्चे कहते - 'मेरा बाबा', तो बाबा कहते हें -तेरा हो गया। तो सरेण्डर हुए ना। चाहे प्रवृत्ति में हो, चाहे सेन्टर पर हो लेकिन जिसने दिल से कहा - 'मेरा बाबा' तो बाप ने अपना बनाया। यह तो दिल का सौदा है। मुख का स्थूल सौदा नहीं है, यह दिल का है। सरेण्डर माना श्रीमत के अण्डर (अधीन) रहने वाले।

20/03/1987

प्रसन्नचित्त अर्थात सदा निःस्वार्थ, निर्दोष दृष्टि-वृत्ति वाले

सन्तुष्टता की निशानी - वह मन से, दिल से, सर्व से, बाप से, ड्रामा से संन्तुष्ट होंगे, उनके मन और तन में सदा प्रसन्नता की लहर दिखाई देगी। चाहे कोई भी परिस्थिति आ जाए, चाहे कोई आत्मा हिसाब-किताब चुक्तू करने वाली सामना करने भी आती रहे, चाहे शरीर का कर्म भोग सामना करने आता रहे लेकिन हद की कामना से मुक्त आत्मा सन्तुष्टता के कारण सदा प्रसन्नता की झलक में चमकता हुआ सितारा दिखाई देगी। प्रसन्नचित्त कभी कोई बात में प्रश्नचित्त नहीं होंगे। प्रश्न हैं तो प्रसन्न नहीं। प्रसन्नचित्त की निशानी - वह सदा निःस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा, किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा - न भाग्यविधाता के ऊपर कि मेरा भाग्य ऐसा बनाया, न ड्रामा पर कि मेरा ड्रामा में ही पार्ट ऐसा है, न व्यक्ति पर

कि इसका स्वभाव-संस्कार ऐसा है, न प्रकृति के ऊपर कि प्रकृति का वायुमण्डल ऐसा है, न शरीर के हिसाब-किताब के पर कि मेरा शरीर ही ऐसा है। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा निःस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले। तो संगमयुग की विशेषता 'सन्तुष्टता' है और सन्तुष्टता की निशानी 'प्रसन्नता' है। यह है ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति। सन्तुष्टता नहीं, प्रसन्नता नहीं तो ब्राह्मण बनने का लाभ नहीं लिया। ब्राह्मण जीवन का सुख है ही सन्तुष्टता, प्रसन्नता।

05/10/1987

सेवा का भाग्य

यहाँ के सेवाधारी वहाँ के राज्य फैमिली (परिवार) के अधिकारी बनेंगे। यहाँ जितनी हार्ड (सख्त) सेवा करते, उतना वहाँ आराम से सिंहासन पर बैठेंगे और यहाँ जो आराम करते हैं, वहाँ काम करेंगे। हिसाब है ना। एक-एक सेकण्ड का, एक-एक काम का हिसाब-किताब बाप के पास है। इसलिए, एक-एक सेकण्ड का हिसाब कर चुक्तु भी कराता है। गिनती करके हिसाब देता है, ऐसे नहीं देता। लेकिन पद्मगुणा देता है।

21/10/1987

24 घण्टा सेवाधारी बनना है

सारे दिन में भिन्न-भिन्न प्रकार से सेवा कर सकते हो। इसमें एक है - स्व की सेवा। अर्थत् स्व के ऊपर सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का सदा अटेन्शन रखना। आपके इस पढ़ाई के जो मुख्य सबजेक्ट हैं, उन सब में अपने को पास विद् ऑनर बनाना है। इसमें ज्ञान स्वरूप, याद स्वरूप, धारणा स्वरूप - सब में सम्पन्न बनना है। यह सेवा सदा बुद्धि में रहे। यह सेवा स्वतः ही आपके सम्पन्न स्वरूप द्वारा सेवा कराती रहती है लेकिन इसकी विधि है - अटेन्शन और चेकिंग। स्व की चेकिंग करनी है, दूसरों की नहीं करनी। दूसरी है - विश्व सेवा जो भिन्न-भिन्न साधनों द्वारा, भिन्न-भिन्न विधि से, वाणी द्वारा वा सम्बन्ध- सम्पर्क द्वारा करते हो। यह तो सब अच्छी तरह से जानते हैं। तीसरी है - यज्ञ सेवा जो तन और धन द्वारा कर रहे हो।

चौथी है - मन्सा सेवा। अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए अनेक आत्माओं की सेवा कर सकते हो। इसकी विधि है - लाइट हाउस, माइट हाउस बनना। लाइट हाउस एक ही स्थान पर स्थित होते दूर-दूर की सेवा करते हैं। ऐसे आप सभी एक स्थान पर होते अनेकों की सेवा अर्थ निमित्त बन सकते हो। इतना शक्तियों का खजाना जमा है तो सहज कर सकते हो। इसमें स्थूल साधन वा चान्स वा समय की प्राब्लम नहीं है। सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है। सदा मन-बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त होना चाहिए, 'मन्मनाभव' के मंत्र का सहज स्वरूप होना चाहिए। यह चारों

प्रकार की सेवा क्या निरंतर सेवाधारी नहीं बना सकती? चारों ही सेवाओं में से हर समय कोई न कोई सेवा करते रहो तो सहज निरंतर सेवाधारी बन जायेंगे और निरंतर सेवाओं पर उपस्थित होने के कारण, सदा बिजी रहने के कारण सहज मायाजीत बन जायेंगे। चारों ही सेवाओं में से जिस समय जो सेवा कर सकते हो वह करो लेकिन सेवा से एक सेकेण्ड भी वंचित नहीं रहो। 24 घण्टा सेवाधारी बनना है। 8 घण्टे के योगी वा सेवाधारी नहीं लेकिन निरंतर सेवाधारी। सहज है ना? और नहीं तो स्व की सेवा तो अच्छी है। जिस समय जो चांस मिले, वह सेवा कर सकते हो।

कई बच्चे शरीर के कारण वा समय न मिलने के कारण समझते हैं कि हम तो सेवा कर नहीं सकते हैं। लेकिन अगर चार ही सेवाओं में से कोई भी सेवा में विधिपूर्वक बिजी रहते हो तो सेवा की सब्जेक्टस में मार्क्स जमा होती जाती हैं और यह मिले हुए नम्बर (अंक) फाइनल रिजल्ट में जमा हो जायेंगे। जैसे वाणी द्वारा सेवा करने वालों के मार्क्स जमा होते हैं, वैसे यज्ञ-सेवा वा स्व की सेवा वा मन्सा सेवा - इनका भी इतना ही महत्त्व है, इसके भी इतने नम्बर जमा होंगे। हर प्रकार की सेवा के नम्बर इतने ही हैं। लेकिन जो चारों ही प्रकार की सेवा करते उसके उतने नम्बर जमा होते, जो एक वा दो प्रकार की सेवा करते, उसके नम्बर उस अनुसार जमा होते। फिर भी, अगर चार प्रकार की नहीं कर सकते, दो प्रकार की कर सकते हैं तो भी निरंतर सेवाधारी हैं। तो निरंतर के कारण नम्बर बढ़ जाते हैं। इसलिए ब्राह्मण जीवन अर्थात् निरंतर सेवाधारी सहजयोगी।

06/11/1987

नम्बरवार बनने का विधान

तो बापदादा देख रहे थे कि कई बच्चे मदद के पात्र होते भी मदद से वंचित क्यों रह जाते? इसका कारण सुनाया कि हिम्मत के विधि को भूलने कारण, अभिमान अर्थात् अलबेलापन और स्व के ऊपर अटेन्शन की कमी के कारण। विधि नहीं तो वरदान से वंचित रह जाते। सागर के बच्चे होते हुए भी छोटे-छोटे तालाब बन जाते। जैसे तालाब का पानी खड़ा हुआ होता है, ऐसे पुरुषार्थ के बीच में खडे हो जाते हैं। इसलिए कभी मेहनत, कभी मौज में रहते। आज देखो तो बडी मौज में हैं और कल छोटे से रोडे(पत्थर) के कारण उसको हटाने की मेहनत में लगा हुआ है। पहाड भी नहीं, छोटा सा पत्थर है। है महावीर पाण्डव सेना लेकिन छोटा-सा कंकड-पत्थर भी पहाड बन जाता। उसी मेहनत में लग जाते हैं। फिर बहुत हँसाते हैं। अगर कोई उन्हों को कहते हो कि यह तो बहुत छोटा कंकड है, तो हंसी की बात क्या कहते? आपको क्या पता, आपके आगे आये तो पता पडे। बाप को भी कहते- आपको तो बाप की लिफ्ट है, आपको क्या

पता। बहुत अच्छी-अच्छी बातें करते हैं। लेकिन इसका कारण है छोटी-सी भूल। **हिम्मते वच्चे, मददे खुदा - इस राज को भूल जाते हैं। यह एक ड्रामा की गुह्य कर्मो की गति है। हिम्मते वच्चे, मदद दे खुदा अगर यह विधि विधान में नहीं होती तो सभी विश्व के पहले राजा बन जाते।** एक ही समय पर सभी तख्त पर बैठेंगे क्या? नम्बरवार बनने का विधान इस विधि के कारण ही बनता है। नहीं तो सभी बाप को उलहना देवें कि ब्रह्मा को ही क्यों पहला नम्बर बनाया, हमें भी तो बना सकते? इसलिए **यह ईश्वरीय विधान ड्रामा अनुसार बना हुआ है। निमित्त मात्र यह विधान नूँधा हुआ है कि एक कदम हिम्मत का और पद्म कदम मदद का। मदद का सागर होते हुए भी यह विधान की विधि ड्रामा अनुसार नूँधी हुई है।** तो जितना चाहे हिम्मत रखो और मदद लो। इसमें कमी नहीं रखते। चाहे एक वर्ष का बच्चा हो, चाहे 50 वर्ष का बच्चा हो, चाहे सरेण्डर हो, चाहे प्रवृत्ति वाले हो - अधिकार समान है। लेकिन विधि से प्राप्ति है। तो ईश्वरीय विधान को समझा ना?

22/11/1987

बाप भी शक्तिशाली है और ड्रामा भी शक्तिशाली है

सदा 'वाह-वाह' के गीत गाने वाले हो ना? 'हाय-हाय' के गीत समाप्त हो गये और 'वाह-वाह' के गीत सदा मन से गाते रहते। जो भी श्रेष्ठ कर्म करते तो मन से क्या निकलता? वाह मेरा श्रेष्ठ कर्म! या वाह श्रेष्ठ कम सिखलाने वाले! या वाह श्रेष्ठ समय, श्रेष्ठ कर्म कराने वाले! तो सदा 'वाह-वाह' के गीत गाने वाली आत्मायें हो ना? कभी गलती से भी 'हाय' तो नहीं निकलता? हाय, यह क्या हो गया - नहीं। कोई दुःख का नजारा देख करके भी 'हाय' शब्द नहीं निकलना चाहिए। कल 'हाय-हाय' के गीत गाते थे और आज 'वाह-वाह' के गीत गाते हो। इतना अन्तर हो गया! यह किसकी शक्ति है? बाप की या ड्रामा की? (बाप की) बाप भी तो ड्रामा के कारण आया ना। तो ड्रामा भी शक्तिशाली हुआ। अगर ड्रामा में पार्ट नहीं होता तो बाप भी क्या करता। बाप भी शक्तिशाली है और ड्रामा भी शक्तिशाली है। तो दोनों के गीत गाते रहो -वाह ड्रामा वाह! जो स्वप्न में भी न था, वह साकार हो गया। घर बैठे सब मिल गया। घर बैठे इतना भाग्य मिल जाए - इसको कहते हैं डायमण्ड लाटरी।

22/11/1987

कहाँ अष्टरत्न और कहाँ 16000

आजकल की विनाश कारी आत्मायें कहती है कि विनाश की इतनी सामग्री तैयार की है जो ऐसी कई दुनिया विनाश हो सकती है। बाप भी कहते बाप के पास भी इतना खजाना है जो

सारे विश्व की आत्मायें आप जैसे समझदार बन सौदा कर लें तो भी अखुट है। जितनी आप ब्राह्मणों की संख्या है, उससे और पद्मगुणा भी आ जाए तो भी ले सकते हैं। इतना अथाह खजाना है! लेकिन लेने वालों में नम्बर हो जाते हैं। खुले दिल से सौदा करने वाले हिम्मतवान थोडे ही निकलते हैं। इसलिए दो प्रकार की माला पूजी जाती है। कहाँ अष्ट रत्न और कहाँ 16000 का लास्ट! कितना अंतर हो गया! सौदा करने में तो एक जैसा ही है। लास्ट नम्बर भी कहता 'बाबा' और फर्स्ट नम्बर भी कहता - 'बाबा'। शब्द में अंतर नहीं है। सौदा करने की विधि भी एक जैसी है और देने वाला दाता भी एक जैसा देता है। ज्ञान का खजाना वा शक्तियों का खजाना, जो भी संगमयुगी खजाने जानते हो, सबके पास एक जैसा ही है। किसको सर्व शक्तियाँ दी, किसको एक शक्ति दी वा किसको एक गुण वा किसको सर्व गुण दिये - यह अंतर नहीं। सभी का टाईटल एक ही है - आदि-मध्य-अंत के ज्ञान को जानने वाले त्रिकालदर्शी, मास्टर सर्व शक्तिवान् हैं। ऐसे नहीं कि कोई सर्व शक्तिवान है, कोई सिर्फ शक्तिवान है। नहीं। सभी को सर्वगुण सम्पन्न बनने वाली देव आत्मा कहते हैं, गुण मूर्ति कहते हैं। खजाना सभी के पास है। एक मास से स्टडी करने वाले भी ज्ञान का खजाना ऐसे ही वर्णन करता जैसे 50 वर्ष वाले वर्णन करते हैं। अगर एक-एक गुण पर, शक्तियों पर भाषण करने के लिए कहें तो बहुत अच्छा भाषण कर सकते हैं। बुद्धि में है तब तो कर सकते हैं ना। तो खजाना सबके पास है, बाकी अंतर क्या हो गया? नम्बरवन सौदागर ख़ज़ाने को स्व के प्रति मनन करने से कार्य में लगाते हैं। उसी अनुभव की अथार्टी से अनुभवी बन दूसरों को बांटते। कार्य में लगाना अर्थात् खजाने को बढ़ाना। एक हैं सिर्फ वर्णन करने वाले, दूसरे हैं मनन करने वाले। तो मनन करने वाले जिसको भी देते हैं वह स्वयं अनुभवी होने के कारण दूसरे को भी अनुभवी बना सकते हैं। वर्णन करने वाले दूसरों को भी वर्णन करने वाले बना देते। महिमा करते रहेंगे, लेकिन अनुभवी नहीं बनेंगे। स्वयं महान बनेंगे लेकिन महिमा करने वाले बनेंगे।

तो नम्बरवन अर्थात् मनन शक्ति से खजाने के अनुभवी बनाने वाले अर्थात् दूसरे को भी धनवान बनाने वाले। इसलिए उन्हों का खजाना सदा बढ़ता जाता है और समय प्रमाण स्वयं प्रति और दूसरों के प्रति कार्य में लगाने से सफलता स्वरूप सदा रहते हैं। सिर्फ वर्णन करने वाले दूसरे को भी धनवान नहीं बना सकेंगे और अपने प्रति भी समय प्रामाण जो शक्ति, जो गुण, जो ज्ञान की बातें यूज करनी चाहिए वह समय पर नहीं कर सकेंगे। इसलिए ख़जाने के भरपूर स्वरूप का सुख और दाता बना देने का अनुभव नहीं कर सकते। धन होते भी धन से सुख नहीं ले सकते। शक्ति होते भी समय पर शक्ति द्वारा सफलता पा नहीं सकते। गुण होते भी समय प्रमाण उस गुण को यूज नहीं कर सकते। सिर्फ वर्णन कर सकते हैं। धन सबके पास है लेकिन धन का सुख समय पर यूज करने से अनुभव होता। जैसे आजकल के समय में भी कोई-कोई विनाशी धनवान

के पास भी धन बैंक में होगा, अलमारी में होगा या तकिये के नीचे होगा, न खुद कार्य में लगायेगा, न औरों को लगाने देगा। न स्वयं लाभ लेगा, न दूसरों को लाभ देगा। तो धन होते भी सुख तो नहीं लिया ना। तकिये के नीचे ही रह जायेगा, खुद तो चला जायेगा। तो यह वर्णन करना अर्थात् यूज न करना, सदा गरीब दिखाई देंगे। यह धन भी अगर स्वयं प्रति वा दूसरों प्रति समय प्रमाण यूज नहीं करते, सिर्फ बुद्धि में रखा है तो न स्वयं अविनाशी धन के नशे में, खुशी में रहते, न दूसरों को दे सकते। सदा ही क्या करें, कैसे करें... इस विधि चलते रहेंगे। इसलिए दो मालायें हो जाती है। वह मनन करने वाली, वह सिर्फ वर्णन करने वाली। तो कौन से सौदागर हो, नम्बरवन वाले या दूसरे नम्बरवाले? इस खजाने का कन्डीशन (शर्त) यह है - जितना औरों को देंगे, जितना कार्य में लगायेंगे उतना बढ़ेगा। वृद्धि होने की विधि यह है। इसमें विधि को न अपनाने के कारण स्वयं में भी वृद्धि नहीं और दूसरों की सेवा करने में भी वृद्धि नहीं। संख्या की वृद्धि नहीं कर रहे हैं, सम्पन्न बनाने की वृद्धि। कई स्टूडेन्टस संख्या में तो गिनती में आते हैं लेकिन अब तक भी कहते रहते - समझ में नहीं आता योग क्या है, बाप को याद कैसे करें? अभी शक्ति नहीं है। तो स्टूडेन्टस की लाइन में तो हैं, रजिस्टर में नाम है लेकिन धनवान तो नहीं बना ना। मांगता ही रहेगा। कभी कोई टीचर के पास जायेगा - मदद दे दो, कभी बाप से रूह-रूहान करेगा - मदद दे दो। तो भरपूर तो नहीं हुआ ना। जो स्वयं अपने प्रति मनन शक्ति से धन को बढ़ाता है वह दूसरे को भी धन में आगे बढ़ा सकता हैं। मनन शक्ति अर्थात् धन को बढ़ाना। तो धनवान की खुशी, धनवान का सुख अनुभव करना। समझा? मनन शक्ति का महत्व बहुत है। पहले भी थोडा इशारा सुनाया है। और भी मनन शक्ति के महत्व को आगे सुनायेंगे। चेक करने का काम देते रहते हैं। रिजल्ट आऊट हो और फिर आप कहो कि हमें तो पता नहीं, यह बात तो बापदादा ने कही नहीं थी। इसलिए रोज सुनाते रहते हैं। चेक करना अर्थात् चेन्ज करना। अच्छा।

10/12/1987

रीपीट

बापदादा - दोनों ही आपके साथ चलने के लिए रुके हुए हैं। निराकार बाप परमधाम निवासी हैं लेकिन संगमयुग पर साकार द्वारा पार्ट तो बजाना पडता है ना। इसलिए आपके इस कल्प का पार्ट समाप्त होने के साथ बाप, दादा - दोनों का भी पार्ट इस कल्प का समाप्त होगा। फिर कल्प रिपीट होगा। इसलिए निराकार बाप भी आप बच्चों के पार्ट के साथ बँधा हुआ है।

शुद्ध बन्धन है। लेकिन पार्ट का बन्धन तो है ना। स्नेह का बन्धन.... लेकिन मीठा बन्धन है। कर्मभोग वाला बन्धन नहीं है।

31/12/1987

आज्ञाकारी बनो

वर्तमान समय के प्रमाण कई श्रेष्ठ आज्ञाकारी बच्चों द्वारा कभी-कभी कोई-कोई आत्माएं अपने को असंतुष्ट भी अनुभव करती हैं। आप सोचेंगे ऐसा तो कोई नहीं है जिससे सभी संतुष्ट हों! कोई न कोई असंतुष्ट हो भी जाते हें लेकिन वह कई कारण होते हैं। अपने कारण को न जानने के कारण मिसअण्डरस्टैंड (गलतफहमी) कर देते हैं। दूसरी बात - अपनी बुद्धि प्रमाण बडों से चाहना, इच्छा ज्यादा रखते हैं और वह इच्छा जब पूर्ण नहीं होती तो असंतुष्ट हो जाते। तीसरी बात - कई आत्माओं के पिछले संस्कार-स्वभाव और हिसाब-किताब के कारण भी जो संतुष्ट होना चाहिए वह नहीं होते। इस कारण नम्बरवन आज्ञाकारी आत्मा का वा श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा संतुष्टता न मिलने का कारण होता नहीं है लेकिन अपने कारणों से असंतुष्ट रह जाते हैं। इसलिए कहाँ-कहाँ दिखाई देता है कि हर एक से कोई असंतुष्ट है। लेकिन उसमें भी मैजारिटी 95 प्रतिशत के करीब संतुष्ट होंगे। 5 प्रतिशत असंतुष्ट दिखाई देते। तो नम्बरवन आज्ञाकारी बच्चे मैजारिटी तीनों ही रूप से संतुष्ट अनुभव करेंगे और सदा आज्ञा प्रमाण श्रेष्ठ कर्म होने के कारण हर कर्म करने के बाद संतुष्ट होने कारण कर्म बार-बार बुद्धि को, मन को विचलित नहीं करेगा कि ठीक किया वा नहीं किया। सेकण्ड नम्बर वाले को कर्म करने के बाद कई बार मन में संकल्प चलता है कि पता नहीं ठीक किया वा नहीं। जिसको आप लोग अपनी भाषा में कहते हो - मन खाता है कि ठीक नहीं किया। नम्बरवन आज्ञाकारी आत्मा का कभी मन नहीं खाता, आज्ञा प्रमाण चलने के कारण सदा हल्के रहते। क्योंकि कर्म के बंधन का बोझ नहीं। पहले भी सुनाया था कि एक है कर्म के संबंध में आना, दूसरा है कर्म के बंधन वश कर्म करना। तो नम्बरवन आत्मा कर्म के संबंध में आने वाली है, इसलिए सदा हल्की है। नम्बरवन आत्मा हर कर्म में बापदादा द्वारा विशेष आशीर्वाद की प्राप्ति के कारण हर कर्म करते आशीर्वाद के फल स्वरूप सदा ही आंतरिक विल पॉवर अनुभव करेगी। सदा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेगी, सदा अपने को भरपूर अर्थात् सम्पन्न अनुभव करेगी।

कभी-कभी कई बच्चे बाप के आगे अपने दिल का हालचाल सुनाते क्या कहते हैं - ना मालूम क्यों 'आज अपने को खाली-खाली समझते हैं', कोई बात भी नहीं हुई है लेकिन सम्पन्नता वा सुख की अनुभूति नहीं हो रही है। कई बार उस समय कोई उल्टा कार्य या कोई छोटी-मोटी भूल नहीं होती है लेकिन चलते-चलते अन्जान वा अलबेलेपन में समय प्रति समय

आज्ञा के प्रमाण काम नहीं करते हैं। पहले समय की अवज्ञा का बोझ किसी समय अपने तरफ खींचता है। जैसे पिछले जन्मों के कडे संस्कार, स्वभाव कभी-कभी न चाहते भी अपने तरफ खींच लेते हैं, ऐसे समय प्रति समय की की हुई अवज्ञाओं का बोझ कभी-कभी अपने तरफ खींच लेता है। वह है पिछला हिसाब-किताब, यह है वर्तमान जीवन का हिसाब। क्योंकि कोई भी हिसाब - चाहे इस जन्म का, चाहे पिछले जन्म का, लगन की अग्नि-स्वरूप स्थिति के बिना भस्म नहीं होता। सदा अग्नि-स्वरूप स्थिति अर्थात् शक्तिशाली याद की स्थिति, बीजरूप, लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति सदा न होने के कारण हिसाब-किताब को भस्म नहीं कर सकते हैं। इसलिए रहा हुआ हिसाब अपने तरफ खींचता है। उस समय कोई गलती नहीं करते हो कि पता नहीं क्या हुआ! कभी मन नहीं लगेगा - याद में, सेवा में वा कभी उदासी की लहर होगी। एक होता है ज्ञान द्वारा शान्ति का अनुभव, दूसरा होता है बिना खुशी, बिना आनंद के सन्नाटे की शान्ति। वह बिना रस के शान्ति होती है। सिर्फ दिल करेगा - कहाँ अकेले में चले जाएँ, बैठ जाएँ। यह सब निशानियाँ हैं कोई न कोई अवज्ञा की। कर्म का बोझ खींचता है।

अवज्ञा - एक होती है पाप कर्म करना वा कोई बडी भूल करना और दूसरी छोटी-छोटी अवज्ञायें भी होती हैं। जैसे बाप की आज्ञा है - अमृतवेले विधिपूर्वक शक्तिशाली याद में रहो। तो अमृतवेले अगर इस आज्ञा प्रमाण नही ंचलते तो उसको क्या कहेंगे? आज्ञाकारी या अवज्ञा? हर कर्म कर्मयोगी बनकर के चेक करो, निमित्त भाव से करो, निर्माण बनके करो - यह आज्ञाएं हैं। ऐसे तो बहुत बडी लिस्ट है लेकिन दृष्टान्त की रीति में सुना रहे हैं। दृष्टि, वृत्ति सबके लिए आज्ञा है। इन सब आज्ञाओं में से कोई भी आज्ञा विधिपूर्वक पालन नहीं करते तो इसको कहते हैं - छोटी-मोटी अवज्ञाएं। यह खाता अगर जमा होता रहता है तो जरूर अपनी तरफ खींचेगा ना, इसलिए कहते हैं कि जितना होना चाहिए, उतना नहीं होता। जब पूछते हैं, ठीक चल रहे हो तो सब कहेंगे - हाँ। और जब कहते हैं कि जितना होना चाहिए उतना है, तो फिर सोचते हैं। इतने इशारे मिलते, नॉलेजफुल होते फिर भी जितना होना चाहिए उतना नहीं होता, कारण? पिछला वा वर्तमान बोझ डबल लाइट बनने नहीं देता है। कभी डबल लाइट बन जाते, कभी बोझ नीचे ले आता। सदा अतीन्द्रिय सुख वा खुशी संपन्न शान्त स्थिति अनुभव नहीं करते हैं। बापदादा के आज्ञाकारी बनने की विशेष आशीर्वाद की लिफ्ट के प्राप्ति की अनुभूति नहीं होती है। इसीलिए किस समय सहज होता, किस समय मेहनत लगती है।

14/01/1988

आलराउण्ड सेवा

कोई भी सेवा के पुण्य का फल स्वतः ही प्राप्त होता है। पुण्य का फल जमा भी होता है और फिर अभी भी मिलता है। अगर मानो, आप कोई भी काम करते हो, सेवा करते हो तो कोई भी आपको कहेगा - बहुत अच्छी सेवा की, बहुत हड्डी, अथक होकर की। तो ये सुनकर खुशी है ना। तो फल मिला ना। चाहे मुख से सेवा करो, चाहे हाथों से करो लेकिन सेवा माना ही मेवा। तो यह भी सेवा के निमित्त बने हो ना। महत्त्व रखने से महानता प्राप्त कर लेते। तो ऐसे आगे भी सेवा के महत्त्व को जान सदा कोई न कोई सेवा में बिजी रहो। ऐसे नहीं कि कोई जिज्ञासु नहीं मिला तो सेवा क्या करूँ? कोई प्रदर्शनी नहीं हुई, कोई भाषण नहीं हुआ तो सेवा क्या करूँ? नहीं। सेवा का फील्ड बहुत बडा है! कोई कहे, हमको सेवा मिलती नहीं है - कह नहीं सकता। वायुमण्डल को बनाने की कितनी सेवा रही हुई है! प्रकृति को भी परिवर्तन करने वाले हो। तो प्रकृति का परिवर्तन कैसे होगा? भाषण करेंगे क्या? वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा। वायुमण्डल बनाना अर्थात् प्रकृति का परिवर्तन होना। तो यह कितनी सेवा है! अभी हुई है? अभी तो प्रकृति पेपर ले रही है। तो हर सेकण्ड सेवा का बहुत बड़ा फील्ड रहा हुआ है। कोई कह नहीं सकता कि हमको सेवा का चांस नहीं मिलता। बीमार भी हो, तो भी सेवा का चांस है। कोई भी हो - चाहे अनपढ हो, चाहे पढ़ा हुआ हो, किसी भी प्रकार की आत्मा, सबके लिए सेवा का साधन बहुत बडा है। तो सेवा का चांस मिले - यह नहीं, मिला हुआ है।

आलराउण्ड सेवाधारी बनना है। कर्मणा सेवा की भी 100 मार्क्स हैं। अगर वाचा और मन्सा ठीक है लेकिन कर्मणा के तरफ रुचि नहीं है तो 100 मार्क्स तो गई। आलराउण्ड सेवाधारी अर्थात् सब प्रकार की सेवा द्वारा फुल मार्क्स लेने वाले। इसको कहेंगे आलराउण्ड सेवाधारी। तो ऐसे हो? देखो, शुरु में जब बच्चों की भट्ठी बनाई तो कर्मणा का कितना पाठ पक्का कराया! माली भी बनाया तो जूते बनाने वाला भी बनाया। क्योंकि इसकी मार्क्स भी रह नहीं जायें। वहाँ भी लौकिक पढ़ाई में मानों आप कोई हल्की सबजेक्ट में भी फेल हो जाते हो, विशेष सब्जेक्ट नहीं है, नम्बर थ्री, फोर सब्जेक्ट हैं लेकिन उसमें भी अगर फेल हुए तो पास विद् ऑनर नहीं बनेंगे। टोटल मार्क्स तो कम हो गई ना। ऐसे, सब सब्जेक्ट चेक करो। सब सब्जेक्टस में मार्क्स लिया है? जैसे यह (मकान देने के) निमित्त बने, यह सेवा की, इसका पुण्य मिला, मार्क्स मिलेंगी। लेकिन फुल मार्क्स ली हैं या नहीं - यह चेक करो। कोई न कोई कर्मणा सेवा, वह भी जरूरी है क्योंकि कर्मणा की भी 100 मार्क्स हैं, कम नहीं हैं। यहाँ सब सब्जेक्ट की 100 मार्क्स हैं। वहाँ तो ड्राइंग में थोडी मार्क्स होंगी, हिसाब (गणित) में ज्यादा होंगी। यहाँ सब सबजेक्ट महत्त्व वाली हैं। तो ऐसा न हो कि मन्सा, वाचा में तो मार्क्स बना लो और कर्मणा

में रह जाए और आप समझो - मैं बहुत महावीर हूँ। सभी मार्क्स लेनी हैं। इसको कहते हैं - सेवाधारी।

18/01/1988

खुदा की नजर

हर एक ब्राह्मण आत्मा में कोई न कोई विशेषता अवश्य भरी हुई है। चाहे 16,000 का लास्ट दाना भी हो लेकिन उसमें भी कोई-न-कोई विशेषता है, इसलिए ही बाप की नजर उस आत्मा के ऊपर पडती है। भगवान की नज़र पड जाए वा भगवान अपना बनावे तो जरूर विशेषता समाई हुई है! इसलिए ही वह आत्मा ब्राह्मणों की लिस्ट में आई है लेकिन सदा हर एक की विशेषता को देखने और जानने में नम्बरवार बन जाते हैं। बापदादा जानते हैं कि कैसे भी, भल ज्ञान की धारण वा सेवा में, याद में कमजोर हैं लेकिन बाप को जानने, बाप के बनने की विशालबुद्धि, बाप को देखने की दिव्य नजर - यह विशेषता तो है। जो आजकल के नामीग्रामी विद्वान भी नहीं जान सकते, न पहचान सकते लेकिन उन आत्माओं ने जान लिया! कोटो में कोई, कोई में भी कोई - इस लिस्ट में आ गये ना। इसलिए कोटों में से विशेष आत्मा तो हो गये ना। विशेष क्यों बनें? क्योंकि ऊँचे ते ऊँचे बाप के बन गये।

26/01/1988

बी.के.जीवन अर्थात ब्रह्मावाप समान मौज की जीवन

दूसरा कदम - सहनशीलता। यह ब्रह्मा बाप ने चल करके दिखाया। सदा अटल, अचल, सहज स्वरूप में मौज से रहे, मेहनत से नहीं। इसका अनुभव 14 वर्ष तपस्या करने वाले बच्चों ने किया। 14 वर्ष महसूस हुए या कुछ घडियाँ लगी? मौज से रहे या मेहनत लगी? वैसे स्थूल मेहनत का पेपर भी खूब लिया। कहाँ नाज से पलने वाले और कहाँ गोबर के गोले भी बनवाये, मैकेनिक भी बनाया। चप्पल भी सिलवाई! मोची भी बनाया ना। माली भी बनाया। लेकिन मेहनत लगी या मौज लगी? सब कुछ पार किया लेकिन सदा मौज की जीवन का अनुभव रहा। जो मूँझे, वह भाग गये और जो मौज में रहे वह अनेकों को मौज की जीवन का अनुभव करा रहे हैं। अभी भी अगर वही 14 वर्ष रिपीट करें तो पसंद है ना। अभी तो सेन्टर पर अगर थोडा-सा स्थूल काम भी करना पडता तो सोचते हैं - इसीलिए संन्यास किया, क्या हम इस काम के लिए हैं? मौज से जीवन जीना - इसको ही ब्राह्मण जीवन कहा जाता है। चाहे स्थूल साधारण काम हो, चाहे हजारों की सभा बीच स्टेज पर स्पीच करनी हो - दोनों मौज से करें। इसको कहा जाता - मौज की जीवन जीना। मूँझे नहीं - हमने तो समझा नहीं था कि सरेन्डर होना अर्थात् यह सब करना होगा, मैं तो टीचर बनकर आई हूँ, स्थूल काम करने के लिए थोडे ही संन्यास किया है, क्या

यही ब्रह्माकुमारी जीवन होती है? इसको कहते हैं - मूँझने वाली जीवन।

ब्रह्माकुमारी बनना अर्थात् दिल की मौज में रहना, न कि स्थूल मौजों में रहना। दिल की मौज से किसी भी परिस्थिति में, किसी भी कार्य में मूँझने को मौज में बदल देंगे और दिल के मूँझने वाले, श्रेष्ठ साधन होते भी, स्पष्ट बात होते भी सदा स्वयं मूँझे हुए होने के कारण स्पष्ट बात को भी मूँझा देगा, अच्छे साधन होते हुए भी साधनों से मौज नहीं ले सकेंगे। यह कैसे होगा, ऐसा नहीं, ऐसा होगा - इसमें खुद भी मूँझेगा, दूसरे को भी मूँझा देगा। जैसे कहते हैं ना - 'सूत मूँझ जाता है तो मुश्किल ही सूधरता है।' अच्छी बात में भी मूँझेगा तो घबराने वाली बात में भी मूँझेगा। क्योंकि वृत्ति मूँझी हुई है, मन मूँझा हुआ है तो स्वतः ही वृत्ति का प्रभाव दृष्टि पर और दृष्टि के कारण सृष्टि भी मूँझी हुई दिखाई देगी। ब्रह्माकुमारी जीवन अर्थात् ब्रह्मा बाप समान मौज की जीवन। लेकिन इसका आधार है 'सहनशीलता'। तो सहनशीलता की इतनी विशेषता है! इसी विशेषता के कारण ब्रह्मा बाप सदा अटल, अचल रहें।

30/01/1988

ड्रामा

अपनी विशेषताओं को जानते हो ना। इस विशेषताओं से अपने को जितना आगे बढ़ाना चाहो उतना बढ़ा सकते हो। ड्रामा अनुसार किसी भी महान आत्मा का यह उल्हना नहीं रह सकता कि हम पीछे आये हैं, इसलिए आगे नहीं बढ़ सकते। डबल विदेशी बच्चों को अपनी विशेषताओं का गोल्डन चांस है। भारतवासियों को फिर अपना गोल्डन चांस है। लेकिन आज तो डबल विदेशी बच्चें से मिल रहे हैं। ड्रामा में विशेष नूँध होने कारण किसी भी लास्ट वाली आत्मा का उल्हना चल नहीं सकता क्योंकि ड्रामा एक्यूरेट बना हुआ है।

28/02/1988

बालक बनकर मालिक के डायरेक्शन पर चलो

यह भी अपना भाग्य स्मृति में रखो कि बाप करावनहार हर कर्म में करा रहा है। तो बोझ नहीं होगा। बोझ मालिक पर होता है, साथी जो होते उन पर बोझ नहीं होता। मालिक बन जाते हो तो बोझ आ जाता है। मैं बालक और मालिक बाप है, मालिक बालक से करा रहा है। बडे बन जाते हो तो बडे दुःख आ जाते हैं। बालक बनकर, मालिक के डायरेक्शन पर करो। कितना बडा भाग्य है यह! हर कर्म में बाप जिम्मेवार बन हल्का बनाए उडा रहे हैं। होता क्या है, जब कोई समस्या आती है तो कहते हो - बाबा, अभी बाप जानो। और जब समस्या समाप्त हो जाती है तो मस्त हो जाते हो। लेकिन ऐसे करो ही क्यों जो समस्या आवें। करावनहार बाप के डायरेक्शन प्रमाण हर कर्म करते चलो तो कर्म भी श्रेष्ठ और श्रेष्ठ कर्म का फल - सदा खुशी,

सदा हल्कापन, फरिश्ता जीवन का अनुभव करते रहेंगे। 'फरिश्ता कर्म के संबंध में आयेगा लेकिन कर्म के बंधन में नहीं बंधेगा' और बाप का संबंध करावनहार का जुटा हुआ है, इसलिए निमित्त भाव में कभी 'मैं-पन' का अभिमान नहीं आता है। सदा निर्मान बन निर्माण का कार्य करेंगे। तो कितना भाग्य है आपका!

07/03/1988

बाप के साथ बाप की 'याद की गोदी' में सो जाओ

सुलाते भी बाप हैं लोरी देकर के। बाप की गोदी में सो जाओ तो थकावट, बीमारी सब भूल जायेंगे और आराम करेंगे! सिर्फ आह्वान करो - 'आ राम' तो आराम आ जायेगा। अकेले सोते हो तो और-और संकल्प चलते हैं। बाप के साथ 'याद की गोदी' में सो जाओ। 'मीठे बच्चे', 'प्यारे बच्चे' की लोरी सुनते-सुनते सो जाओ। देखो कितना अलौकिक अनुभव होता है! तो अमृतवेले से लेकर रात तक सब भगवान करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है - सदा इस भाग्य को स्मृति में रखो, इमर्ज करो। कोई हद का नशा भी जब तक पीते नहीं जब तक नशा नहीं चढ़ता। ऐसे ही सिर्फ बोतल में रखा हो तो नशा चढ़ेगा? यह भी बुद्धि में समाया हुआ तो है लेकिन इसको यूज करो। स्मृति में लाना अर्थात् पीना, इमर्ज करना। इसको कहते हैं - स्मृति स्वरूप बनो। ऐसे नहीं कहा है कि बुद्धि में समाया हुआ रखो। स्मृति स्वरूप बनो। कितने भाग्यवान हो! रोज अपने भाग्य को स्मृति में रख समर्थ बनो और उडते चलो। समझा।

07/03/1988

लास्ट सो फर्स्ट बन सकता है

बाप की नजरों में हर एक बच्चा नम्बरवन है। अभी नम्बर आउट कहाँ हुए हैं? जब तक आउट हो, तब तक हर एक नम्बरवन है, कोई भी नम्बरवन हो सकता है। सुनाया ना - नम्बरवन तो ब्रह्मा सदा है ही। लेकिन फर्स्ट डिवीजन - बाप के साथ फर्स्ट नम्बर में आना अर्थात् फर्स्ट डिवीजन। उन्हों को भी नम्बरवन कहेंगे। तो जब तक फाइनल रिजल्ट आउट नहीं हुई है, तब तक बापदादा चाहे जानते भी हैं कि वर्तमान समय के प्रमाण लास्ट हैं लेकिन फिर भी लास्ट नहीं समझते। कभी भी लास्ट सो फर्स्ट बन सकता है, मार्जिन है। कभी-कभी क्या होता है - जो बहुत तेज चलते हैं, वह नजदीक टाइम पर थक जाते हैं, और जो धीरे-धीरे चलते है, कभी रुकते नहीं, तरीके से चलते हैं तो वह रुक जाते हैं और वह पहुँच जाते हैं। इसलिए अभी बाप

की नजर में सब नम्बरवन हैं। जब रिजल्ट आउट होगी, तब कहेंगे - यह लास्ट है, यह फर्स्ट है। अभी नहीं कह सकते। इसलिए सिर्फ अपने में निश्चय रख उडते चलो।

23/03/1988

लास्ट पेपर

बापदादा ने सुनाया है - **लास्ट में फाइनल पेपर का क्वेश्चन ही यह होगा - सेकण्ड में फुलस्टाप, यही क्वेश्चन आयेगा। इसी में ही नम्बर मिलेंगे।** तो इम्तिहान में पास होने के लिए तैयार हो? सेकण्ड से ज्यादा हो गया तो फेल हो जायेंगे। तो **टाइम भी बता रहे हैं - 'एक सेकण्ड और क्वेश्चन भी सुना रहे हैं - और कोई याद नहीं आये बस फुल स्टॉप'। एक बाप और मैं, तीसरी कोई बात नहीं।** यह कर लूँ, यह देख लूँ.... यह हुआ, नहीं हुआ। यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ - कोई बात आई तो फेल। यह क्वेश्चन सहज है या मुश्किल? बाप क्वेश्चन भी सुना रहे हैं, टाइम भी बता रहे हैं, फिर भी देखो कितने नम्बर हो जाते हैं! कहाँ 8 दाने का पहला नम्बर और कहाँ 16000 का लास्ट नम्बर! कितना फर्क हुआ! क्वेश्चन सेकण्ड का वही होगा - **पहले नम्बर के लिए भी तो 16000 के लास्ट नम्बर के लिए भी क्वेश्चन एक ही होगा।** और कितने समय से सुना रहे हैं? तो सभी नम्बरवन आने चाहिए ना! इसीको ही अपने यादगार में 'नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप' कहा है। बस, सेकण्ड में मेरा बाबा दूसरा न कोई। इस सोचने में भी समय लगता है लेकिन टिक जाएँ, हिले नहीं। यह भी नहीं - सेकण्ड तो हो गया, यह सोचा तो भी फेल हो जायेंगे। कई बार जो पेपर देते हैं, वह इसी बात में ही फेल हो जाते हैं। क्वेश्चन पर जो लिखा हुआ होता है कि यह क्वेश्चन 5 मिनट का, यह 10 मिनट का, तो यही देखते रहते हैं कि 5 मिनट हो तो नहीं गया। समय को देखते, क्वेश्चन का उत्तर देना भूल जाते हैं। तो यह अभ्यास चलते-फिरते, बीच-बीच में करते रहो। कोई भी संकल्प न आये, फुलस्टॉप कहा और स्थित हो गये। क्योंकि **लास्ट पेपर अचानक आना है। अचानक के कारण ही तो नम्बर बनेंगे ना। लेकिन होना एक सेकण्ड में हैं। तो कितना अभ्यास चाहिए?** अगर अभी से नष्टोमोहा है, मेरा-मेरा समाप्त है तो फिर मुश्किल नहीं है, सहज है। तो सभी पास होने वाले हो ना! जो निश्चयबुद्धि हैं उनकी बुद्धि में यह निश्चित रहता है कि मैं विजयी बना था, बनेंगे और सदा ही बनेंगे। बनेंगे या नहीं बनेंगे, यह क्वेश्चन नहीं होता है। तो ऐसे बुद्धि में निश्चित है कि हम ही विजयी है? लेकिन बहुतकाल का अभ्यास जरूरी चाहिए। अगर उस समय कोशिश करेंगे, बहुतकाल का अभ्यास नही होगा तो मुश्किल हो जायेगा। बहुतकाल का अभ्यास अंत में मदद देगा। अच्छा। (बॉम्बे गृप)

11/15/1989

असत्य और सत्य में विशेष अन्तर

असत्य और सत्य में विशेष अन्तर क्या है? असत्य की जीत अल्पकाल की होती है क्योंकि असत्य का राज्य ही अल्पकाल का है। सत्यता की हार अल्पकाल की और जीत सदाकाल की है। असत्य के अल्पकाल के विजयी उस समय खुश होते हैं। जितना थोडा समय खुशी मनाते वा अपने को राइट सिद्ध करते, तो समय आने पर असत्य के अल्पकाल का समय समाप्त होने पर जितनी असत्यता के वश मौज मनाई, उतना ही सौ गुणा सत्यता की विजय प्रत्यक्ष होने पर पश्चाताप करना ही पडता है। क्योंकि बाप से किनारा, स्थूल में किनारा नहीं होता, स्थूल में तो स्वयं को ज्ञानी समझते हैं लेकिन मन और बुद्धि से किनारा होता। और बाप से किनारा होना अर्थात् सदाकाल की सर्व प्राप्तियों के अधिकार से सम्पन्न के बजाए अधूरा अधिकार प्राप्त होना। कई बच्चे समझते हैं कि असत्य के बल से असत्य के राज्य में विजय की खुशी वा मौज इस समय तो मना लें, भविष्य किसने देखा। कौन देखेगा - हम भी भूल जायेंगे, सब भूल जायेंगे। लेकिन यह असत्य की जजमेंट है। भविष्य वर्तमान की परछाई है। बिना वर्तमान के भविष्य नहीं बनता। असत्य के वशीभूत आत्मा वर्तमान समय भी अल्पकाल के सुख के -नाम, मान, शान के सुख के झूलों में झूल सकती है और झूलती भी है, लेकिन अतीन्द्रिय अविनाशी सुख के झूले में नहीं झूल सकती। अल्पकाल के शान, मान और नाम की मौज मना सकते हैं लेकिन सर्व आत्माओं के दिल के स्नेह का, दिल की दुआओं का मान नहीं प्राप्त कर सकते। दिखावा-मात्र मान पा सकते हैं लेकिन दिल से मान नहीं पा सकते। अल्पकाल का शान मिलता है लेकिन बाप से सदा दिलतख्त-नशीन का शान अनुभव नहीं कर सकते। क्योंकि बापदादा से किनारा है। भविष्य की बात तो छोडो, वह तो अन्डरस्टूड है। लेकिन वर्तमान सत्यता और असत्यता की प्राप्ति में कितना अन्तर है? एक दूसरा मेरा बनाया अर्थात् असत्य का सहारा लिया। कितना झमेला हुआ।

04/09/1992

मार्ग मेहनत का नहीं है

मार्ग मेहनत का नहीं है लेकिन अपनी कमजोरी मेहनत का अनुभव कराती है। जब कमजोर हो जाते हो तब मेहनत लगती है, जब शक्तिशाली होते हो तो सहज लगता है। है सहज लेकिन स्वयं ही मेहनत का अनुभव कराने के निमित्त बनते हो। मेहनत में थकावट होती है और सहज में खुशी होती है। अगर कोई भी कार्य सहज सफल होता रहता है तो खुशी होगी ना। मेहनत करनी पडी तो थकावट होगी। तो खुशी अच्छी या थकावट अच्छी?

03/11/1992

भगवान की पसन्दगी

देखो, भगवान की पसन्दगी क्या है? जिसको कोई पसन्द नहीं करते उसको बाप पसन्द करते हैं। बाप की नजर किसके ऊपर गई? आप लोगों के ऊपर। इतने नामीग्रामी लोगों पर नजर नहीं गई। कहते हैं ना - तुम्हारी गत-मत तुम ही जानो, और कोई नहीं जानता। तो नशा है कि परमात्मा ने हमको पसन्द किया है।

12/11/1992

बुराई को अच्छाई में परिवर्तन करो

आजकल के साइन्स के साधन से भी जो वेस्ट-खराब माल होता है उसको परिवर्तन कर अच्छी चीज बना देते हैं। तो प्रसन्नचित्त आत्मा साइलेन्स की शक्ति से - चाहे बात बुरी हो, सम्बन्ध बुरे अनुभव होते हों, लेकिन वह बुराई को अच्छाई में परिवर्तन कर स्वयं में भी धारण करेगी और दूसरे को भी अपनी शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प से बुराई को बदल अच्छाई धारण करने की शक्ति देगी। कई बच्चे सोचते हैं, कहते हैं कि - जब है ही बुरी वा गलत बात, तो गलत को गलत तो कहना ही पडेगा ना। वा गलत को गलत तो समझना ही पडेगा ना। लेकिन गलत को गलत समझना - यह समझने के हिसाब से समझा। वह राइट और रांग - समझना, जानना अलग बात है। लेकिन नॉलेजफुल रूप से जाननेवाले समझने के बाद स्वयं में किसी भी आत्मा की बुराई को बुराई के रूप में अपनी बुद्धि में धारण नहीं करेंगे। तो समझना अलग चीज है, समझने तक राइट है। लेकिन स्वयं में वा अपनी चित्त पर, अपनी बुद्धि में, अपनी वृत्ति में, अपनी वाणी में दूसरे की बुराई को बुराई के रूप में धारण नहीं करना है, समाना नहीं है। तो समझना और धारण करना - इसमें अन्तर है।

21/11/1992

दुआएँ दो और दुआएँ लो

ब्राह्मण परिवार और लौकिक संबंध-सम्पर्क में आते हो वा सेवा के संबंध में आते हो तो सर्व की दुआओं का खजाना मिलता है यह बहुत बडा खजाना है, यह खजाने से जो भरपुर वा सम्पन्न है उसको कभी भी पुरुषार्थ में मेहनत करनी नहीं पडती है। यह बडी तीव्र गति से आगे बढने का तेज यंत्र है वा श्रेष्ठ रॉकेट है ऐसी आत्मायें विघ्न प्रुफ बन जाती है। उनको युद्ध करनी नहीं पडती सहज योगयुक्त और युक्तियुक्त हर कर्म, बोल,संकल्प में सहज बन जाते हैं। जो संतुष्ट रह सभी को संतुष्ट करते हैं उनको ही दुआएँ मिलती है। और कुछ भी नहीं आता हो, कोई बात नहीं, भाषण करना नहीं आता हो कोई बात नहीं। सर्व गुण धारण करने में मेहनत लगती हो,

सर्व शक्ति को कन्ट्रोल करने में मेहनत लगती हो उसको भी छोड दो। लेकिन एक बात यह धारण करो कि दुआएँ सबको देनी है, दुआएँ लेनी है। इसमें कोई मेहनत नहीं करनी पडेगी करके देखो। एक दिन अमृतवेले से लेकर रात तक यही कार्य करो। फिर रात को चार्ट चेक करो कि सहज पुरुषार्थ रहा कि मेहनत रही। और कुछ नहीं करो लेकिन दुआएँ दो और दुआएँ लो इसमे सब आ जायेगा। दिव्य गुण, शक्तियाँ आपेही आ जायेगी। कोई आपको दुःख दे तो भी आपको दुआएँ देनी है। तो सहन शक्ति, समाने की शक्ति होगी न? सहनशीलता का गुण भी होगा न? अन्डरस्टुड है होगा। **दुआएँ देना और दुआएँ लेना यह बीज है इसमें झाड स्वतः समाया हुआ है और इसकी विधि है दो शब्द याद रखो - एक है शिक्षा दूसरी है क्षमा। शिक्षा देने की कोशिश बहोत करते हो लेकिन क्षमा करना नहीं आता, तो क्षमा करनी है। क्षमा करना ही शिक्षा देना हो जायेगा। इसलिए शिक्षा मत दो क्योंकि शिक्षा देते हो तो क्षमा भूल जाते हो। क्षमा करेंगे तो शिक्षा स्वतः आ जायेगी।** रहमदिल और दातापन के संस्कार धारण करेंगे तब ही दुआएँ दे सकेंगे

30/11/1992

मीठी दृष्टि और शुभ वृत्ति

मीठी दृष्टि और शुभ वृत्ति - यह एक मिनट में एक घण्टा समझाने का कार्य कर सकते हैं। आजकल यही विधि श्रेष्ठ है और अन्त में भी यही काम में आयेगी। फालो फादर करते जायेंगे। विघ्न को भी मनोरंजन समझकर चलते रहते हैं। **वाह ड्रामा वाह! चाहे किसी भी प्रकार का दृश्य हो लेकिन ‘वाह-वाह’ ही हो।** अच्छा ।

30/11/1992

साथ वही रहेंगे जो समान होंगे

जो समान स्थिति वाले हैं वे सदा बाप के साथ रहते हैं। शरीर से चाहे किसी कोने में बैठे हों, किनारे बैठे हों, पीछे बैठे हों लेकिन मन की स्थिति में साथ रहते हो ना। साथ वही रहेंगे जो समान होंगे। स्थूल में चाहे सामने भी बैठे हों लेकिन समान नहीं तो सदा साथ नहीं रहते, किनारे में रहते हैं। तो समीप रहना अर्थात् समान स्थिति बनाना। इसलिए सदा ब्रह्मा बाप समान पुरुषोत्तम स्थिति में स्थित रहो। कई बच्चों की चलन और चेहरा लौकिक रीति में भी बाप समान होता है तो कहते हैं - यह तो जैसे बाप जैसा है। तो यहाँ चेहरे की बात तो नहीं लेकिन चलन ही चित्र है। तो हर चलन से बाप का अनुभव हो - इसको कहते हैं बाप समान।

20/12/1992

एवररेडी बनना ही सेफ्टी का साधन है

कल विनाश हो जाए - इतने सम्पन्न बने हो? एवररेडी बनना ही सेफ्टी का साधन है। अगर समय मिलता है तो संगमयुग की मौज मनाओ लेकिन रहो एवररेडी। क्योंकि फाइनल विनाश की डेट कभी भी पहले मालूम नहीं पडेगी, अचानक होना है। एवररेडी नहीं होंगे तो धोखा हो जायेगा। इसलिए एवररेडी बनो। सदा यह याद रखो कि हम और बाप सदा साथ हैं। तो जैसे बाप सम्पन्न है वैसे साथ रहने वाले भी सम्पन्न हो जायेंगे। जब साथ का अनुभव करेंगे तो निरंतर योगी सहज बन जायेंगे। सदा साथ हैं, साथ रहेंगे और स्वीट होम में साथ चलेंगे। जो कम्पैनियन होंगे वे साथ चलेंगे और बाराती होंगे, देखने वाले होंगे तो पीछे-पीछे चलेंगे। समान बनने वाले ही साथ चलेंगे।

09/01/1993

गुप्त है तो सदा आगे है

बापदादा सभी स्थानों को एक-दो से आगे ही रखते हैं। ऐसे नहीं फलाना स्थान आगे है, दूसरा पीछे हैं। बाप के लिये सब आगे हैं। चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, लेकिन सब आगे हैं। और अगर गुप्त हैं तो सबसे आगे हैं। जैसे गुप्त दान महादान कहा जाता है। ऐसे अगर गुप्त पुरुषार्थी सदा आगे रहते हैं। गुप्त सेवाधारी सदा ही आगे है। तो सभी क्या याद रखेंगे? कौन हो? निरंतर सेवाधारी। सदा सेवा की स्टेज पर पार्ट बजा रहे हो। घर में नहीं, स्टेज पर हो। सेन्टर पर नहीं, स्टेज पर हो। तो स्टेज पर अलर्ट रहते हैं, घर में जायेंगे तो अलर्ट नहीं रहेंगे, अलबेले हो जायेंगे। स्टेज पर जायेंगे तो अलर्ट हो जायेंगे। तो सदा सेवा की स्टेज पर हैं - इस स्मृति से सदा अलर्ट रहना है। अच्छा।

18/11/1993

ड्रामा की नूँध

करन-करावनहार करनहार के साथ है ही, करावनहार अलग नहीं है। इसको ही कम्बाइन्ड स्थिति कहा जाता है। सभी अपना-अपना अच्छा पार्ट बजा रहे हो। अनेक आत्माओं के आगे सेम्पल हो, सिम्पल करने का। ऐसे लगता है ना। मुश्किल को सहज बनाना - यही फालो फादर है। ऐसे है ना। अच्छा पार्ट बजाया ना। जहाँ भी हैं, विशेष पार्टधारी विशेष पार्ट बजाने के सिवाए रह नहीं सकते। यह ड्रामा की नूँध है। अच्छा । चक्कर लगाना बहुत अच्छा है। चक्कर लगाया फिर स्वीट होम में आ गये। सेवा का चक्कर अनेक आत्माओं के प्रति विशेष उमंग-उत्साह का चक्कर है। सब ठीक है ना? अच्छा ही अच्छा है। ड्रामा की भावी खींचती

जरूर है। आप रहना चाहो लेकिन ड्रामा में नहीं है तो क्या करेंगे। सोचते भी जाना पडेगा। क्योंकि सेवा की भावी है तो सेवा की भावी अपना कार्य कराती है। आना और जाना यही तो विधि है। अच्छा।

02/12/1993

ऊँच ते ऊँच भगवान ने भाग्य बनाया

सभी अपने भाग्य को देख सदा हर्षित रहते हो? दिल में सदा ये गीत गाते हो कि वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य कि कभी-कभी गीत बजता है, कभी बंद हो जाता है? सदा एकरस गीत बजता है या कभी स्लो हो जाता है, कभी तेज हो जाता है? सदा भाग्य के गीत गाते रहो। क्योंकि ये भाग्य किसने बनाया? भाग्य विधाता ने भाग्य बनाया। ऊँच ते ऊँच भगवान ने भाग्य बनाया । तो जब स्वयं ऊँचे ते ऊँचा है तो भाग्य भी ऊँचा बनायेगा। तो यह नशा और खुशी रहे कि भगवान ने श्रेष्ठ भाग्य बना दिया और कितने जन्मों का भाग्य बनाया? जन्म-जन्म के लिए भाग्य बनाया। सिर्फ 21 जन्म नहीं लेकिन सारे कल्प के अंदर भाग्यवान रहे। 21 जन्म पूज्य बनते हो और फिर द्वापर से पुजारी आपकी पूजा करते हैं। तो वो चैतन्य पूज्य राज्य अधिकारी बनते हो और द्वापर से जड चित्र आप के पूजे जाते हैं। तो सारे कल्प का भाग्य है। अब अन्तिम जन्म में भी अपने यादगार देख रहे हो ना। एक तरफ चैतन्य में आप हो और दूसरे तरफ आपके ही जड चित्र हैं तो चित्र और चैतन्य दोनों सामने हैं। चित्र को देखकरके भी खुशी होती है ना तो ऐसे पूज्य बाप द्वारा बने हैं। सारे कल्प में कोई अपना चैतन्य रूप में जड चित्र देखे, यह नहीं होता। अगर देखते भी होंगे तो भिन्न जन्म होने के कारण जानते नहीं है। लेकिन आप जानते हो कि ये हमारे ही जड चित्र हैं। मातायें जानती हो? आप सबकी पूजा होती है? तो चित्र और चैतन्य यही विशेषता है। कल क्या थे, आज क्या हैं और कल क्या होंगे - तीनों ही काल सामने हैं।

02/12/1993

हम भाग्य विधाता के बच्चे हैं

घर बैठे बाप मिल गया। बाप के घर में तो पीछे आते हो, पहले तो घर बैठे बाप मिला। इतना सहज सोचा नहीं था लेकिन मिल गया। तो सदा यही याद रखना कि हम भाग्य विधाता के बच्चे हैं। सदा अपना भाग्य याद आने से खुश रहेंगे और खुशियाँ बाँटेंगे।

1993

राज्यपद और पूज्यपद

सदा अपने इस ब्राह्मण जीवन की आदि से अब तक की सर्व प्रप्तियाँ स्मृति में रहती हैं? अगर प्रप्तियों की लिस्ट निकालो तो कितनी लम्बी है? सार रूप में यही कहेंगे कि अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मण जीवन में। तो ऐसे अनुभव करते हो? सर्व प्राप्तियाँ सम्पन्न हो गये? और प्राप्तियाँ भी अविनाशी हैं। एक जन्म, आधा जन्म की नहीं, सदा काल के लिये प्राप्तियाँ प्राप्त हो गई। कोई भी युग नहीं जहाँ आप आत्माओं को कोई प्राप्ति नहीं हो। अगर द्वापर से गिरती कला शुरू भी होती है, फिर भी द्वापर से लेकर अब तक पूजे जाते हो ना। तो आधाकल्प राज्य अधिकारी बनते हो और आधा कल्प पूज्य बनते हो। चाहे स्वयं पुजारी बन जाते हो चैतन्य में लेकिन जड चित्र के रूप में तो पूजे जाते हो। तो पूज्य की प्राप्ति तो है ही ना। चाहे जानते नहीं हो अपने को लेकिन प्राप्ति सारे कल्प के लिये है। राज्य पद और पूज्य पद। कितने नशे की बात है। तो सदा सर्व प्राप्तियों की स्मृति में रहो, स्मृति स्वरूप रहो। तो प्राप्तियाँ याद रहती है कि कभी भूल जाती हैं, कभी याद रहती हैं? हद के प्राप्ति वालों को भी कितना नशा रहता है। तो आप को अविनाशी प्राप्तियाँ है तो अविनाशी रूहानी नशा है?

16/12/1993

उमंग-उत्साह

कैसी भी मुश्किल बात हो लेकिन उमंग-उत्साह मुश्किल को सहज कर देता है। उत्साह तूफान को भी तोहफा बना देता है, पहाड को भी राई नहीं लेकिन रुई बना देता है। उत्साह किसी भी परीक्षा वा समस्या को मनोरंजन अनुभव कराता है। इसलिए उमंग-उत्साह में रहने वाले नवयुग के आधारमूर्त नव जीवन वाले ब्राह्मण आत्मायें हो। अपने को जानते हो। मानते भी हो या सिर्फ जानते हो? क्या कहेंगे? जानते भी है, मानते भी है और उसी में चलते भी है। सदा यह उत्साह रहता है कि कल्प पहले भी हम ही थे, अब भी हैं और अनेक बार हम ही बनेंगे। तो अविनाशी उत्साह हो गया ना। थे, हैं और सदा होंगे - तीनों काल का हो गया ना। पास्ट, प्रेजन्ट और फ्युचर - तीन काल हो गये। तो अविनाशी हो गया ना।

31/12/1993

अच्छा हुआ ही पडा है

सदा विजयी आत्माओं का यादगार क्या है? विजय माला विजयी रत्नों की यादगार है। अनेक बार विजयी बने हैं तब तो यादगार बना है ना। अनेक बार के विजयी हैं - इस स्मृति से सदा समर्थ रहेंगे। जब अनेक बार किया हुआ कार्य है तो क्वेश्चन नहीं उठेगा कि कैसे करें, क्या

करें। कोई नई बात तो है ही नहीं। कोई नई बात सुनी जाती है या करनी होती है तो क्वेश्चन उठता है - ऐसे करें, कैसे करें...। तो आपकी आत्मा में अनगिनत बार करने के संस्कार भरे हुए हैं। क्या होगा - ये संकल्प नहीं, लेकिन अच्छा ही हुआ पडा है। बाबा कहा और बाप के साथ का अनुभव उसी सेकेण्ड, उसी संकल्प में होता ही है। सेकण्ड की बात है।

31/12/1993

बाप का बनना अर्थात परिवर्तन होना

हर कल्प में स्मृति स्वरूप बने हैं, अभी भी बने हैं और हर कल्प में बनते रहेंगे। कितने कल्पों का अभ्यास है? अनेक बार का अभ्यास है ना, अनेक बार किया है ना कि नई बात है? बाप का बनना अर्थात परिवर्तन होना। ब्राह्मण बनना अर्थात स्मृति स्वरूप बनना। इस अपने अनादि स्वरूप में स्थित होने से स्वयं भी स्वयं से सन्तुष्ट रहते और औरों को भी सन्तुष्टता की विशेषता अनुभव कराते हैं।

09/03/1994

वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य

जो भी भिन्न-भिन्न प्राप्तियाँ हैं, उन प्राप्तियों को समाने रखो। प्राप्ति को इमर्ज करने से प्राप्ति की खुशी की अनुभूति होगी। सिर्फ बाप मेरा है, नहीं, लेकिन बाप के साथ वर्सा भी मेरा है। बच्चे को प्रापर्टी की खुशी होती है ना। तो यह बेहद की प्रापर्टी है। बालक सो मालिक हूँ - इस खुशी में सदा रहो। कोटों में कोई और कोई में भी कोई जो गायन है वह किसका है? आप कोटों में कोई हो ना? बापदादा सभी बच्चों को इतना श्रेष्ठ आत्मा के रूप में देखते हैं। दुनिया भटक रही है और आप मौज मना रहे हो। मौज में रहते हो ना कि अभी भी यहाँ वहाँ भटकते हो? ठिकाना मिल गया ना? तो दिन-रात खुशी में नाचते रहो, खुशी में सो जाओ। अगर जीवन है तो ब्राह्मण जीवन है। तो स्वयं के महत्व को सदा स्मृति में रखो। क्या थे और क्या बन गये। श्रेष्ठ बन गये ना। अपने इस श्रेष्ठ भाग्य को कर्म करते हुए भी स्मृति में रखो। वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य। दिल में यह आता है? इसलिये अपना बर्थ डे मनाने आये हो ना। अपना भी बर्थ डे मनाने आये या सिर्फ बाप का मनाने आये हो? ये दिव्य जन्म कितना न्यारा भी है और प्यारा भी है! क्योंकि बाप के प्यारे बने हो ना। जो भगवान के प्यारे हैं उसके जीवन में प्यार हर समय है। तो दिल से यही गीत गाते रहो - वाह बाबा वाह और वाह मेरा भाग्य वाह! अच्छा।

09/03/1994

बापदादा को साधारण आत्मायें ही पसन्द है

बापदादा देख रहे हैं कि दुनिया के हिसाब से आत्मायें कितनी साधारण हैं लेकिन भाग्य कितना श्रेष्ठ है। जो सारे कल्प में, चाहे कोई धर्म आत्मा हो, महान आत्मा हो लेकिन ऐसा श्रेष्ठ भाग्य न तो किसी को प्राप्त है, न हो सकता है। तो अति साधारण और अति श्रेष्ठ भाग्यवान! बापदादा को साधारण आत्मायें ही पसन्द है -क्यों? बाप स्वयं भी साधारण तन में आते हैं। कोई राजा के तन में या रानी के तन में नहीं आते। कोई धर्मात्मा, महात्मा के तन में नहीं आते। साधारण तन में स्वयं भी आते हैं और बच्चे भी साधारण ही आते हैं। आज का करोडपति भी साधारण है। साधारण बच्चों में भावना है। और बाप को भावना चाहिए, देहभान वाले नहीं चाहिए।

17/11/1994

गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ

माया कभी भी न आये इसका सहज साधन है कि सदा गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ में रहो, स्टडी, स्टडी, स्टडी। और कोई बातों में नहीं जाना। अगर कर्मणा सेवा भी करते हो तो वो भी स्टडी की सब्जेक्ट है। खाना बनाना भी स्टडी है। कर्मयोगी का पाठ है, तो पढाई हुई ना? तो कुमारी जीवन में सफलता का आधार है स्टूडेन्ट लाइफ। और बातों में जाना ही नहीं है, रास्ता बन्द।

05/12/1994

ब्राह्मण परिवार में हर परिस्थिति में निश्चय बुद्धि

कई बार कई कहते हैं बापदादा तो बहुत अच्छा, वो तो पक्का है कि बाप है और हम बच्चे हैं, हमारा बाप से ही सम्बन्ध है लेकिन दैवी परिवार में खिटखिट होती है, उसमें निश्चय डगमग हो जाता है इसीलिये परिवार को छोड देते हैं, हल्का कर देते हैं। तो एक साइड ढीला हो गया ना। बिना परिवार के माला में कैसे आयेंगे? माला कब बनती है? जब दाना दाने से मिलता है, और एक ही धागे में पिरोये हुए होते हैं। अगर अलग-अलग धागे में अलग-अलग दाना हो तो उसको माला नहीं कहेंगे। तो परिवार है माला। अगर परिवार को छोडकर तीन निश्चय पक्के हैं तो भी विजय निश्चित नहीं है। चलो परिवार की खिटखिट से किनारा कर लो, बाप का सहारा हो, परिवार का किनारा हो, तो चलेगा? काम तो बाप से है या भाईयों से है? बाप से काम है, वर्सा बाप से मिलना है, भाई-बहनों से क्या मिलेगा? लेकिन ब्राह्मण जीवन में यही न्यारापन है कि धर्म और राज्य दोनों की स्थापना होती है, सिर्फ धर्म की नहीं और धर्म

पितायें सिर्फ धर्म की स्थापना करते हैं, बाप की विशेषता है धर्म और राज्य की स्थापना करना। तो राज्य में एक राजा क्या करेगा? बहुत अच्छा तख्त भी हो, ताज भी हो, क्या करेगा? राजधानी भी चाहिए ना? तो राजधानी अर्थात् ब्राह्मण परिवार सो राज परिवार। इसलिए ब्राह्मण परिवार में हर परिस्थिति में निश्चयबुद्धि, तब राज्य-भाग्य में भी सदा राज्य अधिकारी होंगे। तो ऐसे नहीं समझना - कोई बात नहीं, परिवार से नहीं बनती है, बाप से तो बनती है! ड्रामा अगर भूल जाता है तो बाप तो सदा रहता ही है! लेकिन कोई भी कमजोरी एक ही समय पर होती है, स्व स्थिति अर्थात् स्व-निश्चय भी अगर कमजोर होता है तो विजय निश्चित के बजाय हलचल में आ जाती है। तो बपदादा निश्चय के फाउण्डेशन को चेक कर रहे थे। क्या देखा?

09/01/1995

जितना बेहद सहन, उतना बेहद की दुआएँ

बापदादा तो ब्राह्मणों के लिये और अण्डरलाईन कराते हैं कि त्याग का भी त्याग करे। 'मैं त्यागी हूँ ' - इस अभिमान का भी त्याग। इसको कहा जाता है त्याग का भी त्याग। मैंने किया, सहन किया, ये किया, ये किया - ये कथायें नहीं करो। अगर किसने सहन भी किया तो सहन के पीछे शक्ति है। सिर्फ सहन नहीं है, सहन करना अर्थात् शक्ति धारण करना, इसलिए सहनशक्ति कहते हैं। सहन करना अर्थात शक्ति रूप को प्रत्यक्ष रूप दिखाना। तो अच्छा ही हुआ ना। क्या सहन किया? और ही लाभ ले लिया ना! और किसके प्रति सहन किया? बाप के आज्ञाकारी बनने के लिये सहन किया दूसरे के लिये नहीं सहन किया। बाप की आज्ञा मानी। तो आज्ञा की दुआएँ मिलेगी ना! तो सहन क्या किया? दुआएँ ली ना! बात को सामने रखते हो तो सोचते बहुत सहन किया, कब तक सहन करेंगे, सहन करने की भी कोई हद होनी चाहिए। लेकिन जितना बेहद सहन, उतनी बेहद की दुआएँ। क्योंकि बाप के आज्ञाकारी बन रहे हैं। बाप ने कहा है सहन करो। तो आज्ञा को माानना खुशी की बात है या मजबूरी की बात है? मजबूरी से सहन नहीं करो। कोई सहन करते भी हैं तो कहते भी हैं कि मेरे जैसा कोई सहन नहीं करता। फिर दादियों को आकर बाताते हैं - आपको नहीं पता हमने कितना सहन किया! लेकिन नुकसान क्या किया! फायदा ही इकट्ठा हुआ।

19/01/1995

एडजस्ट करने की पावर सदा विजयी बना देती है

आदत ऐसी होनी चाहिए जो सबमें एडजस्ट कर सके। एडजस्ट करने की पॉवर सदा विजयी बना देती है। ब्रह्मा बाप को देखा तो बच्चों से बच्चा बनकर एडजस्ट हो जाता, बडों से

बडा बनकर एडजस्ट हो जाता। चाहे बेगरी लाइफ, चाहे साधनों की लाइफ, दोनों में एडजस्ट होना और खुशी-खुशी से होना, सोचकर नहीं। यहाँ दुःखी तो नहीं होते हो लेकिन खुशी के बजाय थोडा सोच में पड जाते हो - ये क्या हुआ, कैसे हुआ...। तो सोचने वाले को एडजस्ट होने के मजे में कुछ समय लग जाता है। अपने को चेक करो कि कैसी भी परिस्थिति हो, चाहे अच्छी हो, चाहे हिलाने वाली हो लेकिन हर समय, हर सरकमस्टांस के अंदर अपने को एडजस्ट कर सकते हें? डबल फॉरेनर्स को अकेलापन भी अच्छा लगता है और कम्पैनियन भी बहुत अच्छे लगते हैं। लेकिन कम्पनी में हो या अकेले हो, दोनों में एडजस्ट होना - ये है ब्राह्मण जीवन। ऐसे नहीं, संगठन हो और माथा भारी हो जाये - नहीं, मुझे एकांत चाहिए, ये घमासान में नहीं, मुझे अकेला चाहिए...। मन अकेला अर्थात् बाहरमुखता से अन्तर्मुख में चले जाओ तो अकेलापन है। कोई-कोई कहते हैं ना - अकेला कमरा चाहिए, दो भी नहीं चाहिए। अकेला मिले तो भी मौज से सोओ और दस के बीच में भी सोना हो तो मौज से सोओ। फॉरेनर्स दस के बीच सो सकते हैं कि मुश्किल है? सो सकते हैं? (हाँ जी) अच्छा, अभी अगले वर्ष 20-20 को सुलायेंगे। देखो, समय बदलता रहता है और बदलता रहेगा। दुनिया की हालतें नाजुक हो रही हैं और भी होंगी। होनी ही है। अभी सिर्फ एक स्थान पर अलग-अलग होती हैं, आखिर में सब तरफ इकट्ठी होगी। तो नाजुक समय तो आना ही है। समय नाजुक हो लेकिन आपकी नेचर नाजुक नहीं हो। कईयों की नेचर बहुत नाजुक होती है ना, थोडा-सा आवाज हुआ, थोडा-सा कुछ हुआ तो डिस्टर्ब हो गये। इसको कहते हैं नाजुक स्थिति, नाजुक नेचर। तो नाजुक नेचर नहीं हो। जैसा समय वैसा आपको एडजस्ट कर सको। ये अभ्यास आगे चलकर बहुत काम में आयेगा। क्योंकि हालतें सदा एक जैसी नहीं रहनी है। और **फाइनल पेपर आपका नाजुक समय पर होना है। आराम के समय पर नहीं होना है। नाजुक समय पर होना है। तो जितना अभी से अपने को एडजस्ट करने की शक्ति होगी तो नाजुक समय पर पास विद् ऑनर हो सकेंगे। पेपर बहुत टाइम का नहीं है, पेपर तो बहुत थोडे समय का है लेकिन चारों ओर की नाजुक परिस्थितियाँ, उनके बीच में पेपर देना है। इसलिये अपने को नेचर में भी शक्तिशाली बनाओ।** क्या करें, मेरी नेचर ये है, मेरी आदत ही ऐसी है, ये नहीं। इसको नाजुक नेचर कहा जाता है। देखो, बापदादा ने स्थापना के आदि में सब अनुभव करा लिया। जब आदि हुई तो राजकुमार और राजकुमारियों से भी ज्यादा पालना, साधन सब अनुभव कराया और आगे चलकर बेगरी लाइफ का भी पूरा अनुभव कराया। तो जिन्होंने अनुभव किया उनकी आदत बन गई। तो आप लोंगों के आगे तो ऐसा समय आया ही नहीं है लेकिन आना है। जहाँ भी रहते हो, सभी हिलने हैं, सब आधार टूटने हैं। तो ऐसे टाइम पर क्या चाहिए? एक ही बाप का आधार। आप लोग तो बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो, जो आने का

समय आपका सहज साधनों का है। सहज साधनों के साथ-साथ आपका ब्राह्मण जन्म है। लेकिन साधन और साधना - साधनों को देखते साधना को नहीं भूल जाना। क्योंकि आखिर में साधना ही काम में आनी है। समझा?

26/02/1995

कोई भी सेवा करो लेकिन सेवाधारी बन सेवा करो

कोई मुख से भाषण करते, कोई मन से करते। सिर्फ भाषण करना सेवा नहीं है। ये भी एक विधि है। लेकिन चाहे मन्सा करो, चाहे वाचा करो, चाहे कर्मणा करो, सम्बन्ध-सम्पर्क से करो, चारों ही के मार्क्स 100 हैं। 100 सभी की मार्क्स है। कर्मणा वालों को 50 मिलेगा, भाषण वालों को 100 मिलेगा, ऐसा नहीं है। कोई भी सेवा करो लेकिन सेवाधारी बन सेवा करो, निःस्वार्थ सेवा करो तो सेवा का मेवा मिला हुआ ही है। ऐसे समझते हो ना? या बडी-बडी कान्फ्रेन्स में भाषण करना ही सेवा है? वो तो एक-दो ही जायेंगे ना, इतने लाखों के लाख चले जायें तो भाषण ही कैसे होगा। सुनाने वाले 3 लाख और सुनने वाले 100 वो कैसे होगा। तो ऐसे कभी नहीं समझना कि मेरे को सेवा का चांस नहीं मिला तो मैं सेवा के योग्य नहीं हूँ। कभी भी दिलशिकस्त नहीं होना। बापदादा के पास सब रिकॉर्ड होते हैं। चांस मिला, नहीं मिला, लेकिन मंसा का चांस ले लिया तो वो चक्कर लगाकर भाषण करके आई, आपने मंसा सेवा किया तो मार्क्स आपको वैसे ही मिलेंगे। इसीलिये कभी यह फिक्र नहीं करना कि मेरा तो भाग्य ही ऐसा है। नहीं, बहुत बडा भाग्य है। सन्तुष्ट रहना, चाहे कर्मणा हो, चाहे वाचा हो, चाहे मंसा हो, संतुष्ट रहना इसमें मार्क्स मिलनी है। भाषण में गये असंतुष्ट हो गये, खिटखिट हो गई, खत्म, मार्क्स एक भी नहीं। आप घर बैठे बहुत अच्छी स्थिति में रहे तो आपको 100 मार्क्स मिलेगी। तो हिसाब पूरा है। हिसाब में ऊपर-नीचे नहीं होगा, आपको फुल मार्क्स मिलेंगी। कोई भी सेवा करो लेकिन सच्चे दिल से। मैं और मेरापन नहीं। सेवाभाव। मैं-पन का भाव नहीं। अगर सेवाभाव है तो आपको फल पहले मिलेगा। चाहे सादा रोटी पकाते हो, कोई हर्जा नहीं। तो भी 100 मार्क्स मिलेंगी। सच्चे दिल से करते हैं ना। तो रोटी बनाते हुए आप जो बल भरते हो ना वही भाषण में काम में आता है। समझा। इसीलिये दिलशिकस्त नहीं होना, मेरा नाम कभी भी कोई कान्फ्रेन्स में नहीं आया, मेरा नाम ही कोई नहीं लेता, शायद मैं पीछे हूँ...। नहीं, संतुष्ट रहो, **सन्तुष्टता ही सफलता का साधन है।** कहाँ भी रहो सन्तुष्ट रहो। ठीक है ना कि कभी-कभी सोचते हो कि महारथी तो यही बनेंगे। हम तो महारथी की लिस्ट में आ नहीं सकते। नहीं, पहले नम्बरवन महारथी आप हो। बाप की लिस्ट में महारथी आप हो। समझा। तो कभी ऐसा-

ऐसा फेस नहीं करना। बापदादा बहुत फेस देखते हैं, कभी ऐसा, कभी ऐसा। नहीं, सदा मुस्कराते रहो। अच्छा।

07/03/1995

परमात्मा बाप के बच्चे हो

वैसे भी देखो जो बहुत प्यारे होते हैं, लाडले बच्चे होते हैं तो माँ-बाप उनको मिट्टी में जाने नहीं देते, धरनी पर पाँव रखने नहीं देते। तो आप कितने लाडले हो या और आने वाले हैं? आप हो। तो तख्त को छोडकर साधारण स्वरूप, साधारण संकल्प ... इस मिट्टी में या धरनी में पाँव नहीं रखो। बुद्धि रूपी पाँव सदा तख्तनशीन हो। परमात्म बाप के बच्चे हो। महात्मा, धर्मात्मा के नहीं हो, परम आत्मा के हो।

31/03/1995

सेवा का भाग्य

जो भी चारों ओर सेवा में निमित्त रहते हैं उन सबको बापदादा श्रेष्ठ सेवा के भाग्यवान समझते हैं। सेवा का भाग्य प्राप्त होना ये बहुत बडा भाग्य है। सेवा में प्रत्यक्ष फल प्राप्त होने का अनुभव बहुत सहज होता है। अभी-अभी सेवा की और अभी-अभी स्थिति में आगे बढते रहे। अगर निःस्वार्थ सेवा की तो सेवा का फल मिलता है। स्वार्थ का फल नहीं मिलता है। लेकिन आप सभी सेवाधारी हो इसलिये सेवा का फल अवश्य मिलता है। भविष्य तो कुछ भी नहीं है, अभी का प्रत्यक्ष फल आत्मा को उडती कला का बल देता है। इसलिये बापदादा निमित्त सेवाधारियों को देख खुश होते हैं। तो श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मायें हैं और सदा अपने को श्रेष्ठ भाग्य द्वारा अनेकों के भाग्य को जगाते रहेंगे। अच्छे हैं, अथक सेवा करते हैं। **बापदादा के पास सबका रिकॉर्ड है। ऐसे नहीं, बापदादा के पास तो हम जाते ही नहीं, आते ही नहीं, पता ही नहीं... ये तो नहीं सोचते। जो गुप्त है वो सदा नयनों में हैं। गुप्त नहीं रह सकते हो, बाप के आगे प्रत्यक्ष हो। चाहे नाम हो, नहीं हो, सामने आओ, नहीं आओ, लेकिन सामने के बजाय नयनों में समाये हो।** समझा।

06/04/1995

हद के नाम के पीछे नहीं जाओ

आपका नाम विश्व में जितना ऊँचा है उतना और किसका है? तो आप अपने नाम को देखो।। सबसे नाम की विशेषता ये है कि आपका नाम कौन जपता है? स्वयं भगवान आपका नाम जपता है। तो इससे बडा नाम क्या होगा। आपके नाम से अभी लास्ट जन्म में भी अनेक

आत्मायें अपना शरीर निर्वाह चला रही हैं। आप ब्राह्मण हो ना, तो ब्राह्मणों के नाम से आज भी नामधारी ब्राह्मण कितना कमा रहे हैं। अभी तक नामधारी ब्राह्मण भी कितना ऊँच गाये जाते हैं। तो आपके नाम की कितनी महिमा है। इतना श्रेष्ठ नाम आपका हो गया, इसीलिये हद के नाम के पीछे नहीं जाओ। मेरा नाम तो कभी किसी में लेते ही नहीं, मेरा नाम सदा पीछे ही रहता है, सेवा मैं करती हूँ नाम दूसरे का हो जाता है...., तो हद के नाम के पीछे नहीं जाओ। बाप के दिल में आपका नाम सदा ही श्रेष्ठ है। जब बाप के दिल में नाम हो गया तो कोई सेवा में या कोई प्रोग्राम में या कोई भी बातों में आपका नाम नहीं भी आया तो क्या हर्जा, बाप के पास तो है ना! जैसे भक्तिमार्ग में हनुमान का चित्र दिखाते हैं ना तो उसके दिल में क्या था? राम था। और बाप के दिल में क्या है? (बच्चे) तो बच्चों में आप हो या नहीं हो? तो सभी का नाम है! देखा है, पक्का? कभी मिस हो गया हो तो! आप सभी का नाम है! तो और नाम के पीछे क्यों पडते हो? क्योंकि मैजारिटी यही नाम-मान-शान गिराता भी है और यही नाम-मान-शान नशा भी चढाता है। तो प्राप्ति के रूप में देखो। अगरमानो कोई कारण से आपका नाम गुप्त है और आप समझते हो कि मेरा नाम होना चाहिए, यथार्थ है फिर भी अगर किसी आत्मा से हिसाब-किताब के कारण या उसके संस्कार के कारण आपका नाम नहीं होता है, आप राइट हो, वो रांग है फिर भी उसका नाम होता है, आपका नहीं, तो विजय माला में आपका नाम निश्चित है। इसीलिये इसकी भी परवाह नहीं करो। इस रूप में माया ज्यादा आती है इसलिये अभी गलती से नाम मिस हो भी गया, कोई हर्जा नहीं लेकिन विजयमाला में आपका नाम मिस नहीं हो सकता। पहले आपका नाम होगा। तो अपने नाम की महिमा याद रखो कि मेरा नाम बाप के दिल पर है, विजय माला में हैं, अन्त तक मेरा नाम सेवा कर रहा है। और आपका मान कितना है? भगवान ने भी अपको अपने से आगे रखा है! पहले बच्चे। तो स्वयं बाप ने मान दे दिया। कितना आपका मान है, उसका प्रुफ देखो कि आपके जड चित्रों का भी लास्ट जन्म तक कितना मान है! चाहे जाने, नहीं जाने लेकिन कोई भी देवी-देवता का चित्र होगा तो कितने मान से उसको देखते हैं! सबसे श्रेष्ठ मान अब तक आपके चित्रों का भी है। ये प्रुफ है। जब आपके चित्र ही इतने माननीय, पूजनीय हैं तो जिसका मान रखा जाता है उसको पूजनीय माना जाता है। हमेशा कहते हैं ना - यह हमारे पूजनीय हैं, पूज्य हैं। तो प्रैक्टिकल प्रुफ है कि आपके चित्रों का भी मान है तो चैतन्य में हैं तो भी चित्रों का मान है। अगर चैतन्य में मान नहीं होता तो चित्रों को कैसे मिलता? बाप तो सदा कहते हैं- पहले बच्चे। बच्चे डबल पूजे जाते हैं, बाप सिंगल। तो बाप का मान आपसे ज्यादा हुआ ना! इतना श्रेष्ठ मान मिल गया! तो जब भी कोई हद के मान की बात आये तो सोचना कि आत्माओं का मान कया करेगा जब परमात्मा का मान मिल गया। ऐसे नहीं सोचो - कि हम इतना कुछ करते हैं फिर भी मान नहीं देते, पूछते ही नहीं हैं। ये सोचना व्यर्थ हैं। क्योंकि जितना

आप हद के मान के पीछे दौड लगायेंगे ना तो ये हद की कोई भी चीज परछाई के समान है। परछाई के पीछे पडने से कभी परछाई मिलती है कि और आगे बढती जाती है? तो ये हद का मान, हद का नाम - ये परछाई है। ये माया के धूप में दिखाई देती है लेकिन है कुछ भी नहीं। तो नाम भी आपको मिल गया, मान भी आपको मिला हुआ है और शान कितना है! अपने एक-एक शान को याद करो और किसने शान में बिठाया? बाप ने बिठाया। बाप के दिलतख्तनशीन हैं। सबसे बडे ते बडी शान राज्य पद है ना! तो आपको तख्त-ताज मिल गया है ना! जो परमात्मा के तख्तनशीन हैं इससे बडी शान क्या हैं!

कभी-कभी निर्णय करने में एक छोटी-सी गलती कर देते हो। जो रीयल शान है, रुहानी शान है वो कभी भी अभिमान की फीलिंग नहीं देगा। तो कभी-कभी क्या करते हो? होता अभिमान है लेकिन समझते हो कि ये शान तो अपना रखना चाहिये, इतना शान तो रखना चाहिए ना, शान में रहना अच्छा होता है, लेकिन शान है या अभिमान है, उसको अच्छी तरह से चेक करो। कभी-कभी अभिमान को शान समझ लेते हैं और फिर निर्मान नहीं होते हैं। आप अपने शान को रीयल समझते हो लेकिन दूसरे समझते हैं कि ये अभिमान है तो थोडा भी कुछ कह देंगे तो आपको अपमान लगेगा। अभिमान वाले को अपमान बहुत जल्दी फील होगा। थोडा भी किसने हंसी में कुछ कह दिया तो अपमान लगेगा। ये अभिमान की निशानी है। सोचेंगे - नहीं, मैं तो ऐसा हूँ नहीं, ऐसे थोडे ही कहना चाहिये। तो निर्णय ठीक करो। उस समय निर्णय में कमी कर लेते हो। यथार्थ के बजाय मिक्स होता है और आप उसको यथार्थ समझ लेते हो। तो कहने में आता है कि ये हैं बहुत अच्छे लेकिन बोलचाल, उठना, बैठना जो है ना वो अभिमान का लगता है। ये भी किसी ने कहा तो अपमान की फीलिंग आ जायेगी। तो स्वमान और अभिमान के अंतर को भी चेक करो। स्वमान कितना बडा है, शान कितनी बडी है, उस बेहद के नाम, मान और शान को सदा इमर्ज रखो। मर्ज नहीं, इमर्ज रखो। जैसे याद में कभी-कभी अलबेलापन आ जाता है तो कहते हैं हम हैं ही बाप के, याद क्या करें.... । लेकिन इमर्ज संकल्प से प्राप्ति का अनुभव होता है। ऐसे ही धारणा में अलर्ट रहो, अलबेले नहीं बनो। क्योंकि समय समीप आ रहा है और समय समीप क्या सूचना दे रहा है? समान बनो, सम्पन्न बनो। तो समय की चैलेन्ज को देखो। आपको कोई भी अप्राप्ति नहीं है। और क्या प्राप्ति होती है? अगर स्थूल रीति से देखो तो तन्दुरस्ती चाहिये, सम्पत्ति चाहिये, सम्बन्ध चाहिये - यही प्राप्ति में चाहिए ना। तो आपकी आत्मा कितनी तन्दुरस्त है? आत्मा में लो ब्लड प्रेशर, हाई ब्लड प्रेशर होता है क्या? नहीं, सदा तन्दुरस्त। क्योंकि अमृतवेले हर रोज बापदादा सदा तन्दुरस्त भव का वरदान देता है। शरीर का

तो हिसाब-किताब है लेकिन आत्मा सदा तन्दुरस्त। आत्मा को कोई बीमारी नहीं है। तो आत्मा की तन्दुरस्ती है ना? कि कभी-कभी बीमार पड जाते हो?

16/03/1995

जो गुप्त है वो सदा नयनों में है

जो भी चारों ओर सेवा में निमित्त रहते हैं उन सबको बापदादा श्रेष्ठ सेवा के भाग्यवान समझते हैं। सेवा का भाग्य प्राप्त होना ये बहुत बडा भाग्य है। सेवा में प्रत्यक्ष फल प्राप्त होने का अनुभव बहुत सहज होता है। अभी-अभी सेवा की और अभी-अभी स्थिति में आगे बढते रहे। अगर निःस्वार्थ सेवा की तो सेवा का फल मिलता है। स्वार्थ का फल नहीं मिलता है। भविष्य तो कुछ नहीं है। अभी का प्रत्यक्षफल आत्मा को उडती कला का बल देता है। इसलिये बापदादा निमित्त सेवाधारियों को देख खुश होते हैं। तो श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मायें हैं और सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य के द्वारा अनेकों के भाग्य को जगाते रहेंगे। अच्छे हैं, अथक सेवा करते हैं। बापदादा के पास सबका रिकॉर्ड है। ऐसे नहीं, बापदादा के पास तो हम जाते ही नहीं, आते ही नहीं, पता ही नहीं.... ये तो नहीं सोचते। **जो गुप्त हैं वो सदा नयनों में हैं।** गुप्त नहीं रह सकते हो। बाप के आगे प्रत्यक्ष हो। चाहे नाम हो, नहीं हो, सामने आओ, नहीं आओ, लेकिन सामने के बजाय नयनो में समाये हो। समझा?

06/04/1995

समय समाप्त अचानक होना है

समय समाप्त होने के पहले बहुत काल का मायाजीत बनने का अभ्यास चाहिये। अंत में नहीं हो सकेगा। अगर अंत में मायाजीत बनने का परुषार्थ भी करेंगे तो क्या हाल होगा?

समय अचानक समाप्त होना है, बताकर नहीं होना है। बापदादा ने तो पहले ही कह दिया है कि कोई उल्हना नहीं देना - बाबा, आपने बताया क्यों नहीं? बाप कभी टाईम कॉन्सेस नहीं बनायेगा।

समय समाप्त अचानक होना है। अशररीरी होने का अभ्यास होगा तो फौरन ही समय की समाप्ति का वायब्रेशन आयेगा। इसलिये अभी से अभ्यास बढाओ। ऐसे नहीं, अगले साल में डायमण्ड जुबली है तो अब नहीं करना है, पीछे करना है। जितना बहुत काल एड करेंगे उतना राज्य-भाग्य के प्राप्ति में भी नम्बर आगे लेंगे। अगर बीच-बीच में यह अभ्यास करेंगे तो स्वतः ही शक्तिशाली स्थिति सहज अनुभव करेंगे। ये छोटी-छोटी बातों में जो पुरुषार्थ करना पडता है वो सब सहज समाप्त हो जायेगा।

06/04/1995

विशेषता का दाता कौन?

व्यक्ति के सेवा की विशेषता का दाता कौन? वो व्यक्ति या बाप देता है? कौन देता है? तो व्यक्ति बहुत अच्छा है, अच्छा है वो ठीक है लेकिन जब कोई भी विशेषता को देखते हैं, गुणों को देखते हैं, सेवा को देखते हैं तो दाता को नहीं भूलो। वह व्यक्ति भी लेवता है, दाता नहीं है। बिना बाप का बने उस व्यक्ति में ये सेवा का गुण या विशेषता आ सकती है? या वह विशेषता अज्ञान से ही ले आता है? ईश्वरीय सेवा की विशेषता अज्ञान में नहीं हो सकती। अगर अज्ञान में भी कोई विशेषता या गुण है भी लेकिन ज्ञान में आने के बाद उस गुण वा विशेषता में ज्ञान नहीं भरा तो वो विशेषता वा गुण ज्ञान मार्ग के बाद इतनी सेवा नहीं कर सकता। नेचरल गुण में भी ज्ञान भरना ही पडेगा। तो ज्ञान भरने वाला कौन? बाप। तो किसकी देन हुई, दाता कौन? तो आपको लेवता अच्छा लगता है या दाता अच्छा लगता है? तो लेवता के पीछे क्यों भागते हो?

सोने समय बापदादा को सारे दिन का पोतामेल देकर, खाली बुद्धि हो करके नींद की? ऐसे नहीं कि थके हुए आये और बिस्तर पर गये और गये - ये अलबेलापन है। चाहे विकर्म नहीं किया और संकल्प भी नहीं किया लेकिन ये अलबेलेपन की सजा है। क्योंकि **बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपनी बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा, सब बाप के हवाले करो और अपनी बुद्धि को खाली करो।** दे दिया बापको और बाप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं। अकेले सोते हो ना तभी स्वप्न आते हैं। अगर बाप के साथ सोओ तो कभी ऐसे स्वप्न भी नहीं आ सकते। लेकिन फरमान को नहीं मानते हो तो फरमान के बदले अरमान मिलता है। सुबह को उठकर के दिल में अरमान होता है ना कि मेरी पवित्रता स्वप्न में खत्म हो गई। ये कितना अरमान है! कारण है अलबेलापन। तो अलबेले नहीं बनो। जैसे आया वैसे यहाँ-वहाँ की बातें करते-करते सो जाओ, क्योंकि समाचार तो बहुत होते हैं और दिलचश्प समाचार तो व्यर्थ ही होते हैं। कई कहते हैं - और तो टाइम मिलता ही नहीं, जब साथ में एक कमरे में जाते हैं तो लेन-देन करते हैं। लेकिन कभी भी व्यर्थ बातों का वर्णन करते-करते सोना नहीं, ये अलबेलापन है। ये फरमान को उल्लंघन करना है। अगर और टाइम नहीं है और जरूरी बात है तो सोने वाले कमरे में नहीं, लेकिन कमरे के बाहर दो सेकण्ड में एक-दो को सुनाओ, सोते-सोते नहीं सुनाओ। कई बच्चों की तो आदत है, बापदादा तो सभी को देखते हैं ना कि सोते कैसे हैं? एक सेकण्ड में बापदादा सारे विश्व का चक्कर लगाते हैं, और टी.वी. से देखते हैं कि सो कैसे रहे है, बात कैसे कर रहे हैं.... सब बापदादा देखते हैं। बापदादा को तो एक सेकण्ड लगता है, ज्यादा टाइम नहीं लगता। हर एक सेन्टर, हर एक प्रवृत्ति वाले सबका चक्कर लगाते

हैं। ऐसे नहीं सिर्फ सेन्टर का, आपके घरों का भी टी.वी. में आता है। तो जब आदि अर्थात् अमृतवेला और अन्त अर्थात् सोने का समय अच्छा होगा तो मध्य स्वतः ही ठीक होगा। समझा? और बातें करते-करते कई तो बारह-साढे बारह भी बजा देते हैं। मस्त होते हैं, उनको टाइम का पता ही नहीं। और फिर अमृतवेले उठकर बैठते हैं तो आधा समय निद्रालोक में और आधा समय योग में। क्योंकि जो अलबेले होकर सोये तो अमृतवेला भी तो अलबेला होगा ना! ऐसे नहीं समझना कि हमको तो कोई देखता ही नहीं है। बापदादा देखता है। यह निद्रा भी बहुत शान्ति वा सुख देती है, इसीलिए मिक्स हो जाता है। अगर पूछेंगे तो कहेंगे - नहीं, मैं बहुत शान्ति का अनुभव कर रहा था। देखो, नींद को भी आराम कहा जाता है। अगर कोई बीमार भी होता है तो डॉक्टर लोग कहते हैं - आराम करो। आराम क्या करो? नींद करो टाइम पर। तो निद्रा भी आराम देने वाली है। फ्रेश तो करती है ना। तो नींद से फ्रेश होकर उठते हैं ना तो कहते हैं आज (योग में) बहुत फ्रेश हो गये। अच्छा!

16/11/1995

जब बाप के दिल पर नाम है तो और क्या चाहिए

स्वचिन्तन अर्थात् अपनी सूक्ष्म कमजोरियों को, अपनी छोटी-छोटी गलतियों को चिन्तन करके मिटाना, परिवर्तन करना, ये स्वचिन्तन है। बाकी ज्ञान सुनना और सुनाना उसमें तो सभी होशियार हो। वो ज्ञान का चिन्तन है, मनन है लेकिन स्वचिन्तन का महीन अर्थ अपने प्रति है। क्योंकि जब रिजल्ट निकलेगी तो रिजल्ट में यह नहीं देखा जायेगा कि इसने ज्ञान का मनन अच्छा किया या सेवा में ज्ञान को अच्छा यूज किया। इस रिजल्ट के पहले स्व-चिन्तन और परिवर्तन, स्व-चिन्तन करने का अर्थ ही है परिवर्तन करना। तो जब फाइनल रिजल्ट होगी, उसमें पहली मार्क्स प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप को मिलगी। जो धारणा स्वरूप होगा वो नैचरल योगी तो होगा ही। अगर मार्क्स ज्यादा लेनी है तो पहले जो दूसरों को सुनाते हो, आजकल वैल्यूज पर जो भाषण करते हो, उसकी पहले स्वयं में चेकिंग करो। क्योंकि सेवा की एक मार्क तो धारणा स्वरूप की 10 मार्क्स होती हैं, अगर आप ज्ञान नहीं दे सकते हो लेकिन अपनी धारणा से प्रभाव डालते हो तो आपके सेवा की मार्क्स जमा हो गई ना।

जो सच्चा सेवाधारी है उस सेवाधारी को चलो और कोई सेवा नहीं मिली लेकिन बापदादा कहते हैं अपने चेहरे से, अपने चलन से सेवा करो। आपका चेहरा बाप का साक्षात्कार कराये। आपका चेहरा, आपकी चलन बाप की याद दिलावे। ये सेवा नम्बरवन है। ऐसे सेवाधारी जिनमें स्वार्थ भाव नहीं हो। ऐसे नहीं मुझे ही चांस मिले, मेरे को ही मिलना चाहिए। क्यों नहीं मिलता, मिलना चाहिए- ऐसे संकल्प को भी स्वार्थ कहा जाता है। चाहे ब्राह्मण परिवार में

आपका नाम नामीग्रामी नहीं है, सेवाधारी अच्छे हो फिर भी आपका नाम नहीं है, लेकिन बाप के पास तो नाम है ना, जब बाप के दिल पर नाम है तो और क्या चाहिए! और सिर्फ बाप के दिल पर नहीं लेकिन जब फाइनल में नम्बर मिलेंगे तो आपका नम्बर आगे होगा। क्योंकि बापदादा हिसाब रखते हैं। आपको चांस नहीं मिला, आप राइट हो लेकिन चांस नहीं मिला तो वो भी नोट होता है। और मांग कर चांस लिया, वो किया तो सही लेकिन वो भी मार्क्स कट होते हैं। ये धर्मराज का खाता कोई कम नहीं है। बहुत सूक्ष्म हिसाब-किताब है। इसलिए निःस्वार्थ सेवाधारी बनो, अपना कोई स्वार्थ नहीं हो।

25/11/1995

फाइनल नम्बर का आधार

जो फाइनल नम्बर मिलेंगे वो ये नहीं होगा कि इसने कितने भाषण किये या इसने कितने स्टूडेण्ट वा सेन्टर बनाये हैं, लेकिन योग्य कितनों को बनाया है? सेन्टर बनाना बडी बात नहीं है लेकिन योग्य कितनी आत्माओं को बनाया? नाम हो गया - 30 सेन्टर की इन्चार्ज है और 30 में से 15 हिल रहे हैं, 15 ठीक है तो फायदा हुआ या सिर्फ नाम हुआ? सिर्फ नाम होता है कि फलानी के 30 सेवाकेन्द्र हैं। लेकिन नम्बर इससे नहीं मिलेगा। फाइनल नम्बर जितनों को सुख दिया, जितना स्वयं शक्तिशाली रहे, उसी प्रमाण मिलेंगे। इसीलिये यह भी चाहिए-चाहिए खत्म कर दो। नहीं तो योग नहीं लगेगा। रोज यही देखते रहेंगे कि फलानी जगह प्रोग्राम हुआ मेरे को फिर भी नहीं बुलाया, अभी परसो यहाँ हुआ, कल वहाँ हुआ, आज यहाँ हुआ! तो योग लगेगा या गिनती होती रहेगी?

04/12/1995

रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड

जैसे शुरू में अखबार में डलवाया था ना कि ओम् मण्डली रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड। कमाई का साधन कुछ नहीं था। ब्रह्मा बाप के साथ एक-दो समर्पण हुए और अखबार में डाला रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड। तो अभी जब चारों ओर ये स्थूल हलचल होगी फिर आपको अखबार में नहीं डालना पडेगा। आपके पास अखबार वाले आयेंगे और खुद ही डालेंगे, टी.वी. में दिखायेंगे कि ब्रह्माकुमारीज रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड। क्योंकि आपके चेहरे चमकते रहेंगे, कुछ भी हो जाये। दिन में खाने को रोटी भी नहीं मिले तो भी आपके चेहरे चमकते रहेंगे। तो चारों ओर होगा दुःख और आप खुशी में नाचते रहेंगे। इसी को ही कहते हैं मिरुआ मौत मलूक का शिकार। इसलिए बापदादा ने आज कहा कि ब्राह्मण जो सच्चे हैं, ब्राह्मण जीवन में श्रेष्ठ जीवन के लक्ष्य वाले हैं

उसकी विशेषता है प्रसन्नता। चाहे कोई गाली भी दे रहे हो तो भी आपके चेहरे पर दुःख की लहर नहीं आनी चाहिए। प्रसन्नचित्त। गाली देने वाला भी थक जायेगा..., हो सकता है?

22/12/1995

सच्चे दिल पर साहेब राजी

बापदादा ने पहले भी यह पाठ पढाया है कि जो हो रहा है वो अच्छा और जो होने वाला है वो और अच्छा। ब्राह्मण बनना अर्थात् अच्छा ही अच्छा है। चाहे बातें ऐसी होती हैं जो कभी आपके स्वप्न में भी नहीं होती और कई बातें ऐसी होती है जो अज्ञान काल में नहीं होगी लेकिन ज्ञान के बाद हुई हैं, अज्ञान काल में कभी बिजनेस नीचे-ऊपर नहीं हुआ होगा और ज्ञान में आने के बाद हो गया, घबरा जाते हैं - हाय, ज्ञान छोड दें! लेकिन कोई भी परिस्थिति आती है उस परिस्थिति को अपना थोडे समय के लिये शिक्षक समझो। शिक्षक क्या करता है? शिक्षा देता है ना! तो **परिस्थिति विशेष आपको विशेष दो शक्तियों के अनुभवी बनाती है :- एक - सहन शक्ति, न्यारापन, नष्टोमोहा और दूसरा- सामना करने की शक्ति का पाठ पढाती है** जिससे आगे के लिए आप सीख लो कि ये परिस्थिति, ये दो पाठ पढाने आई है।

दिलशिकस्त नहीं बनो और मन में अगर कोई उलझन आ भी जाती है तो ऐसे समय पर निर्णय शक्ति चाहिये और निर्णय शक्ति तब आ सकती। जब आपका मन बाप के तरफ होगा। अगर अपनी उलझन में होंगे तो हाँ-ना, हाँ-ना, इसी उलझन में रह जायेंगे। इसलिए मन से भी दिलशिकस्त नहीं बनो। और धन भी नीचे-ऊपर होता है, जब करोडपतियों का ही नीचे-ऊपर होता है तो आप लोग उसके आगे क्या हो। वो तो होना ही है। लेकिन आप लोगों को निश्चय पक्का है कि जो बाप के साथी हैं, सच्चे हैं तो कैसी भी हालत में बापदादा दाल-रोटी खिलायेगा। दो-दो सब्जी नहीं खिलायेगा, दाल-रोटी खिलायेगा। लेकिन ऐसे नहीं करना कि काम से थक करके बैठ जाओ और कहो बाबा दाल-रोटी खिलायेगा। ऐसे अलबेले या आलस्य वाले को नहीं मिलेगा। बाकी सच्ची दिल पर साहेब राजी है। और परिवार में भी खिटखिट तो होनी ही है। जब आप लोग कहते हो कि अति के बाद अन्त होना है, कहते हो! अति में जा रहा है और जाना है तो परिवार में खिटखिट न हो , ये नहीं होना है, होना है! लेकिन आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति ले हल करो।

18/01/1996

बाप को जानना यह कितनी बडी विशेषता है

बापदादा हर एक बच्चे की विशेषता को देखते हैं। चाहे सम्पूर्ण नहीं बने हैं, पुरुषार्थी हैं लेकिन ऐसा एक भी बाप का बच्चा नहीं है जिसमें कोई विशेषता नहीं हो। सब में विशेषता है।

सबसे पहली विशेषता तो कोटो में कोई के लिस्ट में तो है ना। और विशेषता ये है कि बडे-बडे तपस्वी महान आत्मायें, 16,108 जगतगुरु, चाहे शास्त्रवादी हैं, चाहे महामण्डलेश्वर हैं, लेकिन बाप को नहीं जाना और बाप के सभी बच्चों ने बाप को तो जान लिया ना। तो बाप को जानना यह कितनी बडी विशेषता है। दिल से 'मेराबाबा' तो कहते हैं ना। मेरा कह कर अधिकारी तो बन गये ना। तो इसको क्या कहेंगे? जिसने बाप को परख लिया, पहचान लिया, तो पहचानना ये भी बुद्धि की विशेषता है, परखने की शक्ति है। तो आप सभी के परखने की शक्ति श्रेष्ठ है।

16/02/1996

बाप साथ है तो बाप को यूज करो

जो दिल से करते हैं तो दिल से करने वाले के दिल में बाप की याद भी सदा रहती हैं, सिर्फ दिमाग से करते हैं तो थोडा टाइम दिमाग में याद रहेगा - हाँ, बाबा ही कराने वाला है, हाँ, बाबा ही कराने वाला है लेकिन कुछ समय के बाद फिर वही मैं-पन आ जायेगा। इसलिए दिमाग और दिल दोनों का बैलेन्स रखो।

जब बाप साथ है तो बाप को यूज करो ना! यूज कम करते हो, सिर्फ कहते हो बाबा साथ है, बाबा साथ है। यूज करो। जब सर्वशक्तिमान साथ है तो सफलता तो आपके चरणों में दौडनी है।

16/02/1996

सेवा और स्व पुरुषार्थ का बैलेन्स

सेवा और स्व-पुरुषार्थ का बैलेन्स। सेवा के अति में नहीं जाओ। बस मेरे को ही करनी है, मैं ही कर सकती हूँ, नहीं। कराने वाला करा रहा है, मैं निमित्त 'करनहार' हूँ। तो जिम्मेवारी होते भी थकावट कम होगी। कई बच्चे कहते हैं - बहुत सेवा की है ना तो थक गये हैं, माथा भारी हो गया है। तो माथा भारी नहीं होगा। और ही 'करावनहार' बाप बहुत अच्छा मसाज करेगा और माथा और ही फ्रेश हो जायेगा। थकावट नहीं होगी, एनर्जी एक्स्ट्रा आयेगी। जब साइन्स की दवाइयों से शरीर में एनर्जी आ सकती है, तो क्या बाप की याद से आत्मा में एनर्जी नहीं आ सकती? और आत्मा में एनर्जी आयी तो शरीर में प्रभाव आटोमेटिकली पडता है।

जब जादूगर विनाशी खेल सेकण्ड में दिखा सकते हैं तो क्या आलमाइटी अथॉर्टी जो चाहे वह नहीं कर सकता है? कर सकता है? अभी-अभी विनाश को ला सकता है? अकेला ला सकता है? अकेला नहीं कर सकता। चाहे आलमाइटी अथॉर्टी भी है लेकिन आप साथियों के संबंध में बंधा हुआ है। तो बाप का आपसे कितना प्यार है। चाहे कर सकता है, लेकिन नहीं कर सकता। जादू की लकडी नहीं घूमा सकता है क्या? लेकिन बाप कहते हैं कि राज्य

अधिकारी कौन बनेगा? बाप बनेगा क्या? आप बनेंगे। स्थापना तो कर ले, विनाश भी कर ले लेकिन राज्य कौन करेगा? बिना आपके काम चलेगा? इसलिए बाप को आप सभी को कर्मातीत बनाना ही है। बनना ही है ना कि बाप जबरदस्ती बनाये? बाप को बनाना है और आप सबको बनना ही है। यह है स्वीट ड्रामा। ड्रामा अच्छा लगता है ना? कि कभी-कभी तंग हो जाते हो, ये क्या बना? यह बदलना चाहिए - सोचते हो? बाप भी कहते हैं - बना बनाया ड्रामा है, यह बदल नहीं सकता। रिपीट होना है लेकिन बदल नहीं सकता। ड्रामा में इस आपके अन्तिम जन्म को पावर्स हैं। है ड्रामा, लेकिन ड्रामा में इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म में बहुत ही पावर्स मिली हुई हैं। बाप ने विल किया है इसीलिए विल पावर है। तो कौन-सा शब्द याद रखेंगे? 'करन-करावनहार'। पक्का या प्लेन में जाते-जाते भूल जायेंगे? भूलना नहीं।

10/03/1996

सेवा भी एक खेल है

सेवा भी एक खेल है। तो खेल में चाहे कोई गिरता है, कोई जीतता है लेकिन खेल में सदा खुशी होती है। तो यह सेवा भी क्या है? संगमयुग का खेल है। ऐसे है? और खेल देख-देख कर खुश होते रहते हैं। और औरों की भी खुशी बढाते रहते हो। बस अभी आप लोगों का काम यही है। खुशी बढाना, उमंग-उत्साह बढाना और स्व-पुरुषार्थ बढाना। आपको अभी यही खेल करना है। और औरों को खेल में अच्छे खिलाडी बनाना है।

10/03/1996

कोटो में कोई

बापदादा तख्तनशीन बच्चों को देख सदा हर्षित रहते हैं- वाह मेरे तख्तनशीन बच्चे! बच्चे बाप को देख खुश होते हैं, आप सभी बापदादा को देख खुश होते हो लेकिन बापदादा कितने बच्चों को देख खुश होते हैं क्योंकि हर एक बच्चा विशेष आत्मा है। चाहे लास्ट नम्बर भी है लेकिन फिर भी लास्ट होते भी विशेष कोटो में कोई, कोई में भी कोई की लिस्ट में है।

03/04/1996

बेहद की वैराग्य वृत्ति

अभी बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। चाहे कितने भी साधन प्राप्त है और साधन तो आपको दिन प्रतिदिन ज्यादा ही मिलने हैं लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की साधना मर्ज नहीं हो, इमर्ज हो। साधन और साधना का बैलेन्स क्योंकि आगे चलकर के प्रकृति आपकी दासी होगी। सत्कार मिलेगा, सम्मान मिलेगा। लेकिन सबकुछ होते वैराग्य वृत्ति कम नहीं हो।

चाहे फर्स्ट टाइम वाले हैं, चाहे 10 वर्ष, 20 वर्ष वाले हैं लेकिन हर एक आत्मा इस ब्राह्मण परिवार की विशेष शोभा हो। एक रत्न भी कम होता है तो शोभा नहीं होती है। तो बापदादा सभी बच्चों को उसी नजर से देखते हैं कि यह हर एक रत्न इस ब्राह्मण परिवार का श्रृंगार है। श्रृंगार है ना? बहुत वैल्युएबल श्रृंगार हो। इसलिए अभी तक आपके जड चित्रों को कितना श्रृंगार करते रहते हैं। अभी लास्ट जन्म तक भी श्रृंगार होता रहता है। ऐसी खुशी हैं? भगवान का श्रृंगार बनना कम बात है क्या!

आदि रत्नों को बाप के साथ का अनुभव करना बहुत सहज है। क्योंकि साकार में साथ का अनुभव किया है। आपको फिर भी इमर्ज करना पडता है लेकिन इन्होंने प्रैक्टिकल में तुम्ही साथ रहना, खाना, चलना, फिरना... यह प्रैक्टिकल साकार में अनुभव किया है। तो साकार में अनुभव की हुई चीज सहज याद रहती है। ये इन्हों का लक है कि बाप के साथ का अनुभव ये जब चाहें तब कर सकते हैं। ऐसे हैं? लेकिन ड्रामा में आप लोगों के लिए खास एक लिफ्ट है, जो अव्यक्त रूप में आये हैं, **साकार रूप में ड्रामा अनुसार पीछे आये हैं, उन्हों को एक्स्ट्रा लिफ्ट है, कौन-सी लिफ्ट है? जब चाहो तब बापदादा की एक्स्ट्रा मदद मिलती है। संकल्प का एक कदम आपका और सहयोग के बहुत कदम बाप के।** इसीलिए आपको एक्स्ट्रा लिफ्ट है। समझा। आप भी कम नहीं हो। अच्छा-

03/04/1996

गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो

ज्ञानी आत्माओं में या तो अपने गुण का, अपनी विशेषता का अभिमान आता है या तो जितना आगे बढते हैं उतना अपनी किसी भी बात में कमी को देख करके, कमी अपने पुरुषार्थ की नहीं लेकिन नाम में, मान में, शान में, पूछने में, आगे आने में, सेन्टर इन्चार्ज बनाने में, सेवा में, विशेष पार्ट देने में - ये कमी से व्यर्थ संकल्प भी विशेष ज्ञानी आत्माओं के लिए बहुत नुकसान करता हैं। बापदादा को टीचर्स वैसे बहुत प्यारी लगती हैं। इसमें तो ताली बजा दी लेकिन वैसे के पीछे ऐसे भी हैं। वैसे तो टीचर्स को बापदादा एकदम समान दृष्टि से देखते हैं कि ये बाप समान हैं, निमित्त हैं लेकिन जब ऐसी-वैसी उल्टी डांस कर देती हैं, जो मन को नहीं भाती है, कभी-कभी ऐसी डांस करते हैं तो सब कहते हैं बन्द करो, बन्द करो। तो जब टीचर्स ऐसा कुछ करती हैं तो बापदादा की, खास ब्रह्मा बाबा की आंखें नीचे हो जाती हैं। इतना टीचर्स को अटेन्शन रखना चाहिए। टाइटल तो टीचर्स को बहुत अच्छा है, बैज भी बहुत जल्दी पहन लेते हो। लेकिन टीचर का अर्थ ही है बाप समान। विशेष ब्रह्मा बाप टीचर्स को दिल से प्यार करते हैं लेकिन

कभी-कभी दृष्टि नीचे भी करनी पडती है। तो ऐसे नहीं करना। बाकी अच्छा है। (तमिलनाडु ग्रुप)

आन्ध्र वाली टीचर्स उठो। अच्छा, टीचर्स तो बहुत हैं। अभी ये भी एग्जाम्पल दिखायेंगे। देखो कितना अच्छा रत्न निकला और एडवांस पार्टी में भी अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। तो करेंगे ना! खिटखिट नहीं होनी चाहिए। खिटखिट खत्म। विजय का झण्डा हर सेवाकेन्द्र पर लहराये। ये नहीं बापदादा सुने कि फलाने सेन्टर पर खिटखिट है। इसलिए फलानी दादी को भेजो। ये नहीं होना चाहिए। ऐसे थोडा-थोडा बीच-बीच में खेल करते हैं। अभी खत्म। पहले टीचर्स खत्म करेंगी तभी वायब्रेशन्स फैलेगा। ये सूक्ष्म वायब्रेशन्स है। आप समझेंगे एक ने किया ना, सभी को क्या पता? लेकिन वायब्रेशन ऐसी चीज है जो न पता होते भी... । मैंने सिर्फ किया, नहीं। मैंने सभी बाबा के सेवाकेन्द्रों का वायब्रेशन खराब किया। इतनी जिम्मेवारी हर एक टीचर के ऊपर है। बैज पहनना तो बहुत अच्छा लगता है। अच्छा भी लगता है। सभी एक जैसा बैज पहन कर बैठती हैं तो अच्छा लगता है लेकिन बैज की लाज रखना। अच्छा।(आन्ध्रप्रदेश ग्रुप)

जो निमित्त बनता है उसको एक्स्ट्रा मार्क मिल जाती हैं। उसका पद, जितनी सेवा की उस अनुसार एड होकर मार्कस जमा होती जाती हैं। समझो साधारण है लेकिन सेवा निर्विघ्न है, तो सेवा की मार्क्स एडीशन होने से साधारण राजा से आगे नम्बर में आ जाते हैं। और आगे-आगे जाते आखिर विश्व महाराजा के रॉयल फैमिली में आ जाते हैं। तो ये करना है ना। (आगरा)

इसने आदि से अब तक बहुत अच्छा पार्ट बजाया है और आपकी विशेष सहयोगी है। कोई भी बात में सुनने-सुनाने वाली बहुत अच्छी है क्योंकि गम्भीर रहती है। ये गम्भीरता का गुण बहुत आगे बढाता है। कोई भी बात बोल दी ना, समझो अच्छा किया और बोल दिया तो आधा खत्म हो जाता है। आधा फल खत्म हो गया, आधा जमा हो गया। और जो गम्भीर होता है उसका फुल जमा होता है। कहते हैं ना - देखो जगदम्बा गम्भीर रही, चाहे स्थूल में आप लोगों सेवा कम की, आप लोग ज्यादा कर रहे हो लेकिन ये गम्भीरता के गुण ने फुल खाता जमा किया है। कट नहीं हुआ है। कई करते बहुत हैं लेकिन आधा, पौना कट हो जाता है। करते हैं, कोई बात हुई तो पूरा कट हो जाता है या थोडी बात हुई तो पौना कट हो जाता है। ऐसे ही वर्णन किया तो आधा कट हो जाता है। बाकी बचा क्या? जब जगदम्बा की विशेषता - जमा का खाता ज्यादा है। गम्भीरता की देवी है ऐसे और सभी को गम्भीर होना चाहिए, चाहे मधुबन में रहते हैं, चाहे सेवाकेन्द्र में रहते हैं लेकिन बापदादा सभी को कहते हें कि गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो, वर्णन करने से खत्म हो जाती हैं। चाहे अच्छा वर्णन करते हो, चाहे बुरा। अच्छा अपना अभिमान और बुरा किसका अपमान कराता है। तो हर एक गम्भीरता की देवी और गम्भीरता का देवता दिखाई दे। अभी गम्भीरता की बहुत-बहुत आवश्यकता है। अभी बोलने

की आदत बहुत हो गई है क्योंकि भाषण करते हैं ना तो जो भी आयेगा वो बोल देंगे। लेकिन प्रभाव जितना गम्भीरता का पडता है इतना वाणी का नहीं पडता। अच्छा।(ईशू बहन से)

07/11/1996

ब्राह्मण जन्म ही याद और सेवा के लिए है

सेवा सिर्फ चार घण्टा, छ घण्टा करने वाले नहीं हो। हर सेकण्ड सेवा की स्टेज पर पार्ट बजाने वाले परमात्म साथी हो। याद निरंतर है, ऐसे ही सेवा भी निरंतर है। अपने को निरंतर सेवाधारी अनुभव करते हो? या 8-10 घण्टे के सेवाधारी हैं? यह ब्राह्मण जन्म ही याद और सेवा के लिए है। और कुछ करना है क्या? यही है ना! हर श्वांस, हर सेकण्ड याद और सेवा साथ-साथ है या सेवा के घण्टे अलग हैं और याद के घण्टे अलग हैं? नहीं है ना।

अपने लिए अपने से ही पूछो कि हमारे लिए समय की क्या पुकार है?

अभी समय के अनुसार अगर दिल और दिमाग खाली नहीं होगा तो निरंतर सेवाधारी नहीं बन सकेंगे।

दिमाग को खाली रखने से बाप की सेवा के साथी बन सकेंगे। दिल को सदा साफ रखने से निरंतर बाप की सेवा के साथी बन सकते हैं।

तो जितनी भी हिम्मत हो, उतना जो समय दिया है मेहनत की है, उन सबको प्रैक्टिकल में लाना। सिर्फ एक बात याद रखना कि सेवा और स्व-उन्नति के बैलेन्स में अन्तर नहीं आवे। प्लैन प्रैक्टिकल करने के बाद यह नहीं कहना कि सर्विस में बिजी हो गये ना इसलिए स्व-उन्नति में अंतर आ गया - यह नहीं कहना। दोनों का बैलेन्स सदा रखना। क्यों? दूसरों की सेवा करो और स्व की सेवा नहीं तो यह अच्छा नहीं। दोनों का बैलेन्स रखना ही सफलता है। समझा। अच्छा। सेवा के लिए साधन है क्योंकि विश्व कल्याण करना है तो यह भी साधन सहयोग देते हैं। साधनों के वश नहीं होना। लेकिन साधन को सेवा में यूज करना। यह बीच का समय है जिसमें साधन मिले हैं। आदि में भी कोई इतने साधन नहीं थे और अंत में भी नहीं रहेंगे। यह अभी के लिए हैं। सेवा बढाने के लिए हैं। लेकिन यह साधन हैं, साधना करने वाले आप हो। साधन के पीछे साधना कम नहीं हो।

जैसे एक सेकण्ड में साधन यूज करते हो ऐसे ही बीच-बीच में कुछ समय साधना के लिए भी निकालो। सेकण्ड भी निकालो। अभी साधन पर हाथ है और अभी-अभी एक सेकण्ड साधना, बीच-बीच में अभ्यास करो। जैसे साधनों में जितनी प्रैक्टिस करते हो तो ऑटोमेटिक चलता रहता है ना। ऐसे एक सेकण्ड में साधना का भी अभ्यास हो। ऐसे नहीं टाइम नहीं मिला, सारा दिन बहुत बिजी रहे। बापदादा यह बात नहीं मानते हैं। क्या एक घण्टा साधन को अपनाया,

उसके बीच में क्या 5-6 सेकण्ड भी नहीं निकाल सके। ऐसा कोई है? निकाल सकते हैं तो निकालो।

23/10/1999

बापदादा तो हरेक बच्चे से सारे दिन में अनेक बार मिलता रहता है। 23/10/1999

बाप की आज्ञा है तन को भी अमानत समझो। मन को भी अमानत समझो।

23/10/1999

ब्राह्मणों का विशेष कार्य

कई बच्चो ने बापदादा को यह उडीसा की रिजल्ट लिखकर दी, यह हुआ, यह हुआ....। तो वह प्रकृति का खेल तो देख लिया। लेकिन बापदादा पूछते हैं कि आप लोगों ने सिर्फ प्रकृति का खेल देखा या आप उडती कला के खेल में बिजी रहे? या सिर्फ समाचार सुनते रहे? समाचार तो सब सुनना भी पडता है, परंतु जितना समाचार सुनने में इन्ट्रेस्ट रहता है उतना अपनी उडती कला की बाजी में रहने का इन्ट्रेस्ट रहा? कई बच्चे गुप्त योगी भी हैं, ऐसे गुप्त योगी बच्चों को बापदादा की मदद भी बहुत मिली है और ऐसे बच्चे स्वयं भी अचल, साक्षी रहे और वायुमण्डल में भी समय पर सहयोग दिया। जैसे स्थूल सहयोग देने वाले, चाहे गवर्मेन्ट, चाहे आस-पास के लोग सहयोग देने के लिए तैयार हो जाते हैं, ऐसे ब्राह्मण आत्माओं ने भी अपना सहयोग शक्ति, शान्ति देने का, सुख देने का जो ईश्वरीय श्रेष्ठ कार्य है, वह किया? जैसे वह गवर्मेन्ट ने यह किया, फलाने देश ने यह किया... फौरन ही एनाउन्समेंट करने लग जाते हैं, तो बापदादा पूछते हैं - आप ब्राह्मणों ने भी अपना यह कार्य किया? आपको भी अलर्ट होना चाहिए। स्थूल सहयोग देना यह भी आवश्यक होता है, इसमें बापदादा मना नहीं करते लेकिन जो ब्राह्मण आत्माओं का विशेष कार्य है, जो और कोई सहयोग नहीं दे सकता, ऐसा सहयोग अलर्ट होके आपने दिया? देना है ना! या सिर्फ उन्हों को वस्त्र चाहिए, अनाज चाहिए। लेकिन पहले तो मन में शान्ति चाहिए, सामना करने की शक्ति चाहिए। तो स्थूल मे साथ सूक्ष्म सहयोग ब्राह्मण ही दे सकते हैं और कोई नहीं दे सकता है। तो यह कुछ भी नहीं है, यह तो रिहर्सल है। रीयल तो आने वाला है। उसकी रिहर्सल आपको भी बाप या समय करा रहा है।

15/11/1999

समय का इशारा

अनेक जन्म के लिए जमा चाहिए। जमा करने की विधि जानते हो? बहुत सहज है। सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ। बिन्दी याद है तो जमा होता है। जैसे स्थूल खजाने में भी एक के साथ बिन्दी लगाते जाओ तो बढता जाता है ना। ऐसे ही आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा भी जो बीत चुका वह भी फुल स्टॉप अर्थात् बिन्दी। अगर हर खजाने को बिन्दी रूप से याद करो तो जमा होता जाता। अनुभव है ना! बिन्दी लगाई और व्यर्थ से जमा होता जाता है। बिन्दी लगाने आती है? कई बार ऐसे होता है जो कोशिश करते हो बिन्दी लगाने की लेकिन बिन्दी के बजाए लम्बी लाइन हो जाती है, बिन्दी के बजाए क्वेश्चनमार्क हो जाता है, आश्चर्य की लाइन लग जाती है। तो जमा का खाता बढाने की विधि है 'बिन्दी' और गँवाने का रास्ता है लम्बी लाइन लगाना, क्वेश्चनमार्क लगाना, आश्चर्य की मात्रा लगाना। सहज क्या है? बिन्दी है ना! तो विधि बहुत सहज है - स्वमान और बाप की याद तथा फालतू को फुलस्टॉप लगाना।

आज बापदादा ने जमा का खाता देखा इसलिए आज विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं कि समय की समाप्ति अचानक होनी है। यह नहीं सोचो कि मालूम तो पडता रहेगा, समय पर ठीक हो जायेंगे। जो समय का आधार लेता है, समय पर ठीक कर देगा, या समय पर ठीक हो जायेगा.... उनका टीचर कौन? समय या स्वयं परमात्मा? परम-आत्मा से सम्पन्न नहीं बन सके और समय सम्पन्न बनायेगा, तो इसको क्या कहेंगे? समय आपका मास्टर है या परमात्मा आपका शिक्षक है? तो ड्रामा अनुसार अगर समय आपको सिखायेगा या समय के आधार पर परिवर्तन होगा तो बापदादा जानते हैं कि प्रालब्ध भी समय पर मिलेगी क्योंकि समय टीचर है। समय आपका इन्तजार कर रहा है, आप समय का इन्तजार नहीं करो। वह रचना है, आप मास्टर रचता हो। तो रचता का इन्तजार रचना करे, आप मास्टर रचता समय का इन्तजार नहीं करो। और मुश्किल है भी क्या? सहज को स्वयं ही मुश्किल बनाते हो। मुश्किल है नहीं, मुश्किल बनाते हो। जब बाप कहते हैं जो भी बोज लगता है वह बोझ बाप को दे दो। वह देना नहीं आता।

30/11/1999

ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाए, पॉजिटिव रूप देखो

प्राप्ति के आगे हिसाब-किताब तो कुछ भी नहीं है। प्रप्तियाँ सामने रखो और हिसाब-किताब सामने रखो, तो वह क्या लगेगा? बहुत छोटी-सी चील लगेगी। मतलब तो ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाए, पॉजिटिव रूप में देखो।

30/11/1999

एक सेकण्ड में माइण्ड कन्ट्रोल

जो एक सेकण्ड में अपने संकल्प को जहाँ चाहे, जो सोचना चाहें वही सोच चलता रहे, ऐसे जो समझते हैं, वह हाथ उठाओ। एक सेकण्ड में माइण्ड कण्ट्रोल हो जाए, ऐसे सेकण्ड में हो सकता है? अगर कर सकते हो तो हाथ उठाओ। ऐसे कहने से नहीं, अगर कण्ट्रोल होता है तो हाथ उठाओ? अच्छा जिन्होंने नहीं उठाया उन्हों को क्या एक मिनट लगता है? या उससे भी ज्यादा लगता है? अभी यह अभ्यास बहुत जरूरी है क्योंकि अंत के समय यह अभ्यास बहुत काम में आयेगा। जैसे इस शरीर के आरगन्स को, बाँह है, पाँव है, इनको सेकण्ड में जहाँ लेकर जाने चाहो वहाँ ले जा सकते हो ना! ऐसे मन और बुद्धि को भी मेरी कहते हो ना! जब मन के मालिक हो, यह सूक्ष्म आरगन्स हैं, तो इसके ऊपर कण्ट्रोल क्यों नहीं? संस्कार के ऊपर भी कण्ट्रोल होना चाहिए। जब चाहो, जैसे चाहो - जब यह अभ्यास पक्का होगा तब समझो पास विद् ऑनर होंगे।

30/11/1999

'शुभ' शब्द

एक बात - शुभ चिंतक, दूसरा - शुभ चिंतन, तीसरा - शुभ भावना, यह भावना नहीं कि यह बदले तो मैं बदलूं। उसके प्रति भी शुभ भावना, अपने प्रति भी शुभ भावना और चौथा - शुभ श्रेष्ठ स्मृति और स्वरूप। बस एक 'शुभ' शब्द याद कर लो, इसमें 4 ही बातें आ जायेगी। बस, हमको सबमें 'शुभ' शब्द स्मृति में रखना है।

31/12/1999

त्याग उसको कहा जाता है - जो सबकुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे

त्याग उसको कहा जाता है - जो सब कुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे। समय अनुसार, समस्याओं के अनुसार त्याग - श्रेष्ठ त्याग नहीं है। शुरु से ही देखो तन, मन, धन सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति होते हुए त्याग किया। शरीर का भी त्याग किया, सब साधन होते हुए स्वयं पुराने में ही रहे। साधनों का आरंभ हो गया था। होते हुए भी साधना में अटल रहे। यह ब्रह्मा की तपस्या आप सब बच्चों का भाग्य बनाकर गई। **ड्रामानुसार ऐसे त्याग का एग्जाम्पल रूप में ब्रह्मा ही बना और इसी त्याग ने संकल्प शक्ति की सेवा का विशेष पार्ट बजाया।** जो नये-नये बच्चे संकल्प शक्ति से फास्ट वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। तो सुना ब्रह्मा के त्याग की कहानी।

सभी बच्चों का एक ही दृढ संकल्प हो कि अभी अपने भाई-बहनों के दुःख की घटनायें परिवर्तन हो जाएँ। दिल से रहम इमर्ज हो। क्या जब साइन्स की शक्ति हलचल मचा सकती है

तो इतने सभी ब्राह्मणों के साइलेन्स की शक्ति, रहमदिल भावना द्वारा वा संकल्प द्वारा हलचल को परिवर्तन नहीं कर सकती! जब करना ही है, होना ही है तो इस बात पर विशेष अटेन्शन दो। जब आप ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर के बच्चे हैं, आपके ही सभी बिरादरी हैं, शाखायें हैं, परिवार है, आप ही भक्तों के इष्ट देव हो। यह नशा है कि हम ही इष्ट देव हैं? तो भक्त चिल्ला रहे हैं, आप सुन रहे हो! वह पुकार रहे हैं - हे इष्ट देव, आप सिर्फ सुन रहे हो, उन्हों को रेसपाण्ड नहीं करते हो? तो बापदादा कहते हैं हे भक्तों के इष्टदेव अभी पुकार सुनो, रेसपाण्ड दो, सिर्फ सुनो नहीं। क्या रेसपाण्ड देंगे? परिवर्तन का वायुमण्डल बनाओ। आपका रेसपाण्ड उन्हों को नहीं मिलता तो वह अलबेले हो जाते हैं। चिल्लाते हैं फिर चुप हो जाते हैं।

18/01/2000

नेचरल स्मृति और स्वरूप बनाओ कि ‘मैं फरिश्ता हूँ’

बापदादा ने पहले भी कहा कि जैसे अभी यह पक्का हो गया है कि मैं ब्रह्माकुमारी/ब्रह्माकुमार हूँ। चलते-फिरते-सोचते- हम ब्रह्माकुमारी हैं, हम ब्रह्माकुमार ब्राह्मण आत्मा हैं। ऐसे अभी यह नेचुरल स्मृति और नेचर बनाओ कि ‘मैं फरिश्ता हूँ।’ अमृतवेले उठते ही यह पक्का करो कि मैं फरिश्ता परमात्म-श्रीमत पर नीचे इस साकार तन में आया हूँ, सभी को सन्देश देने के लिए वा श्रेष्ठ कर्म करने के लिए। कार्य पूरा हुआ और अपने शान्ति की स्थिति में स्थित हो जाओ। ऊँची स्थिति में चले जाओ। एक-दो को भी फरिश्ते स्वरूप में देखो। आपकी वृत्ति दूसरे को भी धीरे-धीरे फरिश्ता बना देगी। आपकी दृष्टि दूसरे पर भी प्रभाव डालेगी।

ऐसे ही यह अभ्यास करो - कुछ भी हो, क्या भी कर रहे हो लेकिन यह भी पता ही नहीं पडे कि मैं सोल कान्सेस, पावरफुल स्थिति में नेचुरल हो गया हूँ। फरिश्ता स्थिति भी नेचुरल होनी चाहिए। जितनी अपनी नेचर फरिश्ते-पन की बनायेंगे तो नेचर स्थिति को नेचुरल कर देगी। तो बापदादा कितने समय के बाद पूछे?

15/02/2000

निर्मानता और मिलनसार

सेवा की उन्नति में निर्मानता के बजाए कहाँ-कहाँ, कब-कब स्व-अभिमान भी मिक्स हो जाता है। जितना सेवा में आगे बढते हैं, उतना ही वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, चाल में निर्मानता दिखाई दे, इस बैलेन्स की अभी बहुत आवश्यकता है। अभी तक जो सभी सम्बन्ध-सम्पर्क वालों से ब्लैसिंग मिलनी चाहिए वह ब्लैसिंग नहीं मिलती है। और पुरुषार्थ कोई कितना भी करता है, अच्छा है लेकिन पुरुषार्थ के साथ अगर दुआओं का खाता जमा नहीं है तो दाता-पन

की स्टेज, रहमदिल बनने की स्टेज की अनुभूति नहीं होगी। आवश्यक है - स्व पुरुषार्थ और साथ-साथ बापदादा और परिवार के छोटे-बडों की दुआयें। यह दुआयें जो हैं - यह पुण्य का खाता जमा करना है। यह मार्क्स में एडीशन होती है। कितनी भी सर्विस करो, अपनी सर्विस की धुन में आगे बढते चलो, लेकिन **बापदादा सभी बच्चों में यह विशेषता देखने चाहते हैं कि सेवा के साथ निर्मानता, मिलनसार- यह पुण्य का खाता जमा होना बहुत-बहुत आवश्यक है।** फिर नहीं कहना कि मैंने तो बहुत सर्विस की, मैंने तो यह किया, मैंने तो यह किया, लेकिन नम्बर पीछे क्यों? इसलिए बापदादा पहले से ही इशारा देते हैं कि वर्तमान समय यह पुण्य का खाता बहुत-बहुत जमा करो। ऐसे नहीं सोचो— यह तो है ही ऐसा, यह तो बदलना नहीं है। जब प्रकृति को बदल सकते हो, एडजेस्ट करेंगे ना प्रकृति को? तो क्या ब्राह्मण आत्मा को एडजेस्ट नहीं कर सकते हो? अगेन्स्ट को एडजेस्ट करो, यह है - निर्माण और निर्मान का बैलेन्स।

अगर दिल साफ हो जाए तो मेहनत नहीं, दिलाराम दिल में समाया रहेगा और आप दिलाराम के दिल में समाये हुए रहेंगे। दिल में बाप समाया हुआ है। किसी भी रूप की माया, चाहे सूक्ष्म रूप हो, चाहे रॉयल रूप हो, चाहे मोटा रूप हो, किसी भी रूप से माया आ नहीं सकती। स्वप्न मात्र, संकल्प मात्र भी माया आ नहीं सकती।

अब बापदादा मन्सा शक्ति द्वारा सेवा को शक्तिशाली बनाने चाहते हैं। वाणी द्वारा सेवा चलती रही है, चलती रहेगी लेकिन इस में समय लगता है। समय कम है, सेवा अभी भी बहुत है। रिजल्ट आप सब ने सुनाई। अभी तक 108 की माला भी निकाल नहीं सकते। 16हजार, 9 लाख - यह तो बहुत दूर हो गये। इसके लिए फास्ट विधि चाहिए। पहले अपनी मन्सा को श्रेष्ठ, स्वच्छ बनाओ, एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं जाये। अभी तक मैजारिटी के वेस्ट संकल्प की परसेन्टेज रही हुई है। अशुद्ध नहीं लेकिन वेस्ट हैं इसलिए मन्सा सेवा फास्ट गति से नहीं हो सकती। अभी होली मनाना अर्थात् मन्सा को, व्यर्थ से भी होली मनाना।

19/03/2000

सच्ची दिल से महसूसता

सच्ची दिल से, महसूसता से बापदादा के आगे रखो। ऐसे नहीं मैंने बापदादा को कह दिया। यह गलती हो गई। जैसे आर्डर चलाते हैं - हाँ, मेरे से यह गलती हो गई, ऐसे नहीं। महसूसता की शक्ति से, सच्ची दिल से, सिर्फ दिमाग से नहीं लेकिन दिल से अगर बापदादा के आगे महसूस करते हैं तो दिल खाली हो जायेगी, किचडा खत्म। बातें बडी नहीं होती है, छोटी ही होती रहती हैं तो उनसे दिल भर जाती है। खाली तो नहीं रहती है ना! तो दिल खाली नहीं

तो दिलाराम कहाँ बैठेगा! बैठने की जगह तो हो ना! तो सच्ची दिल पर साहेब राजी। जो हूँ, जैसी हूँ, जो हूँ, जैसा हूँ, बाबा आपका हूँ। बापदादा तो जानते ही हैं कि नम्बरवार तो होने ही हैं। इसीलिए बापदादा उस नजर से आपको नहीं देखेगा। लेकिन सच्ची दिल और दूसरा कहा था - सदा बुद्धि की लाइन क्लीयर हो। लाइन में डिस्ट्रबेन्स नहीं हो, कट ऑफ नहीं हो। बापदादा जो एक्स्ट्रा समय पर शक्ति देने चाहते हैं, दुआयें देने चाहते हैं, एक्स्ट्रा मदद देने चाहते हैं, अगर डिस्ट्रबेन्स होगी तो वह मिल नहीं सकेगी। लाइन क्लीयर ही नहीं है, क्लीन नहीं है, कट ऑफ है, तो यह जो प्राप्ति होनी चाहिए वह नहीं होती।

30/03/2000

छोटे पेपर

दिन-प्रतिदिन जो भी सभी के जैसे पुराने शरीर के हिसाब चुक्तू हो रहे हैं, ऐसे ही पराने संस्कार भी, पुरानी बीमारियाँ भी सबकी निकलके खत्म होनी है, इसीनिए घबराओ नहीं कि अभी तो पता नहीं और ही बातें बढ़ रही हैं, पहले तो थी नहीं। जो नहीं थी, वह भी अभी निकल रही हैं, निकली हैं। आपके समाने की शक्ति, सहन करने की शक्ति, समेटने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति का पेपर है।

16/12/2000

हुक्मी हुक्म चला रहा है

(हुक्मी हुक्म चलाए रहा....) तो जगत अम्बा बोली अगर यह धारणा सब कर लें कि हमें बापदादा चला रहा है, उसके हुक्म से हर कदम चला रहे हैं। अगर यह स्मृति रहे तो हमारे को चलाने वाला डायरेक्ट बाप है। तो कहाँ नजर जायेंगी? चलने वाले की, चलाने वाले की तरफ ही नजर जायगी, दूसरे तरफ नहीं। तो यह करावन हार निमित्त बनाए करा रहे हैं, चला रहे हैं। जिम्मेवार करावनहार है। फिर सेवा में जो माथा भारी हो जाता है ना, वह सदा हल्का रहेगा, जैसे रुहे गुलाब।

31/12/2000

मन्सा शक्ति

जगदीश भाई से - ठीक है। (चलती का नाम गाडी है) जीवन को बाप हवाले तो आदि से कर ही लिया है। जीवन में जब तक भी है तब तक सेवा तो कर रहे हो और करते ही रहेंगे। जमा हो रहा है। अभी बापदादा तो भी महारथी हैं, सभी महारथी बैठे हैं ना, उन महारथियों को कौन-सी सेवा करनी है, वह बताते हैं। सेवायें तो सब कर रहे हैं और आप सबने तो अभी तक

जो दूसरे सेवायें कर रहे हैं, वह बहुत कर ली है, अभी तो दूसरे भी आप लोगों द्वारा बहुत होशियार हो गये हैं, अभी महारथियों को और नई सेवा करनी चाहिए। ठीक है ना। अभी आप लोगों को जो सेवा करनी है उनमें इनकी (कानों की) जरूरत नहीं है। (कम सुन रहा है) अब आप लोगों की सेवा है, वायब्रेशन्स द्वारा आत्माओं को समीप लाना।, आपस में तो होना ही है। आपसी स्नेह औरों को वायब्रेशन्स द्वारा खींचेगा। अभी आप लोगों को यह साधारण सेवा करने की आवश्यकता नहीं है। भाषण करने वाले तो बहुत हैं, लेकिन आप लोग हर एक आत्मा को ऐसी भासना दो जो वह समझें कि हमको कुछ मिला। ब्राह्मण परिवार में भी आपके संगठन के वायब्रेशन द्वारा निर्विघ्न बनाना है। मन्सा सेवा की विधि को और तीव्र करो। वाचा वाले बहुत हैं। मन्सा द्वारा कोई न कोई शक्ति का अनुभव हो । वह समझें कि इन आत्माओं द्वारा यह शक्ति का अनुभव हुआ। चाहे शान्ति का हो, चाहे खुशी का हो, चाहे सुख का हो, चाहे अपने-पन का। तो जो भी अपने को महारथी समझते हैं उन्हों को अभी यह सेवा करनी है। सभी अपने को महारथी समझते हो? महारथी हैं? अच्छा है। (जगदीश भाई ने एक गीत गाया)

अभी औरों को भी आप द्वारा ऐसा अनुभव हो। बढ़ता जायेगा। इससे ही अभी ऐसी अनुभूति शुरु करेंगे तब साक्षात्कार शुरु हो जायेगा।

31/12/2000

शक्तियाँ आ गयी

बहुत नाजुक समय आना ही है। ऐसे समय पर आप उडती कला द्वारा फरिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाते, जिसको शान्ति चाहिए, जिसको खुशी चाहिए, जिसको सन्तुष्टता चाहिए, फरिश्ते रूप में सकाश देने का चक्कर लगायेंगे और वह अनुभव करेंगे। जैसे अभी अनुभव करते हैं ना,पानी मिल गया बहुत प्यास मिटी। खाना मिल गया, टेन्ट मिल गया, सहारा मिल गया। ऐसे अनुभव करेंगे फरिश्तों द्वारा शान्ति मिल गई, शक्ति मिल गई, खुशी मिल गई। ऐसे अन्तःवाहक अर्थात् अन्तिम स्थिति, पावरफुल स्थिति आपका अन्तिम वाहन बनेगा। और चारों ओर चक्कर लगाते सबको शक्तियाँ देंगे, साधन देंगे। अपना रूप सामने आता हैं?इमर्ज करो। कितने फरिश्ते चक्कर लगा रहे हैं। सकाश दे रहे हैं, तब कहेंगे जो आप एक गीत बजाते हो ना - शक्तियाँ आ गयी.... शक्तियों द्वारा ही सर्वशक्तिवान स्वतः ही सिद्ध हो जायेगा।

04/02/2001

रॉयल अभिमान

ऐसी कोई भी मनुष्य आत्मा नहीं है जिसमें चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म कोई विशेषता न हो, यह नहीं। ज्ञानी जीवन में भी हर ब्राह्मण के अंदर कम से कम एक विशेषता अवश्य है, लेकिन

ज्ञानी जीवन में विशेषता परमात्म देन है, परमात्मा की सौगात है। जब परमात्मा की देन को देह-अभिमान वश मैं-पन में लाते हैं, मैं ऐसा हूँ, यह रॉयल अभिमान बडे-ते-बडा मैं-पन है।

20/02/2001

त्याग का भाग्य

बाबा चाहते हैं कि पहले-पहले कोई सेन्टर की सेवाधारी निमित्त बहन या साथी बाबा के आगे यह संकल्प करे कि पहले 'चैरिटी बिगिन्स एट होम'। सेन्टर की निमित्त, सेवा साथी और सेन्टर में आने वाले जो सहयोगी आत्मायें, वारिस वा ब्राह्मण आत्मायें हैं, सभी का ऐसा गुलदस्ता बाबा के समाने आये - जैसे मोहजीत परिवार की कहानी सुनाते हैं कि चपरासी सहित, सर्वेन्ट सहित जिससे भी पूछा वह 'नष्टोमोहा' की झलक वाला दिखाई दिया। ऐसे सेवाकेन्द्र का हर एक छोटा-बडा चाहे सफाई करने वाला हो, चाहे भोजन बनाने वाला हो, चाहे किसी भी डयुटी वाला हो लेकिन उसका चेहरा, उसके मन की स्थिति 'संतुष्टता और प्रसन्नता' सम्पन्न हो। हर एक के चलन और चेहरे संतुष्टता और प्रसन्नता ही दिखाई दे। तो बाबा ने कहा कि बाबा की यह 'शुभ आशा' इस ग्रुप के लिये है। मैंने कहा बाबा अभी एक दिन तो पडा है, यह भी हो जायेगा। तो बाबा बोले नहीं बच्ची, इसमें 1. सहन करना पडता है। लेकिन सहन करना न समझ, ऐसे समझें कि मैं आज्ञाकारी बनने का, स्वमान का तिलक बापदादा द्वारा धारण कर रहा हूँ। सहन नहीं कर रहा हूँ। सहन नहीं कर रहा हूँ, आज्ञाकारी का यह तिलक धारण कर रहा हूँ। 2. जो कोई बच्चे कहते हैं कि इसमें तो बहुत झुकना पडता है। लेकिन झुकना नहीं पडता है, उडना पडता है। यह झुकना नहीं उडना है। 3. बाबा ने कहा कई बच्चे कहते हैं क्या हमको ही मरना है, एक तो मरजीवा बनें, अभी हर बात में हमें ही मरना है। तो बाबा ने कहा यह मरना नहीं है, यह माननीय बनना है।

बाबा के प्यार में सहन करना, सहन नहीं है, यह त्याग का भाग्य लेना है। इस त्याग का प्रत्यक्ष फल मिलना है। भविष्य तो परछाई है ही। बाबा यह शब्द बहुत स्नेह से बोल रहे थे। बाबा की ऐसी स्नेह की सूरत थी, जो बाबा के नयन भी भरे हुए थे।

अव्यक्त संदेश - 18/03/2001

संगम पर हर विशेषता ड्रामा अनुसार परमात्मा देन है

ड्रामा अनुसार हर ब्राह्मण आत्मा को कोई न कोई विशेषता प्राप्त है। ऐसा कोई नहीं है जिसमें कोई विशेषता नहीं हो। तो अपनी विशेषता को सदा स्मृति में रखो और उसको सेवा में लगाओ। हरेक की विशेषता, उडती कला की बहुत तीव्र विधि बन जायेगी। सेवा में लगाना, अभिमान में नहीं आना क्योंकि संगम पर हर विशेषता ड्रामा अनुसार परमात्म देन है। परमात्म

देन में अभिमान नहीं आयेगा। जैसे प्रसाद होता है ना उसको कोई अपना नहीं कहेगा कि मेरा प्रसाद है, प्रभु प्रसाद है। ये विशेषतायें भी प्रभु प्रसाद हैं। प्रसाद सिर्फ अपने प्रति नहीं यूज किया जाता है, बांटा जाता है। (पार्टियों से)

08/10/2003

ब्राह्मण परिवार का अर्थ ही है संगठन

ऐसे ही ड्रामा में भी पूरा-पूरा निश्चय चाहिए। सफलता और समस्या दोनों प्रकार की बातें ड्रामा में आती हैं लेकिन समस्या के समय निश्चय बुद्धि की निशानी है - समाधान स्वरूप। समस्या को सेकण्ड में समाधान स्वरूप द्वारा परिवर्तन कर देना। समस्या का काम है आना, निश्चय बुद्धि आत्मा का काम है समाधान स्वरूप से समस्या को परिवर्तन करना। क्यों?आप हर ब्राह्मण आत्मा ने ब्राह्मण जन्म लेते माया को चैलेन्ज किया है। किया है ना या भूल गये हो? चैलेन्ज है कि हम मायाजीत बनने वाले हैं। तो समस्या का स्वरूप, माया का स्वरूप है। जब चैलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी ना! वह भिन्न-भिन्न समस्याओं के रूप में आपकी चैलेन्ज को पूरा करने के लिए आती है। आपको निश्चय बुद्धि विजयी स्वरूप से पार करना है, क्यों? नथिंग न्यू। कितने बार विजयी बने हो? अभी एक बार संगम पर विजयी बन रहे हो वा अनेक बार बने हुए को रिपीट कर रहे हो? इसलिए समस्या आपके लिए नई बात नहीं है, नथिंग न्यू। अनेक बार विजयी बने हैं, बन रहे हैं और आगे भी बनते रहेंगे। यह है ड्रामा में निश्चय बुद्धि विजयी। और है ब्राह्मण परिवार में निश्चय, क्यों? ब्राह्मण परिवार का अर्थ ही है संगठन। छोटा परिवार नहीं है, ब्रह्मा बाप का ब्राह्मण परिवार सर्व परिवारों से श्रेष्ठ और बडा है। तो परिवार के बीच, परिवार के प्रीत की रीति निभाने में विजयी। ऐसा नहीं कि बाप मेरा, मैं बाबा का, सब कुछ हो गया, बाबा से काम है, परिवार से क्या काम! लेकिन यह भी निश्चय की विशेषता है। चारों ही बातों में निश्चय, विजय आवश्यक है। परिवार भी सभी को कई बातों में मजबूत बनाता है। सिर्फ परिवार में यह स्मृति में रहे कि सब अपने-अपने नम्बरवार धारणा स्वरूप हैं। वैरायटी है। इसका यादगार 108 की माला है। सोचो - कहाँ एक नम्बर और कहाँ 108वाँ नम्बर, क्यों बना? सब एक नम्बर क्यों नहीं बनें? 16000 क्यों बना? कारण? वैरायटी संस्कार को समझ नॉलेजफुल बन चलना, निभाना, यही सक्सेसफुल स्टेज है। चलना तो पडता ही है। परिवार को छोडकर कहाँ जायेंगे। नशा भी है ना कि हमारा इतना बडा परिवार है। तो बडे परिवार में बडी दिल से हर एक के संस्कार को जानते हुए चलना, निर्माण होके चलना, शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति से चलना... यह परिवार के निश्चयबुद्धि विजयी की निशानी है।

14/11/2002

परिवर्तन

विश्व की आत्माओं के प्रति रहमदिल, दयालु, कृपालु, मर्सीफुल बनना है, तब तो अब तक आपकी और बाप की महिमा में यही पुकार कर रहे हैं - हे देव, कृपा करो, रहम करो, दया करो। यह हलचल आप बच्चों को और ही अचल बनाने के लिए हो रही है। अब दिन-प्रतिदिन अचल और हलचल का खेल बढ़ना ही है। दोनों तरफ की कश्मकशा का खेल ही तो परिवर्तन लायेगा। आप बच्चे भी परिवर्तन.... परिवर्तन..... का गीत गाते हो ना। यह वन्डरफुल खेल साक्षी और बाप के साथी बन देखते, कर्मातीत अवस्था के आगे बढ़ते चलो। बाकी सभी जो भी नजारे, समाचार हो रहा है, आप की परिपक्वता को आगे बढ़ाने के लिए ही हो रहा है। स्वयं को, समय को देख आगे बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो। ऐसा कहते बापदादा जैसे सर्व ब्राह्मणों को दिल में इमर्ज कर मीठी-मीठी दृष्टि दे रहे थे और मैं भी दृष्टि लेते साकार वतन में पहुँच गई। ओम शान्ति।

अव्यक्त संदेश - 06/03/2003

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre)
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414003497, +919414082607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com
sparc@bkivv.org